त्रिमूर्ति का रिवाइज्ड एडवांस कोर्स

1)चित्र का परिचय ---2
2)ॐ मंडली की स्थापना ---4
3)ब्रह्मा में शिव की प्रवेशता ---9
4)ब्रह्मा द्वारा सिर्फ़ माँ का पार्ट ---11
5)ब्रह्मा को प्रजापिता का टाइटिल---12
6)ब्रह्मा और प्रजापिता आत्माएँ जुदा-2--12
7)गुलज़ार दीदी में शिवबाप नहीं आते थे --15
8)गुलज़ार दीदी में ही ब्रह्मा बाबा की प्रवेशता क्यों होती थी ------------------------------------17
9)क्या राम फेल हुआ?---18
10)मुकर्रर रथ कौन? टेम्पररी रथ कौन?--19
11)राम बाप का यज्ञ में पुन: आगमन ---19
12)5 दिसम्बर 1969 असली स्मृति दिवस ---20
13)लास्ट सो फ़ास्ट --21
14)शंकर के पुरुषार्थी स्वरुप द्वारा शिवलिंग का संपन्न स्वरुप ---------------------------------22
15)दिल्ली में भविष्य राजधानी का फाउण्डेशन/एडवांस पार्टी --------------------------------28
16)बाप/टीचर/सतगुरु (ब्रह्मा बाबा नहीं)--30
17)पहली मूर्ति जगदम्बा ही सारे 7 अरब मनुष्यों की प्रैक्टिकल ब्रह्मा है ---------------------34
18)शंकर का वर्तमान प्रैक्टिकल पार्ट --37
19)बाप का नाम,रूप,देश,काल,गुण,विशेषताएँ आदि ---42
i)काल ---43
ii)देश--43
iii)प्रदेश ---43
iv)जिला --45
v)गाँव+रथ ---45
vi)घर ---49
vii)भाषा ---49
viii)नाम ---50
ix)-विशेषताएँ --50
20)ईश्वरीय पढ़ाई के 4 सब्जेक्ट्स (ज्ञान,योग,धारणा,सेवा)-------------------------------------53
i)ज्ञान-श्रीमत ---53
ii)योग/याद --56
iii)धारणा ---61
iv)सेवा ---61
21)तीसरी मूर्ति विष्णु ---63
22)त्रिमूर्ति की स्थापना,विनाश,पालना के बारे में सही क्रम -----------------------------------66
23)त्रिमूर्ति की यादगार त्रिमूर्ति हाउस, त्रिमूर्ति रोड, त्रिमूर्ति झंडा --------------------------------67

चित्र का परिचय

बाबा ने संदेशियों के साक्षात्कार के आधार पर चार चित्र बनवाए थे- त्रिमूर्ति, सृष्टि-चक्र, कल्पवृक्ष, लक्ष्मी-नारायण। यह चित्र शिवबाबा के डायरेक्शन से बने हैं। **मु.ता.1.1.75 पृ.1 के मध्य में बाबा ने बोला है- "बाप के डायरेक्शन से ही यह चित्र आदि बनाए जाते हैं। बाबा दिव्य-दृष्टि से चित्र बनवाते थे। कोई तो चित्र अपनी बुद्धि से भी बनाते रहते हैं।"** जिसके लिए **इसी मुरली के पृ.3 के मध्य में बाबा ने बोला है- "तुम्हारे यह चित्र सब अर्थ सहित हैं। अर्थ बिगर कोई चित्र नहीं। जब तक तुम किसको समझाओ नहीं तब तक कोई समझ न सके। समझाने वाला समझदार, नॉलेजफुल एक बाप ही है।" "यह चित्र भी दिव्य-दृष्टि से सा. कर बैठ बनाए हैं।" (मु.ता. 27.09.71 पृ.1 मध्य)** इन चित्रों के चित्रण में भी गुह्य अर्थ है। इन चित्रों में समझाने के लिए लिखत भी दी हुई है। **मु.ता. 28.10.72 पृ.1 के मध्य में बोला है- "चित्र सहित सारी लिखत होनी चाहिए।" मु.ता.30.4.71 पृ.2 के अंत में बाबा ने बोला है "अरे, यह तो बाप ने चित्र बनाए हैं। तुम चित्रों से लिखत निकाल देते हो, तुम तो कोई डैमफुल दिखाई पड़ते हो।"** इन महावाक्यों के अनुसार शुरू में जो 4-5 चित्र बनाए गए थे, वो ही सिर्फ़ बाबा के डायरेक्शन से बने थे, बाद में माया की मत पर अनेक चित्र बनाए गए और अभी भी बन रहे हैं। इन चित्रों में लिखत भी दी गई थी; परन्तु वर्तमान समय में ब्रह्माकुमारियों के द्वारा लिखत हटा दी गई है और चित्रों में भी परिवर्तन कर दिया गया है; इसलिए बाबा ने बोला- तुम इन चित्रों से लिखत निकाल देते हो तो डैमफुल अर्थात् मूर्ख दिखाई पड़ते हो। ये सभी पुराने चित्र लगभग 30X40 साइज़ के थे।**• बाबा ने 30×40 वाले झाड़-त्रिमूर्ति लिए बनवाई थी, वो लगाए देनी है। बाबा को चित्रों का बहुत शौक है; क्योंकि हम बनाते हैं अर्थ सहित। बाकी सभी चित्र हैं अर्थ रहित। जैसे सच्ची गीता बनाई है, वैसे सच्चे चित्र भी बनाने हैं। (मु.ता. 14.3.63 पृ.3 मध्यांत)** पहले जो चित्र बनाए गए थे, वो यथार्थ नहीं थे। जैसे-जैसे मुरली की नई व्याख्या निकलती है, उस अनुसार शिवबाबा करेक्शन करते हैं। इसलिए शिवबाबा ने ही बताया- सच्चे चित्र बनाने हैं। जिसके लिए कई मुरली/अव्यक्त वाणियों के महावाक्यों में बाबा ने स्पष्ट भी किया है-

• ये तो सारा चित्र हमको चेंज करना पड़ता है। आज भी बताया ना कोई चीज़। ये चित्रों को चेंज करना पड़े। कोई बात बताई थी। हाँ, चित्र में रखना चाहिए। उनमें तो रखने में चित्रों में चेंज करनी पड़े। (साकार रात्रि मु.ता. 18.6.68)

• दिव्य दृष्टि दाता तो वह है न! नए-2 चित्र बनवाते रहते हैं। एक बार बनाया, फिर प्वॉइण्ट निकलती है। तो करेक्ट करना पड़ता है। (मु.ता. 19.5.73 पृ.3 आदि)

• तुम जो चित्र बनाते हो, उनकी पहचान देनी है तो मनुष्य समझ जाए। (मु.ता. 16.4.68 पृ.1 मध्यांत)

• यथार्थ चित्र तो बच्चों को समझाया गया है- शिवबाबा, ब्रह्मा,विष्णु,शंकर। (साकार मु.ता. 27.07.64)

• जो अनन्य बच्चे हैं, उनका चित्र रखना चाहिए। (मु.ता.19.1.74 पृ.4 अंत)

• अनन्य अर्थात् जो अन्य न कर सकें, वह करके दिखाने वाले। (अ.वा.ता. 10.11.83 पृ.13 अंत)

परमपिता+परमात्मा शिव का जो विशेष कार्य है स्थापना, विनाश और पालना का, वो सिर्फ़ इन तीन मूर्तियों के द्वारा होता है। जिससे सृष्टि का चक्र चलता है, जो कार्य और कोई नहीं कर सकता। इसलिए वर्तमान समय में उन्हीं अनन्य आत्माओं को चित्र में दिखाया गया है।

• बाप तो तीन देवताओं का रचयिता होने के कारण त्रिमूर्ति कहलाते हैं। (अ.वा.ता. 8.6.71 पृ.97 अंत)

• आर्टिफिशियल कहाँ तक चलेगा। <u>त्रिमूर्ति को हम छिपा नहीं सकते।</u> (मु.ता. 19.11.72 पृ.3 मध्यांत)

जो वास्तव में चैतन्य आत्माएँ है, जिनको छुपा दिया है; लेकिन वो छुप तो नहीं सकते है।

• त्रिमूर्ति चित्र भी रखना चाहिए यहाँ समझाने के लिए, यह कौन हैं तीन, इनका रचने वाला (रचयिता/क्रियेटर) कौन? वो कहाँ चला गया? समझा ना! ब्रह्मा, विष्णु, शंकर; ब्रह्मा का भी तो रचता कहा है ना, सूक्ष्मवतन का नहीं, यहाँ का है प्रजापिता ब्रह्मा। (साकार मु.ता. 5.9.63)

• त्रिमूर्ति दिखाने बिगर समझाना भी मुश्किल है। (मु.ता. 4.11.65/72 पृ.1 मध्य)

असल में त्रिमूर्ति है, उनके परिचय के बिगर समझा भी नहीं सकते।

• जब यादगार के चित्र शुरू होंगे तो पहले-2 तो शिवबाबा का होगा। फिर उनके वो त्रिमूर्ति ब्रह्मा,विष्णु,शंकर वगैरह, जो अभी तुम बैठे हो, उनके चित्र अभी निकलेंगे। (साकार मु. ता.17.1.65)

• अभी (असली) शिवजयंती आती है, तुमको त्रिमूर्ति शिव का (चैतन्य) चित्र निकालना चाहिए। त्रिमूर्ति ब्र.वि.शं. का एक्युरेट क्यों न निकालें। (मु.ता.19.1.75 पृ.3 मध्यादि)

• जो भी बड़े-2 चित्र हैं, सभी जब करेक्शन होंगी, तो बिगर करेक्शन नहीं जाएगा, वो चेन्ज करना होगा लिखत में या तो डिस्ट्रॉय(नष्ट) कर देना पड़ेगा। (साकार रात्रि मु.ता. 1.12.67) (वी.सी.डी. 2957)

वास्तव में सन् 1960-61 में जो त्रिमूर्ति का चित्र बना था, वो यथार्थ नहीं था। **• यह त्रिमूर्ति आदि के चित्र यथार्थ रीति हैं नहीं। यह तो सब अर्थ रहित चित्र हैं। (मु.ता. 30.1.68 पृ.1 अंत)** उसमें तो एक ब्रह्मा का मुख ही तीनों मूर्तियों में दिखाया था, जिनमें से पहला मुख सिर्फ़ ब्राह्मण वर्ण की रचना करता था, बाकी दो मुख विष्णु और शंकर के यथार्थ फीचर्स नहीं थे। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, चैतन्य पार्टधारी आत्माओं को रखेंगे तो यथार्थ चित्र होगा; इसलिए अभी उन चित्रों को हटाकर यथार्थ (एक्यूरेट) चित्र बनाया गया है।

यहाँ चित्र में तीन मूर्तियाँ दिखाई हैं- जो हिन्दू धर्म की मान्यतानुसार शास्त्रों में भी 33 कोटि देवताओं में सर्वोपरि/श्रेष्ठ माने गए हैं, जिनको शास्त्रों में त्रिदेवों की उपाधि दी गई है, वे ग्रंथों के पन्ने के काल्पनिक पात्र नहीं; अपितु चैतन्य में वर्तमान समय में मनुष्य रूप में मौजूद हैं जिसके लिए मुरली में कहा है **- • ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को भी अपना शरीर है। (मु.ता.14.4.71 पृ.1 मध्य)** सिर्फ़ निराकार सदाशिव ज्योति को छोड़कर सभी आत्माओं को 84 के जन्म-मरण के चक्र में आना पड़ता है। **साकार मु.ता. 02.01.1963 में कहा है कि "तुम सब जन्म-मरण में आते हो" • आत्मा को सुप्रीम तब कहा जाए जब जन्म-मरण रहित हो। (मु.ता. 26.07.75 पृ.1 मध्य) "मैं तो गर्भ में प्रवेश नहीं करता।" (मु.ता. 6.9.70 पृ.2 अंत)** इसलिए एक सदाशिव की आत्मा को ही सुप्रीम सोल कहा जाता है। यह सृष्टि गुण-दोषमयी है, त्रिगुणरहित एक (परमपिता सदाशिव ज्योति) के अलावा कोई आत्मा नहीं है। प्रकृति निर्मित तीन गुण (सत-रज-तम) से सभी आत्माएँ बँधी हुई हैं। सत्वगुण धारण करने वाले देव-आत्माएँ और तामसगुण धारण करने वाले असुर या राक्षस हैं। सभी पुनर्जन्म में आते हैं। जैसे प्रकृति, जिसको दूसरे धर्म के लोग नेचर या कुदरत कहते हैं, वो इस पंच भूत के शरीर को जल, वायु, अन्न इत्यादि समान रूप से, बिना किसी धर्म का भेदभाव किए देती है, ऐसे ही प्रकृतिकृत बने जन्म-मरण के चक्र में भी सभी आत्माओं को आना ही पड़ता है। जैसे दिन के बाद रात और रात के बाद दिन आना निश्चित है, ऐसे ही जन्म लेने वालों की मृत्यु निश्चित है और मरने वालों का जन्म सुनिश्चित है। सर्वशास्त्रमई शिरोमणि श्रीमद्भगवद्गीता में भी कहा है:-

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च। (2/27 गीता)

क्योंकि जन्मने वाले की मृत्यु निश्चित है और {देह द्वारा**} मरने वाले का जन्म निश्चित है; {**दैहिक स्मृति है तो जन्म-मृत्यु भी रहेगी**}।**

श्रीभगवानुवाच- बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तानि अहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप।। (4/5 गीता)

अर्जुन! {दिव्यजन्मा प्रवेश योग्य शिवज्योतिरूप**} मेरे और तेरे {**5000 वर्षीय**} असंख्य {**कल्पों में असंख्य**} जन्म बीते हैं। {**कलियुगांत में**} {**यदा-2 हि धर्मस्य (4/7), "कल्प-2 लगि प्रभु* अवतारा"**} उन सब {**कल्पों में हुए जन्मों**} को {**हूबहू पुनरावृत्ति से**} मैं {**त्रिकालज्ञ शिव अजन्मा होने कारण**} जानता हूँ, {हे** कामादिक**} शत्रुओं के तापक {**कामारि महान देवात्मा**}! {**अभी अंतिम तामसी जन्म में**} तू नहीं जानता। {**जन्मांतरण में आने से सुख भोग में पूर्वजन्म की बातों को भूल जाता है।**} *{**हर 5000 वर्ष की चतुर्युगी में ड्रामा हूबहू रिपीट होता है; क्योंकि हरेक स्टार-जैसी आत्मा रूपी रिकॉर्ड में अपना-2 अनादि निश्चित पार्ट भरा हुआ है जो कल्प-2 की चतुर्युगी में बारंबार हूबहू रिपीट होता है।**}**

ॐ मंडली की स्थापना

ये अभी हीरे समान पुरुषोत्तम संगमयुग चल रहा है। 5000 वर्ष के ड्रामा का सबसे विशेष संधिकाल है जो पुराने कल्प के अंत का समय है और नए कल्प का आदि भी है। और युगों के संधिकाल को विशेष नहीं बताया गया है, वो सामान्य संगम है और ये विशेष हीरे तुल्य संगमयुग है; क्योंकि इस समय ही सदाशिव ज्योति जो सदा परमधाम निवासी है, वो इस सृष्टि पर आता है और किसी साकार तन का आधार लेकर ही नए कल्प का आवर्तन करता है। निमित्त तो ये तीनों मूर्तियाँ बनती हैं; परन्तु शिवबाप का मुकर्रर रथ एक ही बनता है। मुरली में बोला है**-• मैं तो एक ही बार एक ही तन में आता हूँ। (मु.ता. 14.06.76 पृ.3 अंत)**

• यह अनादि रथ है, जिसमें बाप प्रवेश करते हैं। (मु.ता.15.3.69 पृ.3 आदि)

• बाबा का यह रथ है परमानेंट। (मु.ता. 3.7.72 पृ.2 मध्यांत) जिसके द्वारा सदाशिव ज्योति संसार में प्रत्यक्ष होते हैं; क्योंकि साकार के बिना निराकार को नहीं जान सकते हैं।

• निराकार साकार बिगर कोई भी कर्म नहीं कर सकते। पार्ट बजा नहीं सकते। (मु.ता. 01.09.71 पृ.1 आदि) जब उस एक को जान लिया तो उसके द्वारा सबकुछ जान सकते हैं।

• बाप कहते हैं- तुम मेरे को जानने से मेरे द्वारा सब कुछ जान जावेंगे। (मु.ता. 9.4.71 पृ.2 आदि)

जैसे बीज को देखने से उसका वृक्ष कैसा होगा ज्ञात हो जाता है; ऐसे ही उस एक को जानने से उसके द्वारा इस समस्त सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान जाना जा सकता है, उस साकार के द्वारा ही राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र गीता-ज्ञान-यज्ञ की स्थापना हुई।

सिंध-हैदराबाद में दादा लेखराज कृपलानी (बडग जाति के ब्राह्मण और विख्यात हीरों के व्यापारी) को 50 वर्ष की आयु में सिर्फ़ साक्षात्कार हुए। ***"आखिर वह समय भी आ गया, जब उन्हें सत्यता का बोध हुआ। उन्हें सन् 1936 में, जबकि उनकी 50 वर्ष की आयु थी, अनेक सा. हुए जिनमें उन्होंने देखा कि इस शताब्दी के अंत तक स्वर्णिम युग की स्थापना होगी तथा इससे पहले इस तमोप्रधान कलियुग सृष्टि का महाविनाश होगा।" (ज्ञानामृत-फरवरी1986)***

लेकिन साक्षात्कारों का अर्थ वे खुद नहीं समझ पाए। अपने जीवन में दादा लेखराज ने 12 गुरु किए थे, वे गुरु भी उनका अर्थ बताने में असमर्थ रहे। **• बाप खुद कहते हैं- हमने 12 गुरु किए थे। यह तो अभी समझते हैं गुरु करते-2 हम पट आए पड़े हैं। टाइम वेस्ट हो गया है। यह भी ड्रामा में नूँध है। (मु.ता. 17.2.69 पृ.1 मध्यादि)** दादा लेखराज साक्षात्कारों का अर्थ जानने के लिए भटकते रहे। बनारस गए, वहाँ पर दीवारों में लीकें खींचते रहते थे; परन्तु समझ में नहीं आता था। **मु.ता.26.7.88 पृ.2 के आदि में यह बात आई है कि "बाबा अनुभव अपना बतलाते हैं, शुरू में बनारस गए तो दीवारों पर गोले आदि निकालते रहते थे। समझ में कुछ भी नहीं आता था- यह क्या है; क्योंकि यह तो जैसे बेबी बन गए।"** वे उन साक्षात्कारों का अर्थ जानने के लिए बनारस होते हुए कलकत्ते अपने भागीदार के पास आए, जिनका लौकिक नाम सेवकराम था। "***खास विश्वसनीय व्यक्ति सेवकराम भी थे, जिनके साथ बाबा ने साझेदारी(पार्टनरशिप) में 'लखीराज-सेवकराम एंड संस' नाम से***

हीरों आदि का व्यापार शुरू किया। जो दादा लेखराज के साथ एक ही बिल्डिंग में अपने परिवार के साथ रहते थे।" (किताब -श्री इन वन) जो 10 वर्ष से उनके साथ था, वह पहले साधारण-सा नौकर था, बाद में दादा लेखराज कृपलानी ने उनकी ईमानदारी और बुद्धिमत्ता को देखकर उन्हें अपना भागीदार बना लिया था। **मु.ता.10.11.88 पृ.1 के अंत में बताया है कि "सेल्समेन जब होशियार देखा जाता है तो फिर उनको भागीदारी बनाया जाता है, ऐसे ही थोड़े ही भागीदारी मिल जाती है।"**

• शाम होती थी और घूमने-फिरने चले जाते थे। भागीदार थे। समझते थे पघार में इतना काम नहीं करेंगे। भागीदार में काम अच्छा करेंगे। तो अपने को स्वतंत्र रख दिया। संस्कार ही ऐसे थे। (मु.ता.3.1.67/74 पृ.2 मध्य)

दादा लेखराज को साक्षात्कार हुए इस कारण राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र गीता-ज्ञान-यज्ञ की स्थापना सन् 1936/37 में सिंध-हैदराबाद में हुई, ऐसा माना जाता है; परन्तु देखा जाए तो ज्ञान-बीज का फाउण्डेशन सन् 1936/37 में बंगाल कलकत्ते में पड़ा। जब दादा लेखराज कृपलानी के साक्षात्कारों का अर्थ बताने के लिए सदाशिव ज्योति ने भागीदार (मुकर्रर रथ) में प्रवेश किया। **मु.ता. 27.7.88 पृ.2 मध्यांत में कहा है कि "बाबा तो अनुभवी है। कहते भी हैं कि मैं वृद्ध तन में आता हूँ, कृष्ण का तो वृद्ध तन नहीं है।"** दादा लेखराज को जब साक्षात्कार हुए, तब उनकी आयु 50 वर्ष ही थी और वह तो साक्षात्कारों का अर्थ भी नहीं समझ पाए; क्योंकि वो तो बेबी बुद्धि हो गये थे; इसलिए दादा लेखराज जो भविष्य में कृष्ण बनने वाले हैं, कृष्ण को मंदिरों में ज़्यादातर बच्चे के रूप में दिखाते हैं और 60 वर्ष आयु न होने के कारण उनका वृद्ध तन नहीं कहेंगे; क्योंकि वृद्ध अनुभवी तन 60 वर्ष को कहा जाता है। भागीदार दादा लेखराज से ज़्यादा अनुभवी थे; इसलिए दादा लेखराज अपने भागीदार के पास कलकत्ता आते हैं, जो सदाशिव ज्योति का मुकर्रर रथ था, जिसके प्रमाण मुरलियों और अव्यक्त वाणियों में दिए हैं- **अ.वा.ता.1.2.79 पृ.259 के आदि में बंगाल-बिहार ज़ोन से बात करते हुए बाबा ने बोला हुआ है- "साकार तन को ढूँढा भी यहाँ से ही है।" (यह नहीं कहा सिंध-हैदराबाद से) अ.वा.ता.2.2.08 पृ.3 के अंत में बोला है कि "बंगाल में बाप की पधरामणी हुई है, प्रवेशता हुई है।" • बच्चे यह भी समझते हैं शिवबाबा ने कलकत्ते में जन्म लिया। ऐसे ही कहेंगे। वहाँ से ही शुरू हुआ। कोई के सामने बैठने से ध्यान में चले जाते थे। यह शुरू कलकत्ते से हुआ। तो शिव का रिइनकारनेशन जैसे कलकत्ते में हुआ। (रात्रि मु.ता. 2.4.72 पृ.1 मध्य)** इन महावाक्यों से ये स्पष्ट होता है कि जहाँ कल्प पूर्व सदाशिव ज्योति का अवतरण हुआ था, उसी स्थान (कलकत्ता) में फिर से होता है और वही मुकर्रर रथ की जन्मस्थली पूर्वी बंगाल कलकत्ता ही थी और वो वहीं का रहवासी था। जिन त्रिमूर्ति के सामने बैठने से ही ध्यान में चले जाते थे, ये छोटे रूप में ज्ञान यज्ञ का फाउण्डेशन कलकत्ता में पड़ा। जबकि दादा लेखराज कृपलानी का जन्म सिंध प्रान्त में हुआ था। बाद में कुछ समय के लिए वो कलकत्ते में व्यापार करने के लिए रहने लगे; परन्तु मूल निवासी नहीं थे और जब साक्षात्कार हुआ तब वे सिंध में ही थे। साक्षात्कार करने को प्रवेशता होना नहीं कहेंगे; इसलिए दादा लेखराज को शिवबाप का मुकर्रर रथ नहीं कह सकते हैं। सदाशिव ज्योति के प्रथम अवतरण के समय ही कलकत्ते में वे त्रिमूर्ति कही जाने वाली तीनों मूर्तियाँ मौजूद थीं, जिनमें एक मुकर्रर रथधारी मूर्ति 60 वर्षीय वानप्रस्थी की भी थी। **• ज्ञानदाता, सर्व की सद्गति दाता त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव (एक) ही है। (बाकी) ब्र.वि.शं. तीनों का जन्म इकट्ठा है। सिर्फ़ शिवजयंती नहीं है; परंतु त्रिमूर्ति शिवजयंती। (मु.ता.27.9.75 पृ.3 आदि)**

• बाप के अवतरण की तारीख आदि-रत्नों (तीन मूर्तियों) के जन्म की तारीख है। (अ.वा.ता.19.11.79 पृ.26 अंत)

• शिवबाबा को पधरामणी तो हुई, फिर ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की भी साथ में पधरामणी चाहिए। (साकार मु.ता. 26.2.66)

जब शिवबाप का अवतरण होता है तभी इन तीनों मूर्तियों का जैसे जन्म होता है और उनके साक्षात्कारों का अर्थ बताने के लिए ये 3 मूर्तियाँ निमित्त बनती हैं। **• पहले-2 तो ये त्रिमूर्ति ही है; क्योंकि अकेला शिव भी नहीं। नहीं, त्रिमूर्ति ज़रूर चाहिए (साकार मु.ता. 27.10.66)**

• ये त्रिमूर्ति (की) जो इतनी महिमा यहाँ चली आ रही है "ब्रह्मा, विष्णु, शंकर" तीन देवताएँ, तो ज़रूर उनका भी ऑक्युपेशन तो है ना! (साकार मु.ता.8.9.64)

• तीनों का बाप त्रिमूर्ति शिव कहना पड़े। तीनों का बाप फिर तीनों से कार्य कराते हैं। (रात्रि मु.ता. 23.10.67 पृ.1 अंत)

• बाप को भी तीन मूर्तियों द्वारा कार्य कराना पड़ता है; इसलिए त्रिमूर्ति का विशेष गायन और पूजन है। त्रिमूर्ति शिव कहते हो। एक बाप के तीन विशेष कार्यकर्ता हैं, जिन द्वारा विश्व का कार्य कराते हैं। (अ.वा.ता. 4.1.80 पृ.173 अंत) सर्वशास्त्रमई शिरोमणि श्रीमद्भगवद्गीता में भी कहा हैः-

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तं इव च स्थितं।
भूतभर्तृ च तत् ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च।। (13/16 गीता)

वह {परब्रह्म योगबल से} **अविभाज्य है, फिर भी** {यहाँ भी सभी विभिन्न प्रकार के} **प्राणियों में** {योग-ऊर्जा से} **विभक्त हुआ सा रहता है और** {चतुर्युगी में भी} **प्राणियों का भरण-पोषणकर्ता विष्णु,** {पु. संगमयुग में} **संहारकर्ता महारुद्र है और उत्पत्तिकर्ता ब्रह्मा ज्ञातव्य है।**

सृष्टि प्रक्रिया हद में हो या बेहद में, मात-पिता दोनों ही सक्रिय रहते हैं, ऐसे ही शिवबाप की प्रवेशता भी भागीदार (जगत्पिता) और जगदम्बा माता में साथ-साथ होती है। **• माता और पिता के बिगर सृष्टि की रचना हो नहीं सकती। यह तो बिल्कुल साधारण समझने की बात है। एक है बेहद के मात-पिता, दूसरे हैं हद के। यह भारत है पारलौकिक बेहद के बाप का बर्थ प्लेस। ज़रूर माता और पिता दोनों ही चाहिए। (मु.ता. 15.11.73 पृ.1 आदि)** शिव की प्रवेशता के कारण वह जगदम्बा ही आदि माता ब्रह्मा हुई और उसी ब्रह्मा-मुख से शिवबाप की वाणी सुनकर मुखवंशावली प्रजापिता (जगत्पिता) चोटी का पहला ब्राह्मण बना, जिसने साक्षात्कारों को सुनने के साथ उनको समझा भी। ये दोनों क्रियाएँ साथ-साथ होती हैं; इसलिए किसी एक में प्रवेशता पहले हुई ऐसा नहीं कहा जा सकता है। उन साक्षात्कारों का अर्थ समझाने के लिए परमपिता शिवबाप ने सबसे पहले प्रजापिता में प्रवेश करके ज्ञान का बीज डाला; इसलिए प्रजापिता ही सबसे पहली और बड़ी माता परमब्रह्म हो गयी।

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः।
तासां ब्रह्म महत् योनिः अहं बीजप्रदः पिता।। (14/4 गीता)

हे कुन्ती-पुत्र! {देव-दानवादि प्राणीमात्र की भिन्न-2} **सब योनियों में जो** {दैहिक} **मूर्तियाँ पैदा होती हैं, उन सबकी** {जड़ात्मक, तुरीया तत्व ब्रह्म-} **योनि** {रूपा माता मुकर्रर रथ ही} **महान परमब्रह्म** (परमेश्वर) **है।** {इस रीति पु.संगम में} **मैं** {ही निराकार शिव मौलिक रूप से ही} **ज्ञानबीज-दाता परमपिता हूँ।**

प्रजापिता द्वारा ही उन साक्षात्कारों का अर्थ तीन मूर्तियों में दो माताओं को समझाया जाता है। एक बड़बोली माता सिर्फ़ सुनती है पर समझती नहीं है; परन्तु दूसरी माता सुनने के साथ-साथ समझकर धारण भी करती है। बाद में ज्ञान-बीज का फाउण्डेशन धारणामूर्त माता के द्वारा दादा लेखराज में पड़ता है और विश्वास तब पक्का हो जाता है। जिस माता ने ज्ञान-बीज धारण किया, उस माता से ॐ राधे के साथ दादा लेखराज ब्रह्मा सुनते हैं। बीज प्रजापिता से पड़ता है और विश्वास माता के द्वारा होता है। **• प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा तुम बच्चों को अपना परिचय देता हूँ। ब्रह्मा को भी मिला, सरस्वती को भी मिला। (मु.ता. 27.6.72 पृ.1 आदि)** दादा लेखराज और ॐ राधे की सतयुग में राधा-कृष्ण युगल बच्चों के रूप में साथ-साथ जन्म लेने की शूटिंग यहाँ हो जाती है। प्रजापिता (आदिनारायण) और धारणावान माता (आदि लक्ष्मी) से सतयुग में जन्म लेने वाले 16 कला सम्पूर्ण

(कृष्ण और राधे) दादा लेखराज ब्रह्मा और ॐ राधे मम्मा की आत्माएँ हैं। साक्षात्कार दादा लेखराज को हुए थे और उनका अर्थ भी भागीदार (प्रजापिता) के द्वारा मिल गया; इसलिए निश्चय के नशे के साथ-2 स्थूल धन-संपत्ति से भी वैराग्य उत्पन्न होने लगता है।

• उस समय बुद्धि में आया हमको विष्णु चतुर्भुज बनना है, हम इस धन को क्या करेंगे। बस, बाबा ने बुद्धि का ताला खोल दिया। बाबा तो धन कमाने में बिजी था, जब देखा राजाई मिलती है तो फिर गधाई का काम क्यों करें। (मु.ता. 23.4.87 पृ.2 मध्य)

• जैसे यह बाबा जवाहरात का धन्धा करते थे, फिर <u>बड़े बाबा</u> ने कहा- यह अविनाशी ज्ञान-रत्नों का धन्धा करना है। इससे तुम यह बनेंगे। चतुर्भुज का साक्षात्कार करा दिया। अब विश्व की बादशाही लेवें या यह करें। सबसे अच्छा धन्धा यह है तो उनको मारी ठोकर। भल कमाई अच्छी थी; परन्तु <u>बाबा ने इसमें प्रवेश होकर मत दी</u> कि अब अल्फ और बे को याद करो। (मु.ता.12.5.87 पृ.2 आदि)

यहाँ जो बड़े बाबा कहा है, ये निराकार शिवबाप ने भागीदार के लिए कहा है; क्योंकि निराकार छोटा-बड़ा नहीं होता है। **• गॉड को हाइएस्ट और लोएस्ट थोड़े ही रखना होता है। वो तो मनुष्यों को रखना होता है। (मु.ता. 2.2.67 पृ.2 आदि)**

निराकार शिवबाप ने जिस भागीदार में प्रवेश किया था, उसके द्वारा बुद्धि का ताला खोला; इसलिए आगे ही बोला- बाबा ने इसमें प्रवेश होकर मत दी थी अब अल्फ और बे को याद करो। **• धन तो इन (ब्रह्मा) के पास भी बहुत था। जब देखा कि अल्फ से बादशाही मिलती है तो फिर यह धन क्या करेंगे? क्यों न सब कुछ अल्फ के हवाले कर बादशाही लेवें। (मु.ता. 22.4.77 पृ.2 मध्य)**

• अल्फ अल्लाह को याद करो तो बे बादशाही तुम्हारी। (मु.ता. 21.4.92 पृ.2 आदि) इन महावाक्यों से ये स्पष्ट होता है कि पहला अल्फ़ाज अल्फ कोई निराकार नहीं है, ज़रूर कोई साकार व्यक्तित्व है, सतयुग की बादशाही लेने के लिए दादा लेखराज ने जिसके हवाले सारा कारोबार भी उसे हस्तगत किया था। अल्लाह अर्थात् निराकार और वो खुदा आता है अल्फ में और जिस अल्फ (भागीदार) ने बताया- अगर विष्णु जैसा देवता बनना है तो ये स्थूल रत्न पत्थर हैं, इनका कारोबार छोड़कर ज्ञान रत्नों का व्यापार करना है। उसी अल्फ अर्थात् भागीदार को दादा लेखराज अपना सारा कारोबार सौंपकर सिंध में आकर सत्संग की शुरुआत करते हैं।

• (भागीदार) अल्फ की तार पहले एक (दादा लेखराज ब्रह्मा) को आई, सेवा अर्थ-सर्वस्व त्यागमूर्त (पहले-2) एक अकेले बने। (अ.वा.ता.18.1.79 पृ.228 आदि) कुछ समय बाद नज़दीकी लौकिक सम्बन्धी भागीदार (प्रजापिता) और दो माताएँ भी सिंध में आकर दादा लेखराज कृपलानी को हिसाब-किताब दे देते हैं और दोनों मिलकर सत्संग चलाते हैं।

• चैरिटी बिगन्स एट होम। यह कायदा है। पहले <u>मित्र-सम्बन्धी बिरादरी</u> आदि वाले ही आवेंगे। पीछे पब्लिक आती है। शुरू में हुआ भी ऐसे। (मु.ता. 3.8.75 पृ.2 मध्यांत)

प्रजापिता के द्वारा भक्तिमार्ग की गीता पढ़कर सुनाई जाती थी। **• वही गीता ओममण्डली में सुनाते थे; परन्तु अभी गुह्य बातें सुनते-2 सारे राज़ को समझ गए हैं। मनुष्य भी कहते हैं- आगे आपका ज्ञान और था। अब तो बहुत अच्छा है। (मु.ता. 27.1.78 पृ.2 अंत)** प्रजापिता और दो माताओं के द्वारा ही यज्ञ का संचालन होता था। **मु.ता. 25.7.67 पृ.2 के अन्त में बाबा ने स्पष्ट भी किया है- "10 वर्ष (से साथ में) रहने वाले ध्यान में जाय मम्मा-बाबा को भी ड्रिल कराते थे। हेड होकर बैठते थे। उनमें बाबा प्रवेश कर डायरेक्शन देते थे। कितना मर्तबा था। मम्मा-बाबा भी उनसे सीखते थे।"** 10 वर्ष से दादा लेखराज के साथ भागीदार और माताएँ थीं, जिनमें शिव की प्रवेशता होती है, जो मम्मा-बाबा को भी ड्रिल अर्थात् याद की प्रक्रिया सिखाते थे। उस समय प्रजापिता के द्वारा जो वाणी चलती थी, उसको पिऊ की वाणी कहा जाता था। पिऊ सिन्धी भाषा में पिता को कहा जाता है; लेकिन वो बहुत स्ट्रिक्ट वाणी थी। इसलिए आज भी दीदी-दादियाँ पिऊ का नाम सुनने से डर जाती हैं। उनका आदि में रौद्र रूप था, जिसके आधार पर इस यज्ञ का नाम 'रुद्र गीता-ज्ञान-यज्ञ' पड़ा। **• भगवान को रुद्र भी कहा जाता है। कृष्ण को रुद्र नही कहेंगे। (मु.ता. 19.6.92 पृ.1 अंत)** भागीदार रूद्र स्वभावी थे और उनमें शिव की

भी प्रवेशता थी; इसलिए बोला-भगवान को रूद्र कहा जाता है, कृष्ण को नहीं; क्योंकि दादा लेखराज उर्फ़ कलाबद्ध कृष्ण मीठे स्वभाव के व्यापारी थे, उनको तो रूद्र नहीं कहा जा सकता तो भगवान भी नहीं कहा जा सकता है और शिव की प्रवेशता भी उनमें नहीं थी ।

• प्रजापिता में जो पिऊ बैठा है, उनको तुम बाप कहते हो। यह तुमको पवित्र बनाए फिर अपने घर ले जाते हैं। पिता वो भी है तो यह भी है। वो है निराकार (स्टेज वाला), यह है साकार। (मु.ता. 15.8.65 पृ.1 आदि)

• पिऊ भी कौन? प्रजापिता ब्रह्मा और शिव। बस, इनसे जास्ती अथॉरिटी तो कोई है नहीं। कोई है बच्चे? नहीं। वो आत्माओं का पिता और वो शरीरों का बड़ा-(ते)-बड़ा पिता। (साकार मु.ता. 28.6.65)

• वह है निराकारी आत्माओं का बाप। और फिर साकार में सबका बाप प्रजापिता ब्रह्मा है। (मु.ता.16.9.68 पृ.1 मध्य)

इन महावाक्यों के अनुसार बड़े-ते-बड़े पिता दो ही हैं- निराकार और साकार, तीसरा कोई और नहीं हो सकता है। निराकार तो सभी आत्माओं का बाप है और सारी साकार मनुष्य सृष्टि का पिता आदिदेव/आदम/एडम अर्थात् पिऊ प्रजापिता ब्रह्मा हैं, जो कि दादा लेखराज नहीं हैं, जिसके प्रमाण मुरलियों में स्पष्ट रूप से बताये हैं-

• उनका अंतिम जन्म लेखराज है। वह तो प्रजापिता बन नहीं सकता। (मु.ता. 21.8.73 पृ.5 मध्यांत)

• यह तो जवाहरी था, यह कैसे प्रजापति हो सकता? (मु.ता. 28.7.72 पृ.4 मध्य)

ये महावाक्य दादा लेखराज कृपलानी के लिए बोले हैं, जो हीरों के जवाहरी थे, जिनका लास्ट जन्म में नाम लेखराज था और वो प्रजापिता ही नहीं बन सकते तो पिऊ भी नहीं हो सकते अर्थात् दादा लेखराज को साकार मनुष्य सृष्टि का साकार पिता नहीं कह सकते हैं। प्रजापिता जो साकार पिता है, उनके प्रमाण भी मुरलियों में दिए हैं- **• प्रजापिता नाम बाप का शोभता है। (मु.ता.11.1.73 पृ.1 आदि)**

• राम कहा जाता है बाप को। (मु.ता. 6.9.70, पृ.3 मध्य)

• सर्वशक्तिवान तो एक बाप ही है, जिसको राम भी कहते हैं। (मु.ता.20.2.74 पृ.3 आदि)

• राम शिवबाबा को कहा जाता है (मु.ता.7.9.68 पृ.3 आदि)

इन सभी महावाक्यों के अनुसार बाप प्रजापिता ब्रह्मा ही है, जो शिवबाप का मुकर्रर रथ है, जिसको शिवबाबा कहें, वह भागीदार अर्थात् प्रजापिता ब्रह्मा ही राम वाली आत्मा है। सन् 1942 में कुछ ऐसा घटनाक्रम हुआ, जिसके कारण यज्ञ (ॐ मंडली) में विघटन हो गया। **मु.ता.14.9.87 पृ.1 के अंत में बाबा ने बोला है "इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में असुरों के विघ्न ज़रूर पड़ेंगे।" • रुद्र ज्ञान यज्ञ से ही विनाश ज्वाला निकली है। (मु.ता.19.6.92 पृ.1 अंत)** यज्ञ के अंदर दो प्रकार के ब्राह्मण उत्पन्न हो गए। एक विश्वामित्र, वशिष्ठ जैसे दैवी संस्कारों वाले ब्राह्मण तथा दूसरे रावण, कुम्भकर्ण जैसे आसुरी स्वभाव, संस्कारों वाले (विधर्मी और विदेशीयता से प्रभावित) ब्राह्मण। बुद्धिवादी प्रजापिता ने तो उन विपरीत बुद्धि ब्राह्मणों का सामना किया। **• विनाश ज्वाला प्रज्वलित कब और कैसे हुई? कौन निमित्त बना? क्या शंकर निमित्त बना या यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने? जब (कलकत्ते) से स्थापना का कार्य-अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ-2 यज्ञ-कुण्ड से विनाश की ज्वाला भी प्रगट हुई। तो विनाश को प्रज्वलित करने वाले कौन हुए? बाप और आप साथ-2 हैं न! तो जो प्रज्वलित करने वाले हैं तो उन्हों को सम्पन्न भी करना है, न कि शंकर को। (अ.वा.ता.3.2.74 पृ.13 अंत)** परन्तु माता ने उन बच्चों का साथ दिया, जिसके कारण मात-पिता के बीच में मत-भेद हो गया। माता सहित समस्त परिवार एक ओर और दूसरी तरफ राम बाप एक ओर हो गए। **• स्थापना के आदि (शुरुआत) समय तो सारी दुनिया एक तरफ और एक आत्मा दूसरी तरफ थी ना? (अ.वा.ता. 9.4.73 पृ.19 अंत, 20 आदि)** यज्ञ के अंदर ॐ मंडली की बात है जब बाहर सिंध निवासियों में अंदर की बात बाहर फैलने लगी तो कन्या-माताओं को सत्संग में आने से रोका जाने लगा। पवित्रता की बात न समझने के कारण कन्या-माताओं पर अत्याचार होने

लगे। मुरली में बोला है - **• तुम्हारा (पतितों को पावन बनाने का) धंधा ही झगड़े का है; क्योंकि तुम प्योरिटी पर ज़ोर देते हो। कितने विघ्न पड़ते हैं। (मु.ता. 13.4.68 पृ.3 आदि)**

• अबलाओं पर अत्याचार और कहाँ भी कोई सतसंग आदि में नहीं होते। ढेर-के-ढेर सत्संगों में जाते हैं। कोई भी कहाँ जाने की मना नहीं करते हैं। (मु.ता. 30.6.68 पृ.4 मध्य) झगड़ा बढ़ता गया और दादा लेखराज कृपलानी झगड़े का सामना नहीं कर सके। बिना किसी को बताये यज्ञपिता अर्थात् पिऊ राम बाप का साथ छोड़कर कराची भाग **गए। • तुम भागे थे ना! सिंध से कराची में गए। (मु.ता. 24.7.70 पृ.2 आदि)** और कुछ समय बाद सन् 1942 में यज्ञपिता रामबाप का शरीर छूट गया। राम बाप के शरीर छोड़ने के कुछ समय बाद दोनों माताएँ सिंध से कराची दादा लेखराज के पास चली जाती हैं। **• बाबा के पास दो माताएँ आईं थीं। बड़ी फर्स्ट क्लास थीं। (मु.ता. 16.3.75 पृ.2 मध्य)** फर्स्ट क्लास में जाने वाली (महागौरी और महाकाली) माताएँ सामान्य माताएँ नहीं हो सकती हैं। उसके बाद दोनों माताओं के द्वारा यज्ञ का संचालन होता था। **• ऐसे भी बहुत जाते हैं और बरोबर प्रैक्टिकल में, तुम लोगों को बताया ना कि कितना दिन, कितना वो साक्षात्कार ले आती थी। हम, मम्मा, तुम बच्चे, वो जो प्रोग्राम ले आते थे, उनमें हम बैठ करके रहते थे। वो हेड हो करके बनती थी, नज़र करती थी; क्योंकि बाबा उनको दृष्टि दे <u>देते थे</u>- कौन ठीक बैठे हैं, कौन योग में बैठे हैं। वो <u>बैठ करके दृष्टि देती थी बाबा की प्रवेशता से</u>, मदद से। टीचर बन करके बैठती। वो आजकल बिल्कुल ही गटर....। ऐसी-2 फर्स्टक्लास-2। तो अच्छे-2 फर्स्टक्लास-2 भी गिर पड़ते हैं। (साकार मु.ता.8.9.64)**

• बहुत-2 अच्छी बच्चियाँ जो मम्मा-बाबा के लिए भी डायरेक्शन ले आती थीं, ड्रिल कराती थीं। उनके डायरेक्शन पर हम चलते थे। सभी से जास्ती दुर्गति में वह चले गए। यह बच्चियाँ भी जानती हैं। (मु.ता. 28.5.69 पृ.2 अंत) यहाँ जो अच्छी-अच्छी बच्चियाँ बोला है, वो कोई सामान्य बच्चियों के लिए नहीं है; क्योंकि मम्मा-बाबा को ड्रिल कोई सामान्य आत्मा नहीं करा सकती है। ड्रिल वही करा सकती है, जो उनसे भी पुरुषार्थ में आगे हो। जिन माताओं में शिवबाप की प्रवेशता होती थी, जो मम्मा-बाबा को भी पढ़ाई पढ़ाती थीं; लेकिन बाद में वो भी शरीर छोड़ दीं। लेकिन जब तक ये दोनों माताएँ थीं, तब तक दादा लेखराज में सुप्रीम सोल शिव की प्रवेशता नहीं हुई; क्योंकि **मु.ता.26.5.78 पृ.1 के मध्यांत में बोला है- "कराची से लेकर मुरली निकलती आई है। कराची से लेकर- पहले बाबा मुरली नहीं चलाते थे। रात को दो बजे उठकर 10-15 पेज लिखते थे। बाप (माताओं द्वारा) लिखवाते थे। फिर उसकी कॉपियाँ निकालते थे।"** और **ता.25.2.68 पृ.1 आदि की रात्रि मुरली में बाबा ने कहा है कि "शुरू में कराची में रात को 2 बजे हम वाणी लिखते थे।"** मुरलियों से ही साबित होता है कि पहले कराची में दादा लेखराज में शिवबाप की प्रवेशता नहीं हुई थी। माताओं में प्रवेश कर शिवबाप दादा लेखराज के द्वारा लिखवाते थे। सन् 1947 तक दोनों माताएँ भी शरीर छोड़ देती हैं। **• मम्मा-बाबा को भी ड्रिल सिखलाते थे। डायरेक्शन देती थी ऐसे-2 करो। टीचर हो बैठती थी। हम समझते थे यह तो बहुत अच्छा नम्बर माला में आवेंगी। वह भी गुम हो गए।यह सब समझाना पड़े न! हिस्ट्री तो बहुत बड़ी है। (मु.ता.28.5.74 पृ.2 अन्त)**

• अच्छे-2 फर्स्टक्लास ध्यान में जाने वाले, जिनके डायरैक्शन पर माँ-बाप भी पार्ट बजाते थे। आज वे हैं नहीं। क्या हुआ? कोई बात में संशय आ गया। (मु.ता. 8.7.73 पृ.1 अंत)

• अच्छे-2 बच्चे 5-10 वर्ष रह अच्छे-2 पार्ट बजाते, फिर हार खा लेते हैं। (मु.ता.8.7.73 पृ.1 अंत)

ब्रह्मा में शिव की प्रवेशता

शिवबाप का कार्य तो रुक नहीं सकता है, वो तो एक बार आते हैं तो नई दुनिया बनाकर ही जाते हैं। उस समय (सन् 1947 में) हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बँटवारे की स्थिति से चारों ओर खून-खराबा व अफरा-तफरी का माहौल था। इसका लाभ उठाकर सिन्ध-हैदराबाद से अन्य सभी बाँधेली गोपियाँ व गोप भागकर एक-2 करके

दादा लेखराज के पास कराची पहुँच गए। जब सन् 1947-48 तक कराची में सारा संगठन इकट्ठा हो गया, तब दादा लेखराज में रूहानी बाप शिव की प्रवेशता हुई और तब उनका नाम 'ब्रह्मा' पड़ा। **मु.ता.17.3.73 पृ.2 मध्यांत में बोला है- "ड्रामा में जिसका पार्ट है, उनमें ही प्रवेश करते हैं और इसका नाम ब्रह्मा रखते हैं। ...अगर दूसरे में आवें तभी भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े।" • इनका ब्रह्मा नाम ही तब पड़ा है, जब बाप ने आकर इनको रथ बनाया है।" (मु.ता. 3.9.70 पृ.2 मध्य) • जो बाबा इसमें प्रवेश कर आएँ हैं। खुद कहते हैं- मैं इनमें प्रवेश कर इनका नाम ब्रह्मा रखता हूँ। (मु. 3.5.71 पृ.1 मध्यांत)** प्रवेशता कब से हुई? प्रवेशता की निशानी क्या है? तो उसका जवाब भी **मु.ता.27.10.74 पृ.2 के मध्य में दिया है- "मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है? जब नॉलेज देते हैं।"**

• यह तो जवाहरी था ना! इनमें प्रवेशता होने से ही फट से मुरली शुरू हो गई। (मु.ता. 18.8.71 पृ.4 अंत)

• बाप कहते हैं- मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। यह समझते हैं कि यह नया ज्ञान, नई बातें, मैं तो कुछ नहीं जानता था। (मु.ता. 08.01.63 पृ.1 आदि)

सन् 1947/48 से दादा लेखराज में शिवपिता की प्रवेशता सिद्ध होती है। उस समय दादा लेखराज की लौकिक आयु 60 वर्ष से ज़्यादा लगभग 63/64 साल थी; क्योंकि वानप्रस्थ अवस्था में ही बाप प्रवेश करते हैं। दादा लेखराज ब्रह्मा को 50 वर्ष की आयु में सन् 1936/37 में साक्षात्कार हुए थे और सन् 1947/48 में शिव की प्रवेशता हुई। उस समय के प्रमाण पत्र में उनकी जन्म तिथि भी दी गई है–

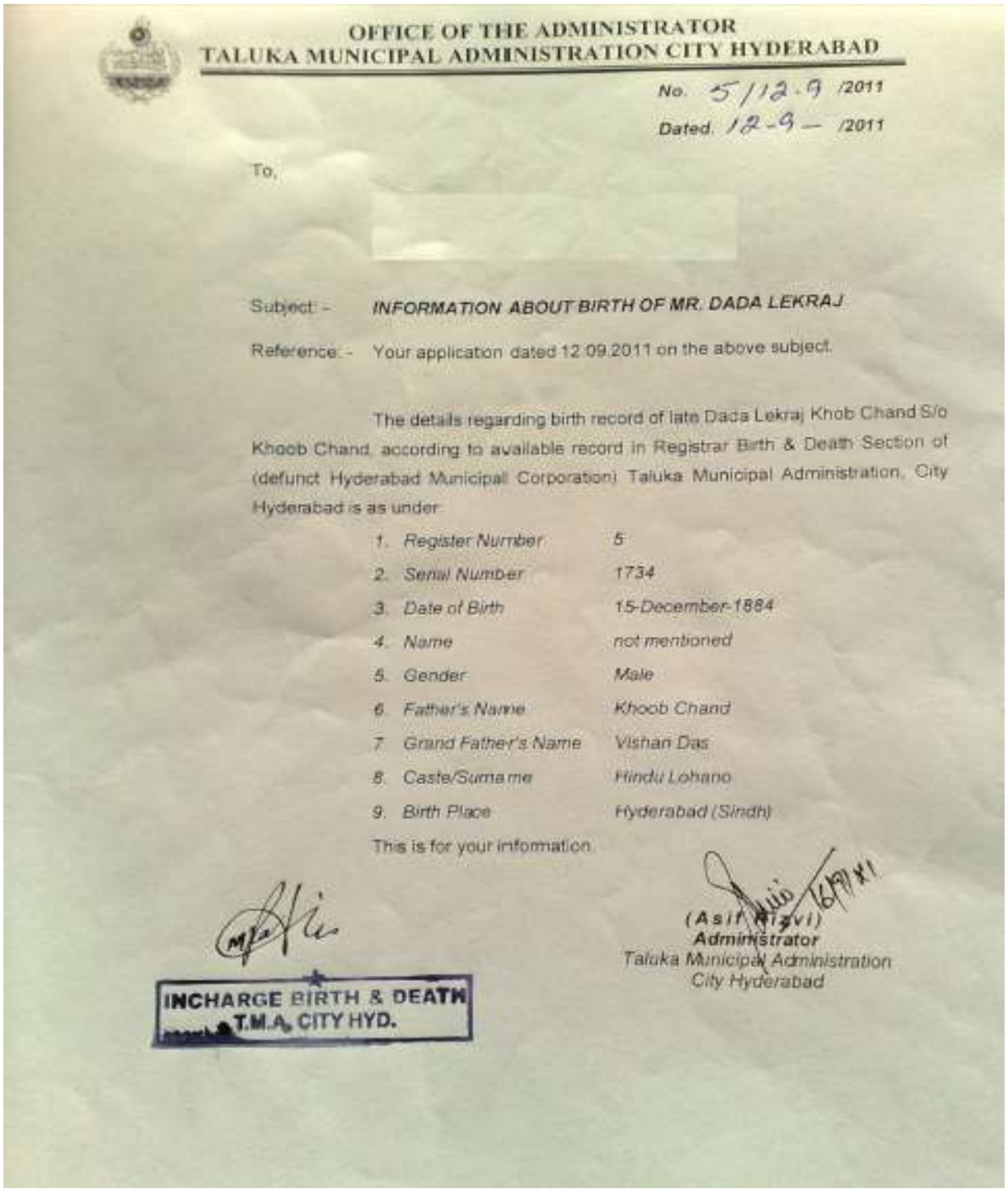

OFFICE OF THE ADMINISTRATOR
TALUKA MUNICIPAL ADMINISTRATION CITY HYDERABAD

No. 5/12-9 /2011
Dated. 12-9 — /2011

To,

Subject :- INFORMATION ABOUT BIRTH OF MR. DADA LEKRAJ

Reference :- Your application dated 12.09.2011 on the above subject.

The details regarding birth record of late Dada Lekraj Khob Chand S/o Khoob Chand, according to available record in Registrar Birth & Death Section of (defunct Hyderabad Municipal Corporation) Taluka Municipal Administration, City Hyderabad is as under:

1.	Register Number	5
2.	Serial Number	1734
3.	Date of Birth	15-December-1884
4.	Name	not mentioned
5.	Gender	Male
6.	Father's Name	Khoob Chand
7.	Grand Father's Name	Vishan Das
8.	Caste/Surname	Hindu Lohano
9.	Birth Place	Hyderabad (Sindh)

This is for your information.

INCHARGE BIRTH & DEATH
T.M.A. CITY HYD.

(Asif Rizvi)
Administrator
Taluka Municipal Administration
City Hyderabad

ब्रह्मा द्वारा सिर्फ़ माँ का पार्ट

त्रिमूर्ति रूप में प्रसिद्ध तीनों आत्माओं की अनुपस्थिति में शिवबाप ने टेम्पररी ब्रह्मा तन का लोन लिया था |

•बाप कहते हैं- मैं भी थोड़े समय के लिए लोन लेता हूँ। 60 वर्ष में वानप्रस्थ अवस्था होती है। (मु.ता. 26.10.68 पृ.2 मध्यादि) और उनके द्वारा माँ का पार्ट बजाया।**• स्वयं भगवान के उस मुख कमल से सुनते हो। यह भगवान का लोन लिया हुआ मुख है ना, जिसको गऊ मुख भी कहते हैं। बड़ी माता है ना! (मु.ता. 28.5.70 पृ.1 मध्यांत)** शिवबाप ने ब्रह्मा बाबा के द्वारा माँ का टेम्पररी रथ का पार्ट बजाया; परन्तु ब्रह्मा बाबा पुरुष तन थे; इसलिए कन्या-माताओं की संभाल के लिए ॐ राधे मम्मा निमित्त बनती है **– "असुल रियल्टी में यह (साकार ब्रह्मा) माता है; परन्तु पुरुष तन है तो माताओं की चार्ज में इनको कैसे रखा जाए। इसलिए फिर जगत अम्बा (सरस्वती ॐ राधे) <u>निमित्त</u> बनी हुई है।" (मु.ता.18.5.78 पृ.2 मध्य)**

• यह दादा मम्मी भी है। वह बाप तो अलग है। ...परंतु यह मेल होने कारण फिर माता मुकर्रर की जाती है। (मु.ता. 19.1.75 पृ.1 मध्यादि)

ब्रह्मा को प्रजापिता का टाइटिल

• इस माता को भी छोड़ो, सभी देहधारियों को छोड़ो; क्योंकि अब वर्सा (देह को भूलने वाले विदेही) बाप से लेना है। (मु.ता.4.1.73 पृ.2 मध्यादि) ब्रह्मा बाबा के द्वारा माँ का पार्ट चला तो अबोध बच्चे उस माँ को ही सबकुछ समझने लगे; लेकिन बाबा ने मुरली में बोला है- माँ से वर्सा नहीं मिलता, वर्सा बाप से मिलता है। वर्सा देने वाला तो बाप प्रजापिता ब्रह्मा है, ब्रह्मा बाबा तो सिर्फ़ टाइटिलधारी हैं। सन् 1965 में ॐ राधे मम्मा ने गले के कैंसर के कारण शरीर छोड़ दिया। **उसके बाद ही मुरली में आया- ता.7.9.77 पृ.2 आदि की रिवाइज़ मुरली में बोला है- "ब्रह्माकुमारियों के आगे प्रजापिता अक्षर ज़रूर लिखना है। प्रजापिता कहने से बाप सिद्ध हो जाता है।"** तब ब्रह्मा बाबा को प्रजापिता का टाइटिल मिला; लेकिन असल प्रजापिता नहीं थे जो बात पहले भी बताई है; लेकिन बच्चे ब्रह्मा को ही बाप अर्थात् प्रजापिता ब्रह्मा समझने लगे ।

ब्रह्मा और प्रजापिता आत्माएँ जुदा-2

ब्रह्मा और प्रजापिता ब्रह्मा दो अलग-2 व्यक्तित्व हैं, जिनके प्रमाण बाबा ने मुरलियों में दिए हैं- **• वह है निराकारी आत्माओं का बाप। और फिर साकार में सब (मनुष्य मात्र) का बाप प्रजापिता ब्रह्मा है। (मु.ता.16.9.68 पृ.1 मध्यांत)** बड़े-ते-बड़े बाप तो दो ही हैं- एक निराकार और एक साकार। यादगार मंदिरों में बच्चे रूप में पूजनीय कृष्ण को कभी बाप नहीं कहा जा सकता।

• कृष्ण तो बच्चा (बुद्धि) है। (रात्रि मु.ता. 11.3.68 पृ.1 आदि)

• ब्रहमा ही फिर कृष्ण बनता है। यह कितनी गुह्य बातें हैं। (मु.ता. 3.3.73 पृ.1 मध्यांत)

• यह है ब्रह्मा। है वो ही कृष्ण की आत्मा। (मु.ता. 27.7.65 पृ.2 अंत)

• तुम बच्चे जानते हो यह दादा भी राजयोग सीख रहे हैं और कृष्ण बनने वाले हैं। (रात्रि मु.ता. 23.1.67 पृ.1 अंत)

• ब्रह्मा नहीं शास्त्रों का सार सुनाता। वह कहाँ से सीखा? उनका भी कोई बाप वा गुरू होगा ना! प्रजापिता तो जरूर मनुष्य होगा और यहाँ ही होगा। (मु.ता.20.10.78 पृ.2 अंत)

इन महावाक्यों के अनुसार ब्रह्मा ही कृष्ण बनने वाली आत्मा है, जो खुद किसी और से पढ़ाई पढ़ती है; इसलिए शास्त्रों में कृष्ण को 'सं+दीपन' गुरु से शिक्षा लेते दिखाया है और आदि ॐ मंडली में प्रजापिता (भागीदार) जिनसे ब्रह्मा बाबा ने भी सीखा, वही उनके गुरु थे जो इस समय पुनर्जन्म ले साकार में भी मौजूद हैं।

• कृष्ण को कब प्रजापिता ब्रह्मा नहीं कहा जाता। नाम गाया हुआ है ना प्रजापिता ब्रह्मा। जो होकर गए हैं, वह इस समय प्रेजेण्ट हैं। (मु.ता. 11.3.73 पृ.1 आदि)

•प्रजापिता तो एक ही होगा ना। (मु.ता. 29.09.77 पृ.1 आदि)

• ब्रह्मा को किसने पैदा किया? परमपिता+परमात्मा शिव ने। (मु.ता. 24.5.73 पृ.2 अंत)

• प्रजापिता ब्रह्मा के ऑक्युपेशन को भी जानना चाहिए ना! (मु.ता. 28.6.68 पृ.1 आदि)

प्रजापिता ब्रह्मा इस समय प्रैक्टिकल में हैं तभी तो हम उनके आक्युपेशन को जान सकेंगे। जिसने कृष्ण उर्फ़ ब्रह्मा बाबा को साक्षात्कारों का अर्थ बताकर ज्ञान में जन्म दिया था। भले वो पहले शरीर छोड़ दिए थे; लेकिन अभी प्रैक्टिकल में दुबारा जन्म लेकर साकार शरीर से मौजूद हैं।

• बाप ही खुद आकर समझाते हैं- मैं साधारण बूढ़े तन में प्रवेश करता हूँ। नहीं तो ब्रह्मा आए कहाँ से? पतित तन ही चाहिए। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा में विराजमान होकर तो ब्राह्मण नहीं रचेंगे। कहते हैं- मैं पतित शरीर, पतित दुनिया में आता हूँ। गाया भी हुआ है- ब्रह्मा द्वारा स्थापना।.... प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर यहाँ होगा ना! सूक्ष्मवतन में कैसे प्रजा रचेंगे? प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे हजारों कुमार और कुमारियाँ हैं। झूठ थोड़े ही होगा। (मु.ता. 26.6.71 पृ.3 अंत, 4 आदि)

• व्यक्त प्रजापिता ब्रह्मा चाहिए। सूक्ष्मवतन में तो प्रजापिता नहीं होता है। प्रजापिता ब्रह्मा यहाँ चाहिए। (मु.ता. 5.8.73 पृ.2 मध्यांत)

• ब्रह्मा {की प्रैक्टिकल यादगार भी} तो सूक्ष्मवतन में है; परंतु प्रजापिता ब्रह्मा तो ज़रूर यहाँ का ही होगा न! (मु.ता. 25.11.73 पृ.5 मध्यांत) (मु.15.11.83 पृ.2 अंत)

आदि में जब प्रजापिता में प्रवेशता हुई तब साधारण तन ही था, जिनके द्वारा ही ब्रह्मा बाबा का ज्ञान में जन्म हुआ। शिवबाप पतित तन में आते हैं; इसलिए प्रजापिता को पतित तन कहेंगे। वो सूक्ष्मवतन वासी नहीं है, वो इस साकार सृष्टि में मौजूद है। इतने 33 करोड़ ब्राह्मण सो देवता धर्म के बच्चे हैं, तो जन्म देने वाला पिता भी यहाँ होगा। सूक्ष्मवतन में तो प्रजा नहीं रची जा सकती है। ब्रह्मा बाबा तो सूक्ष्मवतनवासी/सूक्ष्म शरीरी फ़रिश्ता हो गए, जिन्हें जब्राइल के नाम से मुसलमान और क्रिश्चियन्स आज भी मानते हैं।

• बड़े बाप को पहचान लिया तो बेड़ा पार है। (मु.ता. 12.3.69 पृ.4 आदि) (मु. ता. 17.2.74 पृ.4 आदि) दो ही बाबा हैं, एक छोटा बाबा ब्रह्मा बाबा; क्योंकि बूढ़े तन को भी बाबा कहा जाता है और दूसरा बड़ा बाबा, ब्रह्मा को भी जन्म देने वाला प्रजापिता ब्रह्मा है, उसको पहचानने से ही सद्गति होगी।

• मुझे ब्रह्मा ज़रूर चाहिए, तो प्रजापिता ब्रह्मा भी चाहिए।... यह मेरा रथ मुकर्रर है। (मु.ता.15.11.87 पृ.3 आदि)

• शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्र.कु.कुमारियों को वर्सा देते हैं। ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा (शास्त्र-प्रसिद्ध नौ कुरियों वाले) ब्राह्मण कुल की रचना रचते हैं। (मु.ता.1.3.76 पृ.3 मध्य)

इस महावाक्य से स्पष्ट जाहिर होता है कि दो ज़रूर अलग-2 व्यक्तित्व हैं। प्रजापिता ब्रह्मा ही मुकर्रर रथ है, सिर्फ़ ब्रह्मा से ही प्रवृत्तिमार्ग के देवी-देवता बनाने का कार्य पूरा नहीं होता है। माता के साथ पिता भी चाहिए, जिसके द्वारा वर्सा मिलता है। सरस्वती तो ब्रह्मा की बेटी है, इसे प्रवृत्तिमार्ग नहीं कहेंगे।

• यह प्रजापिता ब्रह्मा (वर्सा देने वाला) बाप भी है तो (परमब्रह्म) माँ भी है। (मु.ता. 25.4.68 की रात्रि क्लास में 27.4.68 का प्रात: क्लास पृ.1 अंत)

शिवबाप ने जिसमें प्रवेश किया था, वो बड़ी-ते-बड़ी माता परमब्रह्म है और उसी के द्वारा शिवबाप पिता का पार्ट भी चलाते हैं; इसलिए बाप भी है तो माँ भी।

• शिवबाबा भी बाबा है। प्रजापिता ब्रह्मा भी बाबा है। प्रजापिता ब्रह्मा आदिदेव नाम बाला है। सिर्फ़ पास्ट हो गए हैं। (मु.ता. 19.9.75 पृ.1 मध्यादि)

• परमात्मा कहते हैं- मैं जिस साधारण तन में आता हूँ, उसका नाम ब्रह्मा पड़ता है। वह सूक्ष्म ब्रह्मा है, तो दो ब्रह्मा हो गए। (मु.ता. 28.2.98 पृ.2 आदि)

जिस साधारण तन में आते हैं, वह सूक्ष्म स्टेज वाला प्रजापिता ब्रह्मा है और एक दादा लेखराज साकारी स्टेज वाले तो दो ब्रह्मा हो गए।

• जैसे चन्द्रमा के साथ सितारों की रिमझिम अति सुन्दर लगती है वैसे ही ब्रह्मा चन्द्रमा, (जो) बच्चे अर्थात् सितारों से ही सजते हैं। (अ.वा.ता. 2.1.78 पृ.1 मध्य)

इस महावाक्य से स्पष्ट होता है- ब्रह्मा बाबा ही कृष्ण है, वो ही ज्ञान चंद्रमा है, (गीता 4/1 का विवस्वत) सूर्य नहीं।

• क्रियेटर ब्रह्मा को नहीं कहा जाता। (मु.ता.13.2.75 पृ.2 मध्य)

• प्रजा<u>पिता</u> को भी क्रियेटर कहते हैं। (मु.ता.26.7.77 पृ.2 आदि)

• ब्रह्मा भी रचना है शिवबाबा की। (मु.ता.26.6.70 पृ.1 आदि)

• क्रियेटर तो एक ही है। बाकी सभी पढ़ रहे हैं। इसमें यह भी आ गया। फिर भी रचना हो गए ना। (मु.ता. 8.1.68 पृ.2 अंत,3 आदि)

क्रियेटर कहा जाता है रचयिता को, ब्रह्मा बाबा के द्वारा आदि में भी रचना नहीं की गई; जबकि उनको रचने वाला प्रजापिता ब्रह्मा था, वो क्रियेटर था उनको ही शिवबाबा कहेंगे, जिनकी रचना ब्रह्मा बाबा हैं, जिस एक से सभी पढ़ते हैं। ब्रह्मा बाबा भी पढ़ते हैं; इसलिए ब्रह्मा बाबा क्रियेटर नहीं हैं।

• प्रजापिता ब्रह्मा तो बहुत ऊँच है ना! इनको कहेंगे नेक्स्ट टू गॉड। (मु.ता.27.11.71 पृ.6 आदि)

प्रजापिता ब्रह्मा की मत पर भी नहीं चलते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा की मत सो श्रीमत, ऐसे कहेंगे ना! (साकार मु.ता.15.5.65) शिवबाप का मुकर्रर रथ ही शिव समान है, इसलिए नेक्स्ट टू गॉड है, उनको ही शिवबाबा कहेंगे और उनकी मत ही श्रीमत है।

• जगतपिता अर्थात् प्रजापिता। सो तो यहाँ ही चाहिए। (मु.ता. 18.11.62 पृ.2 आदि)

• प्रजापिता ब्रह्मा सिजरे का हेड है। उस समय प्रैक्टिकल में है। (मु.ता.22.12.83 पृ.1 अंत)

• प्रजापिता ब्रह्मा गाया जाता है ना! जिसको एडम, आदिदेव कहते हैं। (मु.ता. 29.12.84 पृ.2 अंत)

• प्रजापिता ब्रह्मा जिसको एडम कहा जाता। उनको ग्रेट-ग्रेट-ग्रेंड फादर कहा जाता है। (मु.ता. 6.2.76 पृ.1 मध्य)

• प्रजापिता आदिदेव कहते हैं; परंतु आदिदेव का अर्थ नहीं समझते हैं। ... आदि अर्थात् शुरूआत का। (मु.ता. 4.9.72 पृ.2 आदि)

• यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ एक ही है। उनका एक ही बीज है। .... कपिल देव को आदिदेव ब्रह्मा भी कहते हैं। (मु.ता.19.3.73 पृ.1 आदि)

• ब्रह्मा को कपलदेव भी कहते हैं। इनको महावीर, आदिदेव भी कहते हैं। दिलवाला भी कहते हैं। (मु.ता. 6.6.64 पृ.2 आदि)

इन महावाक्यों के अनुसार प्रजापिता के ही ये अनेक नाम हैं- आदिदेव, कपिल देव, महावीर, जो सारी मनुष्य सृष्टि के झाड़ का बीज है। यहाँ ब्रह्मा, प्रजापिता के लिए ही बोला है- वो ब्रह्मा भी है और प्रजापिता भी।

• तुम अगर ब्राह्मण हो तो ब्रह्मा कहाँ है? तुम्हारा बाप कहाँ है? ब्रह्मा नाम तो कह नहीं सके। फिर तुम ब्राह्मण कैसे कहते हो? ब्राह्मण तो प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान थे। यह भी शरीर में है ना! अब तुम हो सच्चे ब्राह्मण और वो हैं झूठे ब्राह्मण। (मु.ता. 17.9.69 पृ.2 आदि)

• प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण ही ठहरे। ब्राह्मण तब होंगे जब प्रजापिता सम्मुख होगा। (मु.ता. 20.8.85 पृ.1 अंत) ब्रह्मा अर्थात् बड़ी माँ। सिर्फ़ माँ के बच्चे होने से हम सच्चे ब्राह्मण नहीं, साथ में पिता भी होना चाहिए तब हम सच्चे ब्राह्मण होंगे। जब प्रजापिता हो तब ही हम सच्चे ब्राह्मण हैं और वो प्रजापिता इस समय साकार में है। अगर उस प्रजापिता को नहीं मानते तो हम झूठे ब्राह्मण हैं।

जब तक मम्मा जीवित रही तब तक आसुरी प्रवृत्ति वाले बच्चे अपना प्रभाव नहीं दिखा सके; क्योंकि मम्मा स्ट्रिक्ट थी। जब मम्मा ने शरीर छोड़ दिया तो बच्चों ने ब्रह्मा माँ के प्यार को वैल्यू नहीं दी। उन आसुरी ब्राह्मणों के विपरीत आचरण से ब्रह्मा माँ का दिल टूट गया। अन्त समय में जब बाबा ने देखा कि मेरे ही बच्चे मेरे साथ दगाबाज़ी कर गए, सारी ब्राह्मणों की सत्ता उन्होंने अपनी मुट्ठी में ले ली और वर्ल्ड रिन्यूअल स्पिरिचुअल ट्रस्ट बना लिया और मेरा नाम भी उसमें नहीं रखा। मैं जिन बच्चों को ज़्यादा अच्छा, श्रेष्ठ और सच्चा मानता हूँ, उनमें से किसी का नाम नहीं रखा गया। मुझे भी निकाल दिया गया। ***(16 जनवरी1969 को वर्ल्ड रिन्यूअल स्पिरिचुअल ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन हुआ । प्रकाशमणि दीदी और रमेश भाई बम्बई गए, जब यह कारोबार चल रहा था। प्रूफ- ज्ञानामृत पत्रिका मार्च 2014 रमेश भाई के द्वारा बताया गया)*** तो बाबा को सहन नहीं हुआ और 18 जनवरी सन् 1969 में हार्टफेल हो गया। ब्रह्मा बाबा सूक्ष्म शरीर धारण कर सूक्ष्मवतनवासी बन गए।

(प्रूफ-बुलेटिन-18.01.1969)

तारीख: 18-1-69 :-शनीवार को बाप दादा ने अपने सारी दिन चर्या नियम-पूर्वक व्यतीत की। प्रातः क्लास में कुछ तबीयत के कारण टीचर रूप से पढ़ाई न देकर सद्‌गुरु के रूप में याद की [illegible] कर बच्चों को याद प्यार गुडमॉर्निंग की। बाद में बाप रूप से रूहानी बच्चों की पालना अर्थ अपने हस्त द्वारा पत्र लिखे। पत्र लिखते समय बाबा बोले बच्ची आज जितनी पत्र लिखानी हो उतने लिखाओ। बाबा जिसको भी पत्र लिखते थे, तो बहुत ही बच्चों को याद में लिखते थे। प्यार भी अति तो निर्मोही [illegible] था। इसके बाद बाबा बच्चों के रहने लिये जो मकान बन रहे हैं उसकी देखरेख भी करने गये। इसके बाद रात्रि आठ बजे भोजन कर के आफिस में कुर्सी पर आकर बैठे। और बोले आज जल्दी ही क्लास कराता हूं। पता नहीं कल कराऊं वा न कराऊं। यूं तो बाप दादा रोजाना क्लास में सवा नव बजे पधारते थे। बाप दादा ने 20 मिनट मुरली चलाई। बहुत प्यार से दरवाजे पर खड़े होकर रूहानी बागवान अपने चैतन्य फूलों को नयनों से निहाल करते गुडनाईट नमस्ते कर अपने कमरे में चले गये। मधुवन की 5 बहनें भी साथ थी। उस समय ड्रामा का एक आश्चर्यवत दृश्य देखा। बाबा को थोड़ा हृदय में दर्द हुआ। कुछ ही मिनट में क्या। देखते हैं कि शिव बाबा अपने लाडले मूर्त्ती ब्रह्मा बच्चे को स्थूल वतन से उड़ाकर सूक्ष्मवतन के तख्त पर बिठा दिया। उसी समय सभी सेन्टर्स पर टेलीग्राफ

एक अनोखा अनुभव –दादा विश्व रतन

देखता रहा था। मैंने देखा कि बाबा अपना एक हाथ हार्ट पर रखकर कभी लेट जाता था और कभी बैठ जाता था। मैंने ऐसे अनुभव किया कि बाबा को बहुत दर्द है और रेस्टलेस फील कर रहा है। मैं जल्दी-जल्दी कमरे से

होता था। ऐसा दृश्य देखकर डाक्टर ने तुरन्त मेरे से कोरामिन इन्जेक्शन लेकर बाबा को इन्जेक्शन लगाई। लेकिन इतने में बाबा तो पहले से ही देह का त्याग कर ऊपर सूक्ष्म वतन में चला गया। फिर तो बाबा को पलंग पर लिटा दिया। डाक्टर को भी बड़ा दुख हो रहा था कि मैंने आने में देरी की।

गुलज़ार दीदी में शिवबाप नहीं आते थे

बाबा का महावाक्य इस प्रकार है- • **यहाँ दादी आदि की बात नहीं। सब ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ भाई-बहन हैं। (मु. ता. 20.11.67 पृ.1 अंत)**

• **आप सभी दादी नहीं, दीदियाँ और दादे तो हो। (अ.वा. 2.11.04 पृ.4 मध्य)**

ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के बाद अभी शिवबाबा का पार्ट कहाँ चल रहा है? किस तन द्वारा चल रहा है? कोई-2 ब्राह्मण ऐसे समझते थे कि सुप्रीम सोल शिव सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा में प्रवेश करते थे और फिर शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों मिलकर गुलज़ार दीदी के तन में प्रवेश करके पार्ट बजा रहे थे; लेकिन **मु.ता.5.11.92 पृ.1 के आदि में ही यह बात आई है कि "आते भी हैं पतित दुनिया और पतित शरीर में। पतित शरीर का नाम है प्रजापिता ब्रह्मा। इनमें प्रवेश कर कहते हैं, मैं बहुत जन्मों के अंत वाले साधारण मनुष्य तन में प्रवेश करता**

हूँ। .... **<u>मैं सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा द्वारा प्रवेश नहीं करता हूँ।</u> मुझे तो यहाँ पतितों को पावन बनाना है। (कल्पपूर्व में भी) मेरे <u>द्वारा</u> ही वह सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा पावन बना है।"** इस प्वॉइण्ट में स्पष्ट रूप से बताया है सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा में शिवबाबा नहीं आते थे। वो पतित तन प्रजापिता ब्रह्मा में आते हैं, जिनका व्यक्तित्व आदि में भी साधारण था और अभी भी साधारण ही है, जिसके द्वारा ब्रह्मा बाबा सहित सबको पावन बनना है। अब रही बात फिर गुलज़ार दीदी में कौन आता था? तो स्पष्ट है कि गुलज़ार दीदी में ब्रह्मा की सोल प्रवेश करती थी। शिवबाबा की सोल प्रवेश नहीं करती थी। गुलज़ार दीदी के तन में सिर्फ़ ब्रह्मा बाबा की आकारी सोल बीच-2 में पार्ट बजाती थी। जिसके लिए मुरलियों में ढेर सारे प्रूफ मिलते हैं। जैसे ब्रह्मा बाबा में जब शिवबाबा की प्रवेशता होती थी तो ब्रह्मा बाबा चैतन्य अवस्था में रहते थे। उनकी सोल गुम नहीं होती थी।

• यह भी कहते हैं- बाबा तो हमारे साथ है। मैं सुन रहा हूँ। तुमको सुनाते हैं तो मैं भी सुनता जाता हूँ। (मु.ता. 14.3.68 पृ.3 आदि)

• बाप तुम बच्चो को बैठ सुनाते हैं, तुमको जो सुनाते हैं, वह हम भी सुनते हैं। समझानी तो बिल्कुल राइट है। (मु.ता.18.8.96 पृ.3 अंत)

• बाप ही समझाते हैं। जिसमें प्रवेश किया है वह भी सुनते हैं। (मु.ता.7.2.68 पृ.1 आदि) और गुलज़ार दीदी में ब्रह्मा बाबा के सूक्ष्म शरीर के दबाव से गुलज़ार दीदी की सोल तो गुम हो जाती थी। गुलज़ार दीदी ने स्वयं अपने अनुभव में बताया था कि जब प्रवेशता होती थी तो उनको कुछ दिखाई नहीं देता, सुनाई नहीं देता। इससे साबित होता है उनमें सूक्ष्म शरीरधारी मनुष्य आत्मा की प्रवेशता होती थी। मनुष्य आत्माओं को अपना सूक्ष्म शरीर होता है, जिसके कारण वो शरीरधारी पर अपना प्रभाव डालती हैं। शिव को अपना सूक्ष्म शरीर नहीं है, वो तो हल्की-फुल्की आत्मा है। कब आता है, कब चला जाता है पता नहीं पड़ सकता; **मु.ता.1.1.76 पृ.3 के अंत में बाबा ने कहा है कि "शिवबाबा के अवतरण में तो बिल्कुल फ़र्क नहीं पड़ सकता। पता भी नहीं पड़ता है कि कब आया। ऐसे भी नहीं सा. हुआ तब आया। नहीं, अंदाज कर देते हैं। बाकी ऐसे नहीं उस समय प्रवेश हुआ। सा.हुआ हम फलाना बनेंगे। दुनिया को आग लगेगी। मिनिट-सेकेंड का हिसाब नहीं बतला सकते। इनका तो अवतरण भी अलौकिक है।"**

मु.ता.12.4.76 पृ.1 के आदि में बोला है- ऐसे नहीं बाबा का आवाहन करते हैं। नहीं, बाबा का आवाहन तो कर ही नहीं सकते। बाबा (खुद+आ) को आपे ही आना है। • इनको भी मालूम नहीं पड़ता कि कब मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। कोई तिथि-तारीख नहीं। (मु.ता. 4.6.66 पृ.2 अंत) लेकिन गुलज़ार दीदी के लिए पहले से ही घोषणा हो जाती थी- कब आना है और कब जाना है। आवाहन करते थे। पहले से ही डेट फिक्स हो जाती थी। **मु.ता.26.6.68 पृ.3 अंत में बाबा ने स्पष्ट बता दिया कि "सबसे जास्ती (हजारों के साथ) पतित कौन है, यह बाप बतलाते हैं। मैं उस रथ में ही प्रवेश करता हूँ।"** तो क्या गुलज़ार दीदी को सबसे जास्ती पतित तन कहा जा सकता है? गुलज़ार दीदी तो गृहस्थी के कीचड़ में भी नहीं पली हैं। वो तो बचपन से ही यज्ञ के शुद्ध वातावरण में मम्मा-बाबा के सामने पली हैं, उनके लिए ये कैसे कहा जा सकता है कि वो सबसे जास्ती पतित तन है। इसलिए **मु.ता.15.10.69 पृ.2 मध्य में बाबा ने बोला है- "(शिवबाबा) इतना ऊँच बाप है तो उनको तो राजा अथवा पवित्र ऋषि के तन में आना चाहिए। पवित्र होते ही हैं संन्यासी। पवित्र कन्या के तन में आवें; परंतु कायदा नहीं है। बाप सो फिर कुमारी पर कैसे सवारी करेंगे?" मु.ता.26.2.74 पृ.2 अन्त में बोला है- "नम्बरवन (दुखदाई) काँटे में मैं आकर उनको नम्बरवन फूल बनाता हूँ।"** मतलब बाप तो बड़े-ते-बड़े कामी काँटे में आकर बड़े-ते-बड़ा फूल, कमल फूल, किंग फ्लॉवर बनाने के लिए प्रवेश करते हैं। गुलज़ार दीदी में ब्रह्मा की सोल, देव आत्मा की सोल तो प्रवेश कर सकती है; लेकिन परमपिता शिव की सोल प्रवेश नहीं कर सकती। ब्रह्मा बाबा में शिवबाबा की प्रवेशता का पता नहीं पड़ता था; जबकि गुलज़ार दीदी में जब ब्रह्मा बाबा की आकारी सोल प्रवेश करती थी तो सबको पता पड़ जाता था। **मु.ता.26.1.68 पृ.1 के आदि का प्रूफ देखें- "बाप खुद कहते हैं- मैं जब**

आता हूँ तो किसको भी पता नहीं पड़ता है; क्योंकि हैं गुप्त। तुम बच्चे भी हो गुप्त। ... प्रवेश कब किया, कब रथ में पधारा, मालूम नहीं पड़ता।" गुलज़ार दीदी के द्वारा जो वाणी चलती थी, वो वाणी धारणायुक्त है, धारणा के प्वॉइण्ट्स उसमें ज़्यादा हैं। ज्ञान के प्वॉइण्ट्स उसमें उतने नहीं हो सकते। क्यों? क्योंकि ज्ञानसागर की सोल ज्ञान की बातें सुनाएगी और देवात्मा (कृष्ण उर्फ़ ब्रह्मा की आत्मा) धारणावान होती है तो वो तो धारणा की ही बातें सुनाएगी ना! **दिनांक 24.1.71 की मु.ता. पृ.3 के मध्यांत में बोला है- "लाउडस्पीकर पर कब पढ़ाई होती है क्या? टीचर सवाल कैसे पूछेंगे? लाउडस्पीकर पर रेसपांड कैसे दे सकेंगे? <u>इसलिए थोड़े-2 स्टूडेंट को पढ़ाते हैं।</u>"** "साबित हो जाता है कि गुलज़ार दीदी में जब प्रवेशता होती थी तो बहुत बड़ा हुजूम इकट्ठा होता था। लाउडस्पीकर पर ही बोला जाता था। लाउडस्पीकर पर बोलने वाला जो पार्ट है, वो परमपिता शिव का पार्ट नहीं हो सकता। बाप तो थोड़े-2 ग्रुप्स में, थोड़े-2 बच्चों से बात करते हैं। बाप कोई बहुत बड़े हुजूम के सामने भाषण करने नहीं जावेगा। बाप तो अपने बच्चों के सामने ही प्रत्यक्ष होता है। इतनी बड़ी दुनिया के हुजूम के सामने प्रत्यक्ष नहीं होता है। लाखों-करोड़ों की पब्लिक में बाप नहीं आते। स्पष्ट है कि गुलज़ार दीदी भी संदेशी हैं। उनके द्वारा अव्यक्त बापदादा शब्द का उच्चारण भी इसलिए किया जाता है कि हम बच्चों के मुकाबले ब्रह्मा बाबा बुद्धियोग से सदा शिवबाबा के साथ हैं। **मु.ता.17.3.73 पृ.2 अन्त में बोला है- "ड्रामा में जिसका पार्ट है, उनमें ही प्रवेश करते हैं और इसका नाम ब्रह्मा रखते हैं। ... अगर दूसरे में आवें तभी भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े।"** अब गुलज़ार दीदी को तो कोई 'ब्रह्मा' नहीं कहता। इससे भी साबित हो गया कि गुलज़ार दीदी में शिव परमपिता की सोल नहीं आती थी, ब्रह्मा की सोल ही प्रवेश करती थी। तो वो परमपिता परमात्मा का पार्ट नहीं है।

गुलज़ार दीदी में ही ब्रह्मा बाबा की प्रवेशता क्यों होती थी?

जब गुलज़ार दीदी में शिवबाबा प्रवेश नहीं करते तो ब्रह्मा बाबा की आकारी सोल भी क्यों प्रवेश करती थी? तो इसका कारण यह है कि ब्रह्मा बाबा के थ्रू यज्ञ की पालना हुई। भल बच्चों की आसुरी चलन से उनका हार्टफेल हो गया; लेकिन अंत तक भी बच्चों को सुधारने का, उनका कल्याण करने का शुभ संकल्प ब्रह्मा बाबा की मन-बुद्धि रूपी आत्मा में रहा। माँ का पार्ट होने के कारण बच्चों के प्रति उनका शुद्ध मोह भी है ही। जो बच्चे शिवबाबा के लवफुल पार्ट से नहीं सुधरे, उनको 'आर' अर्थात् अरई/चेतावनी देने वाले अव्यक्त बापदादा के इस पार्ट की भी आवश्यकता थी। यही कारण है कि बीच-2 में ब्रह्मा बाबा की आकारी सोल गुलज़ार दीदी के तन से बच्चों को धारणावान बनाने की तथा अपनी चलन सुधारने की चेतावनी देने का पार्ट चलाती थी। • **बाप बहुत प्यार से समझाते हैं; लेकिन प्यार से कोई-कोई बच्चे अलबेले, अलमस्त हो जाते हैं। इसलिए प्यार और आर (अरई) तो करना ही होता है। (अ.सं.ता.13.8.79 पृ.2 अंत)** प्यार और आर से बच्चे नहीं सुधरते हैं तो अंत में 'मार' यानी सज़ा (दंड) की नीति अपनानी पड़ती है। यहाँ भी जो बच्चे प्यार व आर की मीठी (संतुलित) भाषा नहीं समझे, उनके लिए फिर बाप को धर्मराज का रूप धारण करना पड़ता है। **अ.वा.ता.22.10.70 पृ.310 के अन्त में भी चेतावनी दी है कि "अभी थोड़े समय के अन्दर धर्मराज का रूप प्रत्यक्ष अनुभव करेंगे; क्योंकि अब अंतिम समय है।"** उन बच्चों को भी बाबा ने सावधान किया है जो यह समझते हैं कि ऊपर में कहीं कोई सूक्ष्मवतन है जहाँ सज़ाएँ मिलेंगी। जबकि **मु.ता.20.5.77 पृ.1 अंत में बताया है "सज़ाएँ भी कैसे खाते हैं? भिन्न-2 शरीर धारण कर। जिस-2 को जिस रूप से दुख दिया है तो वह सा. करते हैं, दंड मिलता जाता है।"** और **मु.ता.4.10.73 पृ.2 मध्यांत में "बाबा ने समझाया है सज़ा कैसे मिलती है? सूक्ष्म शरीर भी नहीं, स्थूल शरीर धारण करके सज़ा देते हैं।"** स्ट्रिक्ट पार्ट माता का नहीं हो सकता; इसलिए बाप अर्थात् जो आदि स्थापना जिसके द्वारा हुई थी, पिऊ (अर्थात् जिस प्रजापिता ब्रह्मा) के नाम से भी दीदी-दादी डरती हैं। **मु.ता. 8.3.69 पृ.3 के अंत में बोला- "ऐसे**

नहीं है बाप चला गया, फिर आवेगा नहीं। ... करनकरावनहार है ना! करता भी है, कराता भी है।" पहले ब्रह्मा बाबा के द्वारा करनहार का पार्ट बजाया; परन्तु उससे भी बच्चे नहीं सुधरे तो फिर अंत में करावनहार का पार्ट बजाते हैं। वही राम वाली आत्मा जो आदि स्थापना में फेल हो गई थी, दादा लेखराज के शरीर छोड़ने के बाद 30 नवम्बर, 1969 को ज्ञान में आ जाती है।

क्या राम फेल हुआ?

• रामचंद्र ने जीत नहीं पाई इसलिए उनको क्षत्रिय की निशानी दे दी है। (मु.ता. 23.7.68 पृ.3 मध्य)

• तुम सभी क्षत्री हो ना, जो माया पर जीत पाते हो। ....राम को बाण आदि दे दिया है। हिंसा तो त्रेता में होती नहीं। (मु.ता. 23.7.68 पृ.3 मध्य)

• बाप समझाते हैं- ऐसे नहीं कहेंगे कि रामचंद्र फेल हुआ। नहीं। (यज्ञ में) कोई बच्चे फेल हुए जो जाकर रामचंद्र बनते हैं। राम वा सीता थोड़े ही पढ़ते हैं जो कहें कि फेल हुए। यह भी समझने की बात है ना! कोई सुने रामचंद्र फेल हुआ तो कहेंगे कहाँ पढ़ते थे? आगे जन्म पढ़ कर यह पद पाया है। (मु.ता. 9.8.68 पृ.1 मध्यादि)

• रामचन्द्र भी राजयोग सीखता था, सीखते-2 फेल हो गया; इसलिए क्षत्रिय नाम पड़ा। (मु.ता. 31.8.70 पृ.3 मध्यांत)

• चन्द्रवंशी राम को बाण आदि दिए हैं। वास्तव में ज्ञान बाण की बात है। वह नापास हुआ इसलिए निशानी दे दी है। (मु.ता. 2.12.82 पृ.1 मध्यांत)

• बाबा बिल्कुल ठीक बताते हैं। हमको जो पढ़ाते थे, उनको माया खा गई। महारथी को भी एकदम माया हप कर गई। है नहीं। (मु.ता. 25.11.84 पृ.3 मध्य)

राम वाली आत्मा ने शरीर छोड़ा तो ब्रह्मा बाबा और ब्रह्मा वत्सों ने इन महावाक्यों के अनुसार यह समझ लिया कि वो दुर्गति में चली गई, दुबारा पद नहीं पा सकती है; परन्तु उन्होंने महावाक्यों को ठीक से समझा नहीं। राम वाली आत्मा शरीर तो छोड़ती है; परन्तु साथ में उसको अपना भरण-पोषण करने के लिए ज्ञान बाण भी निराकार शिव से मिल जाते हैं। शिवबाप उनको निश्चय बुद्धि बनाने के लिए साक्षात्कार करके बहलाते नहीं हैं; क्योंकि वो बुद्धिवादी दृढ़ इच्छा शक्ति वाली त्रिनेत्री आत्मा है, जो स्वयं ही अपने पुरुषार्थ से ऊँच पद पाती है। राम वाली आत्मा जानती है कि रावण सम्प्रदाय का नाश किए बिना रामराज्य नहीं स्थापित हो सकता है। सबसे ऊपर जाना है तो कठिनाई का भी सामना करना है; क्योंकि सोना आग में जलकर ही कुंदन बनता है; इसलिए राम वाली आत्मा धर्मयुद्ध भूमि में कौरव संप्रदायों का शिव से मिले ज्ञान बाण से अज्ञान का नाश करने के लिए स्थिर हो जाती है और शिवबाप तो किसी को रोकथाम नहीं करते हैं, वो (मुकर्रर रथ) जैसा कहते हैं वैसा ही करते हैं जैसे भगवान ने भी अर्जुन के कहने पर रथ को युद्ध भूमि के मध्य में स्थिर कर दिया था। **"सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमं।।" (1/24 गीता)** सन् 1942 में राम बाप ने शरीर छोड़ा था और सन् 1942 में ही दुबारा जन्म ले लेते हैं; क्योंकि रामराज्य लाने की जो पहले भी श्रेष्ठ भावना थी, भल लाश गुम करने वालों के द्वारा अकाले मृत्यु हुई; जिसके लिए मुरली में बोला है-**"त्रिमूर्ति भी दिखाते हैं। सिर्फ़ शिव को उड़ा दिया है, उनका विनाश कर दिया है। ठिक्कर-भित्तर में ठोक, उनका लाश गुम कर दिया है।" (मु.ता.10.9.73 पृ.1 मध्य)** परन्तु फिर भी पूर्वजन्म के अधूरे कर्म को पूरा करने की श्रेष्ठ भावना थी; इसलिए तुरंत गर्भ में आत्मा प्रवेश कर जाती है और जन्म ले लेती है।

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीं।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।। (2/37 गीता)

हे कुन्तीपुत्र! या {हौसले से लड़ते2-} **मौत पाई** {तो} **स्वर्ग को पाएगा अथवा जीतकर** {अद्वैतवादी स्वर्गीय} **धरणी को भोगेगा; इसलिए युद्धार्थ निश्चय कर उठ खड़ा हो।** {विश्वविजय तेरा ही जन्मसिद्ध अधिकार है।}

• अभी रामचन्द्र की पूजा करते हैं, उनको भी यह पता नहीं है कि राम कहाँ गया। यह तुम बच्चे ही समझते हो, <u>राम की आत्मा तो ज़रूर पुनर्जन्म लेती रहती होगी यहाँ। इम्तहान में नापास होते हैं; परंतु कोई-न-कोई रूप में</u>

<u>होंगे तो ज़रूर ना! यहाँ ही पुरुषार्थ करते रहते हैं। इतना नाम बाला जो है राम का सो ज़रूर आवेंगे, उनको नॉलेज लेनी पड़ेगी। अभी कुछ भी मालूम नहीं पड़ता है।</u> (मु.ता. 9.10.68 पृ.1 मध्यांत)

• 5000 वर्ष से पुरानी चीज़ कोई है नहीं। पुराने-ते-पुराने वि(सि)क्के रामचन्द्र के मिलेंगे। (रात्रि मु. 13.9.68 पृ.1 अंत)

सिर्फ़ एक वाक्य याद रखा- राम फेल हो गया, दुर्गति में चला गया और दूसरा वाक्य जो बोला उस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। सन् 1968 में साकार ब्रह्मा तन से ही शिवबाप ने बताया कि राम साकार में कोई व्यक्तित्व है जो पहले नापास हुआ था, फिर वही ज़रूर आएगा और आकर नॉलेज भी लेगा। जैसे जंगल से एक शेर जाता है तो दूसरा आ जाता है, ऐसे ही सदाशिव ज्योति का कार्य भी रुक नहीं सकता।

मुकर्रर रथ कौन? टेम्परी रथ कौन?

ब्रह्मा बाबा (टेम्परी रथ) जाता है तो मुकर्रर रथ शंकर/राम वाली आत्मा फिर से स्टेज पर आ जाती है; इसलिए मुरलियों में टेम्परी रथ और मुकर्रर रथ दो प्रकार के रथों की बात आई है –

• शिवजयंती भी मनाई जाती है तो जरुर यहाँ आते हैं ना! जयंती तो जरूर साकार मनुष्य मनुष्य की होगी। जरुर वह आत्मा किस शरीर में प्रवेश करते हैं। प्रकृति का आधार लेते हैं। नया शरीर नहीं लेते हैं। (मु. ता. 22.3.69 पृ.2 आदि)

जयंती मनाई जाती है साकार की, निराकार की जयंती नहीं होती है। शिव मुकर्रर रूप से जिसमें प्रवेश करते हैं। उसके शरीर का अन्तत: नाश नहीं होता है। ब्रह्मा बाबा के शरीर का तो नाश हो गया।

• यह रथ (कायमगंज में) कायम ही रहता है बाकी का ठिकाना नहीं है। यह तो मुकर्रर है ड्रामा अनुसार। इनको कहा जाता है भाग्यशाली रथ। तुम सबको तो भाग्यशाली रथ नहीं कहेंगे। भल किसमें बाबा आता है; परन्तु भाग्यशाली रथ एक कहा जाता है। (मु.ता. 26.8.69 पृ.3 मध्य)

मुकर्रर रथ को ही भाग्यशाली रथ कहेंगे; क्योंकि वो एक ही भगवान् का रथ है। ब्रह्मा बाबा को कायमी रथ नहीं कहेंगे; क्योंकि उनका साकार शरीर सदाकाल के लिए छूट गया। उनको भाग्यशाली रथ भी नहीं कहेंगे; क्योंकि अन्य सभी प्राणियों के समान नश्वर है, इसलिए बाबा ने बोला- बाकी का तो ठिकाना नहीं।

• ब्रह्मा के साकार पार्ट की समाप्ति और अन्य पार्ट का आरम्भ होना। (अ.वा.ता. 28.5.77 पृ.183 अंत)

• ब्रह्मा बोले ब्राह्मणों की वृद्धि तो यज्ञ समाप्ति तक होनी है; लेकिन साकारी सृष्टि में, साकारी रूप से मिलन मेला मनाने की विधि, <u>वृद्धि के साथ-2</u> परिवर्तन तो होगी ना! <u>लोन ली हुई वस्तु (टेम्परी रथ) और अपनी वस्तु (मुकर्रर रथ) में अंतर तो होता ही है</u>। ......अपनी वस्तु को जैसे चाहे वैसे कार्य में लगाया जाता है। (अ.वा.ता. 5.4.83 पृ.118 मध्य) ऐसे नहीं कि ब्रह्मा बाबा ने शरीर छोड़ा तो अभी ब्राह्मणों की वृद्धि नहीं होगी, ज़रूर कोई और रथ के द्वारा वृद्धि होनी है जो मुकर्रर रथ होगा, लोन लिया हुआ नहीं; क्योंकि ब्रह्मा बाबा टेम्परी लोन लिए हुए रथ थे; इसलिए शिवबाप उनके द्वारा जैसा चाहे वैसा पार्ट नहीं बजा सकते। वो तो मृदुल स्वभाव के थे; परन्तु मुकर्रर रथ तो अपना ही है; इसलिए उनके द्वारा सर्व संबंधों का, हर प्रकार का पार्ट बजाते हैं। • **शिवबाबा कहते हैं- यह (रथ) हमारा नहीं है, यह हमने उधार लिया है। (मु.ता. 16.4.71 पृ.1 आदि)** ब्रह्मा बाबा के रथ की बात है। • **बच्चों का सारा अटेंशन जाता है शिवबाबा तरफ। वह तो कब बीमार पड़ नहीं सकते। वह चाहे तो ब्रह्मा तन से नहीं तो और कोई अच्छे बच्चे द्वारा भी मुरली चला सकते हैं। (मु.ता. 17.1.70 पृ.1 आदि)** ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के बाद मुरली चलाने का कार्य बंद नहीं हो सकता है, वो ज़रूर किसी के द्वारा फिर मुरलियाँ चलाते हैं।

राम बाप का यज्ञ में पुन: आगमन

राम वाली आत्मा पुनः ज्ञान यज्ञ में अहमदाबाद के पालड़ी सेण्टर में ही आती है। उसका साकार तन अहमदाबाद में अलौकिक जन्म लेता है। अतः अव्यक्त बापदादा ने अहमदाबाद को 'अल्लाह की नगरी' कहा है। खुदा की इस बेहद खुदी के कारण ही इस नगरी का नाम अहं+दा+बाद अर्थात् जिसने सबको झुकाने के बाद

अपना (सात्विक) अहं दिया हो- ऐसा अहमदाबाद नाम पड़ा है। जिस अहमदाबाद प्रभुपार्क, पालड़ी सेवाकेंद्र के अलावा सभी सेंटर्स बच्चों ने बनाए; परन्तु यज्ञ की धनराशि से ब्रह्मा बाबा द्वारा सिर्फ़ अहमदाबाद पालड़ी सेवाकेंद्र बनता है।

• गुजरात वाले कितने भाग्यवान हो! गुजरात में बापदादा ने (पहला) सेण्टर खोला है। गुजरात ने नहीं खोला है। इसलिए न चाहते भी सहज ही सहयोग का फल निकलता ही रहेगा। आपको मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। (अ.वा.ता. 12.12.83 पृ.45 आदि)

• साकार ब्रह्मा के प्रेरणा से स्थापन हुआ है। गुजरात ने गुजरात को निमन्त्रण नहीं दिया, ब्रह्मा बाप ने गुजरात को खोला है। (अ.वा.ता.15.12.05 पृ.3 आदि)

• (चेतन) अहमदाबाद को सभी से ज़्यादा सर्विस करनी है; क्योंकि अहमदाबाद सभी सेंटर्स का बीजरूप है। बीज में ज़्यादा शक्ति होती है। खूब ललकार करो, जो गहरी नींद में सोए हुए भी जाग उठें। (अ.वा.ता. 24.1.70 पृ.190 मध्य) सभी सेण्टर्स का बीज क्यों बोला है? क्योंकि सारे विश्व की बीजरूप आत्मा, जिस एक बीज से ये सारा जड़-जंगम, सारा संसार फैला है, वो मनुष्य-सृष्टि का बीज आदम/एडम/शंकर वहाँ से ज्ञान में निकलता है।

• आगे जो मरे थे, फिर भी बड़े हो, कोई 20-25 के ही हुए होंगे। ज्ञान भी ले सकते हैं। (मु.ता.16.2.67 पृ.1 अंत) सन् 1967 की वाणी अनुसार सन् 1947 में जिसने शरीर छोड़ा, उनकी आयु 20 वर्ष और जिन्होंने सन् 1942 में शरीर छोड़ा, उनकी आयु 25 वर्ष हो गई थी। जिनमें से एक आत्मा तो सन् 1966 में ज्ञान में आ गई थी और एक आत्मा ज्ञान में आने वाली थी; इसलिए बोला- ज्ञान भी ले सकते हैं। जो अहं+दा+बाद में जैसे सागर के किनारे था और उनको ज्ञान देने वाली थी बी.के वेदान्ती बहन (आदिलक्ष्मी)। वही राधा है, जिसकी उम्र शास्त्रों में कृष्ण से 3-4 साल ज़्यादा दिखाते हैं; क्योंकि सन् 1966 में, 4 साल पहले ही वह ज्ञान में आ जाती है और उनको ज्ञान-दूध पिलाती है, आत्मा का ज्ञान देती है और मुरलियों से उनकी पालना करती है। (ज्ञान-चन्द्रमा ब्रह्मा/सोम/जब्राइल फ़रिश्ता को नाथने वाला) 'सोमनाथ' नाम शिव-शंकर का ही पार्ट है। वो ही सोमनाथ की यादगार अहमदाबाद सेण्टर से निकलता है। मुरली में इन दो आत्माओं के लिए बोला – **"सोमनाथ नाम रखा है; क्योंकि (विक्रमादित्य को) सोमरस पिलाते हैं, ज्ञान-धन देते हैं। फिर जब (द्वापुरादि में वही विक्रमादित्य) पुजारी बनते हैं तो कितना धन खर्चा करते हैं उनका मंदिर बनाने पर; क्योंकि सोमरस दिया है ना! <u>सोमनाथ के साथ सोमनाथिनी भी होगी।</u> यथा राजा-रानी तथा प्रजा सभी सोमनाथ-सोमनाथिनी हैं।" (मु.ता. 3.3.70 पृ.2 मध्यादि)** सोमनाथ है आदिनारायण जो सोम अर्थात् ज्ञान चन्द्रमा को नाथने वाला और सोमनाथ के साथ सोमनाथनी आदिलक्ष्मी, इन दोनों के द्वारा ही सोम=ज्ञान चंद्रमा ब्रह्मा बाबा को अपने साक्षात्कार का अर्थ और सोमनाथ के मुख से निकला सोम+रस मिला था; इसलिए जब पुजारी बनते हैं तो उनके लिए द्वापुरादि में हद का और पु. संगम में बेहद का मंदिर अर्थात् सेण्टर खोलते हैं। **• यू.पी. और गुजरात ज़ोन बापदादा के सामने बैठा है, बापदादा उनकी विशेषता सुना रहे हैं: सर्व स्थानों की अपनी-अपनी विशेषता है। यू.पी. भी कम नहीं तो गुजरात भी कम नहीं। दिल्ली के बाद यू.पी. निकला। जो आदि में स्थापना के निमित्त बने हैं, उन्हों का भी ड्रामा में विशेष पार्ट है। फिर भी आदि वालों ने डबल लॉटरी तो ली है ना! साकार और निराकार। डबल लॉटरी मिली है। यह भी कोई कम पार्ट है क्या! कल्प-कल्प के चरित्र में सदा साथ रहने का भी यादगार है। (अ.वा.ता. 1.11.81 पृ.104 अंत, 105 आदि)** सोमनाथ राम वाली आत्मा हद में यू.पी निवासी और सोमनाथिनी आदिलक्ष्मी हद में गुजरात निवासी है, ये ही आदि स्थापना के निमित्त थे और जन्म-जन्मान्तर के साथी हैं।

5 दिसम्बर 1969 असली स्मृति दिवस

बेसिक ज्ञान वेदान्ती बहन से मिलता है और राम वाली आत्मा को ज्ञात हो जाता है कि हम देह नहीं, आत्मा हैं, तो उसी की प्रैक्टिस में लगातार लग जाने से, निरंतर अभ्यास करते-करते, 5 दिन में यानी 5.12.1969 को सुप्रीम सोल से, भल कुछ सेकेण्ड के लिए ही अव्यक्त मिलन मनाता है। **जिसके लिए अव्यक्त-वाणी 5.12.2016 पृ.1 आदि में उस दिन को याद करते हुए बोला- "यही दिन था पहला दिन, जो अव्यक्त रूप में बाप बच्चों से**

मिला था। ... अव्यक्त रूप का मिलन भी हुआ और अव्यक्त रूप में बाबा के नयनों में अव्यक्त मिलन का पहला दिवस था।" 5.12.1969 असली स्मृति दिवस/पहला अव्यक्त मिलन का दिवस है। 18 जनवरी 1969 को ब्रह्मा बाबा ने शरीर छोड़ा, सूक्ष्मवतनवासी, सूक्ष्म शरीरी बना; परन्तु आत्मा सूक्ष्म निराकारी बिंदु तो नहीं बनी; इसलिए उसको असली स्मृति दिवस नहीं कहेंगे।

लास्ट सो फ़ास्ट

6.12.69 की अव्यक्तवाणी पृ.153 के आदि में आया है- "इस भट्ठी से हरेक का चेहरा चैतन्य म्युज़ियम बनकर निकले। ... इस चेहरे के म्युज़ियम में कौन-कौन से चित्र फिट करेंगे? ... जैसे त्रिमूर्ति, लक्ष्मी-नारायण और सीढ़ी यह तीन मुख्य चित्र हैं ना! इनमें सारा ज्ञान आ जाता है। वैसे ही इस चेहरे के अन्दर यह चित्र अनादि फिट हैं।" शिव की तीन मूर्ति में विशेष है मनुष्य-सृष्टि का बीज आदम/एडम/शंकर की आत्मा जो आदिनारायण बनती है और वही आत्मा जो ज्ञान की रोशनी में रत रहती है, उसी 'भा+रत' के उत्थान और पतन की कहानी सीढ़ी में दिखाई है, उस एक में ही सारा ज्ञान है; इसलिए बोला इस चेहरे में यह चित्र अनादि फिट हैं । 18 जनवरी, 1970 को माउण्ट आबू में अव्यक्त बापदादा से वह विशेष आत्मा मिलती है, तब अव्यक्त-वाणी में आता है कि **"व्यक्त में भी अब भी सहारा है। जैसे पहले भी निमित्त बना हुआ साकार तन सहारा था, वैसे ही अब भी ड्रामा में निमित्त बने हुए साकार में सहारा है। (18 जनवरी, 1969 से) पहले भी निमित्त ही थे। अब भी निमित्त हैं। यह पूरा (एडवांस) परिवार का साकार सहारा बहुत श्रेष्ठ है। ....साकार अकेला नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा (है) तो उनके साथ परिवार है।" (अ.वा.ता. 18.1.70 पृ.166 अंत)** ब्रह्मा बाबा के शरीर छोड़ने के बाद बहुत बच्चे हिलने लगे, तब बाबा ने बोला- जो आदि यज्ञपिता प्रजापिता ब्रह्मा निमित्त थे, वो ही दुबारा साकार में अभी मौजूद हैं, जो उसी डाइमण्ड हॉल में मौजूद थे। सन् 1971 में राम वाली आत्मा कुमारों की भट्ठी में सम्मिलित होती है, तब अव्यक्तवाणी में आता है- "**कुमार जो चाहे सो कर सकते हैं।" (अ.वा.ता. 11.3.71 पृ.44 आदि)** ये वरदान कोई साधारण सभी कुमारों के लिए नहीं बोला है; क्योंकि कुछ करने के लिए दृढ़ता की आवश्यकता होती है। ये बात उस एक ही कुमार के लिए बोला है, जिस कुमार की बातों का बार-बार विरोध किया जाता था, जो पूरे कौरव संप्रदाय के विपरीत था; जैसे बगुलों के बीच में एक हंस हो। बाकी कुमार तो ब्रह्माकुमारियों के पक्ष में ही थे।

• **कुमारों को क्या करना है? सेण्ट भी बनना है, इनोसेण्ट भी बनना है। (अ.वा.ता. 11.3.71 पृ.43 अंत)**

• **कुमारों का सदा प्योर और सतोगुणी रहने का यादगार कौन-सा है, मालूम है? सनत्कुमार। (अ.वा.ता. 11.3.71 पृ.41 मध्य)** ब्रह्मा के बड़े पुत्र सनत्कुमार के द्वारा ही सनातन धर्म की स्थापना होती है। जैसे हर धर्म का नाम धर्मपिता के आधार पर पड़ता है, ऐसे ही हिन्दू धर्म कोई अलग से नहीं है, वास्तव में सनातन धर्म का ही नाम हिन्दू धर्म हो गया है। सनत्कुमार को शास्त्रों में चार मानस पुत्रों में छोटा और ज्ञान में बड़ा दिखाते हैं, उसी कुमार के लिए बोला है जो सनत्कुमार सनातन धर्म की स्थापना के निमित्त बनता है। ब्राह्मणों की दुनिया में छोटा और बड़ा ज्ञान के अनुसार माना जाता है, **रात्रि क्लास मु.ता.3.5.73 पृ.1 के मध्य में कहा है- "बड़े भाई को हमेशा बाप समान समझते हैं। यह भी बड़ा है। जैसे मम्मा भी बड़ी है। यह सारा ज्ञान के ऊपर है। जिसमें अधिक ज्ञान है, वह बड़ा ठहरा। भल शरीर में छोटा हो; परन्तु ज्ञान में तीखा है तो हम समझते हैं यह भविष्य पद में बड़ा (विश्वनाथ) बनने वाला है। ऐसे बड़ों का फिर रिगार्ड भी रखना चाहिए; क्योंकि ज्ञान में तीखे हैं।"** राम वाली आत्मा भी लास्ट में आती है, उससे पहले तो कई पुराने भाई-बहन थे; परन्तु उन सबसे भी वह तीखी हो जाती है।

• **एक वर्ष खादी का कपड़ा आदि पहना। गाँधी हो चला {सन् 1971 में राम वाली आत्मा की बात है कि खादी का पाजामा कुर्ता खरीद कर पहना, कुमारों की भट्ठी में गया।} बाप बैठ समझाते हैं कि यह भी गाँधी का फालोअर बना था। इसने तो सब कुछ अनुभव किया है। फर्स्ट सो लास्ट बन गया है। अब फिर फर्स्ट बनेगा। (मु.ता. 23.8.84 पृ.3 मध्यांत)**

• जो नम्बरवन पावन था, वही फिर नम्बर लास्ट पतित बना है। उनको ही अपना रथ बनाता हूँ। फर्स्ट सो लास्ट में आया है, फिर फर्स्ट में जाना है। (मु.ता. 21.5.68 पृ.2 अंत) (मु.ता. 11.6.69 पृ.2 अंत, पृ.3 आदि)

• तुम ही पहले-2 आए थे। अभी लास्ट में भी तुम हो। फिर पहले-2 तुम्हीं मनुष्य से देवता बनने वाले हो। (मु.ता. 16.7.73 पृ.2 मध्यांत) {त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः...(गीता-11/38)}

• ऐसे नहीं पहले आने वाले ही आगे जावेंगे। बाप कहते हैं- पिछाड़ी में आने वालों को तख्त मिलता है तो तीखे हो जाते हैं। पुराने पीछे रह जाते हैं। ...... देरी से आने वालों को तीखा दौड़ने का शौक रहता है। पुराने जैसे कि पुरुषार्थ करते-2 थक जाते हैं। (मु.ता. 8.3.76 पृ.3 अंत)

• पुराने-2 बच्चे कितने अच्छे थे, उनको माया ने हप कर लिया। ...समझ सकते हैं उनमें से फिर आएँगे। ज़रूर स्मृति आएगी कि हम बाप से पढ़ते थे। (मु.ता. 9.10.70 पृ.2 मध्य)

• ब्राह्मण धर्म में तुम कितने जन्म लेते हो?। कोई दो/तीन जन्म भी लेते हैं ना! (मु.ता. 12.3.69 पृ.3 मध्यांत)

ये सभी महावाक्य राम वाली आत्मा के लिए बोले हैं, जिसको शिवबाप ने अपना मुकर्रर रथ बनाया। वह फेल हो गया और शरीर छोड़ दिया तो समझ लिया था। कि वो आत्मा दुबारा नहीं आ सकती है; ये बात विधर्मी आत्माएँ ही सोचती हैं; क्योंकि वो समझती हैं पुनर्जन्म नहीं होता है; परन्तु ऐसे नहीं है। बाबा ने ही बताया- ब्राह्मण धर्म में ही कोई आत्मा 2 या 3 जन्म भी ले सकती है। तो वो ही आदि आत्मा पूर्वजन्म में रहे हुए अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए दुबारा जन्म लेकर आती है। ये सभी महावाक्य सन् 1968 से 76 तक की वाणियों के हैं, जिस समय वह मुकर्रर रथ पुरुषार्थ की तीव्रता को पकड़ रहा था और जब उस स्टेज को प्राप्त कर लेता है तो सन् 1976 में उसकी प्रत्यक्षता के लिए बापदादा ने अव्यक्त वाणी में सन् 1976 को बाप का 'प्रत्यक्षता वर्ष' बताया। सभी सोचते हैं जो पहले आते हैं, वो ही आगे जा सकते हैं; परन्तु ऐसे नहीं है। लास्ट में आने वाली आत्माएँ भी फ़ास्ट पुरुषार्थ कर आगे जा सकती हैं और ये बात अव्वल नंबर में राम वाली आत्मा के लिए ही लागू होती है, जो यज्ञ आरम्भ ॐ मंडली के अंत से 26 वर्ष के बाद ब्राह्मण परिवार में दुबारा जन्म लेकर आती है और सन् 1973 तक ही पुराने-2 b.ks से ज्ञान और योग में आगे चली जाती है।

शंकर के पुरुषार्थी स्वरुप द्वारा शिवलिंग का संपन्न स्वरुप

राम वाली आत्मा ही शंकर है, व्यक्तित्व एक ही है। **• जो पहले राम अथवा रुद्र बाबा के गले का हार बना होगा फिर विष्णु के गले का हार बनेगा। (मु.ता. 03.08.72 पृ.3 मध्य)** यहाँ राम को रूद्र बताया है और रूद्र शंकर को ही कहा जाता है। उस एक को अलग-अलग नाम से जाना जाता है। **• इनको भाग्यशाली रथ कहा जाता है। दक्ष प्रजापिता भी कहते हैं। है तो एक ही प्रजापिता। (मु.ता. 4.4.83 पृ.1 आदि)** जैसे पहले भी महावाक्यों में बताया कि प्रजापिता ही आदिदेव/एडम/महावीर/कपिलदेव/शिव+बाबा/राम इत्यादि हैं। **• ऐसी कोई बात नहीं, जो तुमसे लागू नहीं होती है। (मु.ता. 14.4.68 पृ.3 अंत)** राम वाली आत्मा ही सन् 1969 से निरंतर सदाशिव ज्योति को याद करने का पुरुषार्थ करती है, अंतर नहीं पड़ने देती है; क्योंकि बाबा ने मुरली में बोला है **• बाबा जिससे हमको विश्व की बादशाही मिलती है, उनको तो श्वाँसों-श्वाँस याद करना चाहिए। (मु.ता. 26.5.69 पृ.4 मध्य)** और सन् 1974 में 32 वर्ष की आयु में परमब्रह्म की अवस्था को प्राप्त करती है। शिव में सम्पूर्ण लीन हो जाती है। धर्मपिताएँ निराकार को याद करने का अभ्यास करते हैं; परन्तु कठिनाई पूर्वक; इसलिए पूरा लीन नहीं हो पाते। 100% एक ही मुकर्रर रथ है जो पूरा तन,मन,धन से समर्पण होकर 32 वर्ष की आयु में एकलव्य- सिर्फ़ एक सदाशिव ज्योति से लव अर्थात् सच्चा प्रेम करता है और उसमें ही लीन हो जाता है। **• परवाह थी पारब्रह्म में रहने वाले बाप की, वो मिल गया तो बाकी फिर क्या चाहिए। (मु.ता.12.3.67 पृ.3 मध्य)** बाकी सभी आत्माएँ ऐसा पुरुषार्थ नहीं कर पातीं । मुरली में बोला है– **• तुमको बनना है शिवबाबा का मुरीद। कोई भी देहधारियों का मुरीद नहीं बनना है। (मु.ता. 18.3.69 पृ.3 अंत)** सभी अपना-2 आधार अलग-2 पकड़ते हैं। कोई शिव समान नहीं बन पाता है; क्योंकि 100% प्रीति की रीति है समान बनकर दिखाए, जो दोनों में कोई भेद न कर पाए। इसलिए और किसी का नाम शिव के साथ नहीं जोड़ा जाता है, वो एक ही है जो शिव को याद

करता है और जैसे को याद करता है तो वैसा ही बन जाता है। जो शिव के गुण हैं, वो शंकर में आ जाते हैं- ये बात शास्त्रों में भी आई है कि शंकर 32 वर्ष की आयु में परमब्रह्म में लीन हो जाता है।

'द्वात्रिंशदवर्षयसि भौतिकशरीरं परित्यज्य परब्रह्मणि लीनमासीत्' (अमरकोश में कल्पद्रुम, शङ्कर शब्द, 12-13 वीं पंक्ति से उद्धृत)

'द्वात्रिंशदस्योज्वलकीर्तिराशेःसमाव्यतीयुः किल शङ्करस्य' (महाभा.3-228-6) (मंगलकारके त्रिकाण्डशेष)

• एक ही शब्द है पास होना है, (बाप के) पास रहना है और जो कुछ बीत जाता है, वह पास हो गया। एक ही शब्द के तीन अर्थ हैं। (पास रहना, नष्टोमोहा के फाइनल पेपर में पास होना और जो कुछ हुआ उसे (ख़ुशी-2) पास करना।) ये ही शॉर्टकट (छोटा रास्ता) हो जाएगा; और पास विद् ऑनर (सम्मान पूर्वक सफलता पाना) होना है। (अ.वा.ता. 5.1.77 पृ.2 आदि)

• प्रत्यक्षता वर्ष मनाने का अर्थ है- स्वयं को बाप के समान बनाना। (अ.वा.ता. 23.1.76 पृ.14 आदि)

यहाँ जो पास होने की बात है, साकार मुकर्रर रथ के लिए ही कही है जो पास होता है और बाप समान बनकर दिखाता है। ये बाप का प्रत्यक्षता वर्ष कोई निराकार के लिए नहीं बोला है, जो ब्रह्माकुमारियों ने समझ लिया और बिंदी बाप को प्रत्यक्ष करने लगे; इसलिए 32 गुण वाले चित्र पर समझाते हुए बताती हैं कि जो निराकार है, वो भगवान है और उसके ही 32 गुण होते हैं; परन्तु देखा जाए तो गुण और अवगुण तो साकार के होते हैं; क्योंकि जिसमें गुण होंगे, उसमें अवगुण भी होंगे। निराकार को तो निर्गुण,निरंजन कहा जाता है। जैसे कहते हैं- ज्ञान का सागर है। सदाशिव ज्योति निराकार को सागर नहीं कह सकते। सागर तो सदा धरणी से अटैच रहता है जबकि सदा शिवज्योति तो जड़ सूर्य की तरह सदा डिटैच रहता है। वो चेतन ज्ञान-सूर्य शिव परमपिता साकार में आता है और अखूट ज्ञान का भंडार देता है, तब ही ज्ञान-सागर कहा जाता है। फिर भी उस सदाशिव ज्योति को कीचड़ और जड़ रत्नों के चेतन सागर का संग का रंग नहीं लगता है। यही अटैचमेंट और डिटैचमेंट का अंतर है- सागर और सूर्य में; जैसे सागर की थाह नहीं नापी जा सकती, वैसे ही सदाशिव ज्योति के ज्ञान की भी थाह नहीं नापी जा सकती है। वह असीम है, जिसको किताबों में बंधायमान नहीं किया जा सकता है।

• सागर का अन्त कोई पा नहीं सकते हैं। (मु.ता. 27.8.69 पृ.2 अंत)

• कहा जाता है ना कि सागर को स्याही बनाओ। जंगल को कलम बनाओ, पृथ्वी को कागज बनाओ तो भी यह ज्ञान पूरा नहीं होगा। (मु.ता. 18.12.82 पृ.2 मध्य)

कहावत भी है-***"सब धरती कागज करूँ, कलम करूँ वनराय। सात समुंदर मसि करूँ, गुरु-गुण लिखा न जाय।।"***

उस एक आत्मा का पुरुषार्थ परिपक्व हो जाता है और बाप समान स्थिति को प्राप्त करती है। सिर्फ़ बिंदी को कैसे प्रत्यक्ष करेंगे? बिंदी-2 तो सभी प्राणियों की आत्माएँ हैं; लेकिन वो बिंदी किसी खास साकार में हो तो उसकी पहचान की जा सके। **• देखने में तो आत्मा और परमपिता (शिव) दोनों एक जैसी बिंदी, बाकी तो है सारी नॉलेज। यह बड़ी समझ की बातें हैं। (मु.ता.11.1.66 पृ.3 मध्यांत)** जैसे आत्मा की पहचान शरीर से होती है, वैसे ही सुप्रीम सोल की पहचान भी साकार मुकर्रर रथ से ही होती है। साकार और निराकार इन दो आत्माओं के द्वारा ही सृष्टि का सृजन होता है जिसके लिए मनीषियों ने भी कहा है- सृष्टि सृजन के लिए दो आत्माओं की आवश्यकता होती है- एक जड़त्वमयी देहभान वाली शक्ति और एक सदा आत्माभिमानी चैतन्य शक्ति जिन्हें शास्त्रों में कहा है- प्रकृति और पुरुष। साकार पार्टधारी पुरुष तो है; परन्तु परमपुरुष नहीं कहेंगे। परमपुरुष है सदाशिव ज्योति, जो आत्मा सदा चैतन्य शक्ति है और वह आधार लेता है परा+अपरा प्रकृति का, जो परे-ते-परे स्टेज में रहने वाली है। प्रकृति अर्थात् माता, जड़त्वमयी शक्ति। परमपिता शिव उस प्रकृति को अधीन करके आते हैं।

प्रकृतिं स्वां अधिष्ठाय सम्भवामि आत्ममायया।। (4/6 गीता)

अपने {मुकर्रर अर्जुन/आदम/आदिदेव के रथ रूपी**} प्रकृति {**खास इन्द्रियों को**} आधीन करके, {**सदा अव्यक्त**} आत्मशक्ति से प्रवेश करके {**गीता-11/54 में 'प्रवेष्टुम्' अनुसार ही**} जन्म लेता हूँ।**

मम योनिः महत् ब्रह्म तस्मिन् गर्भं दधामि अहं।
सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत।। (14/3 गीता)

हे {ज्ञान-प्रकाश में सदारत} **भारत!** {अपरा प्रकृतिरूप/मातागुरु-क्षेत्र} **परंब्रह्म मेरी योनि** {रूपा माता भी} **है; मैं उस** {अविनाशी देहरूप लिंगमूर्ति में} {आत्मज्ञान रूपी बीज का} **गर्भ डालता हूँ।** {सं+आख्यारूप सांख्य-योग के} **उस** {आत्ममंथन बढ़ने} **से** {याद की खुराक द्वारा पुरुषोत्तम संगमयुग में} **सब** {रुद्राक्ष/बीजरूप} **प्राणियों की** {परमब्रह्मा द्वारा मानसी} **उत्पत्ति होती है।**

सदाशिव ज्योति उसी मुकर्रर रथ में ज्ञान का बीज सबसे पहले सन् 1936-37 में डालते हैं। जैसे घर चलाने के लिए पिता को माता की आवश्यकता होती है, ऐसे ही इस समस्त सृष्टि को चलाने के लिए उस परमब्रह्मा रूपी माता को चुनता है। यहाँ चित्र में तीन मूर्तियाँ हैं, जिसमें ब्रह्मा और विष्णु को भगवान का स्वरुप नहीं कह सकते हैं; क्योंकि वो समदृष्टि सदाशिव ज्योति के समान नहीं होती हैं। शास्त्रों में दिखाया है- ब्रह्मा तो सिर्फ़ असुरों के पक्षधर रहे हैं और ब्राह्मणों की दुनिया में भी दादा लेखराज ब्रह्मा ने भी आदि स्थापना से ही मोह में आकर उन आसुरी प्रवृत्ति वाले बच्चों का सदा साथ दिया, जिन बच्चों ने ही उनकी लाज नहीं रखी; इसलिए न उनके मंदिर हैं, न मूर्ति हैं, न उनको कोई याद करता है और विष्णु तो देव ही कहलाते हैं; महादेव भी नहीं और वो भी सदा देवताओं के ही पक्षधर रहे हैं; इसलिए उनको भी शिव समान नहीं कह सकते हैं। राम अर्थात् शंकर वाली आत्मा ही परमब्रह्म भी बनती है। शंकर जिसको सदा चित्रों में या मूर्तियों में याद में तल्लीन निराकारी स्टेज में बैठे दिखाते हैं। याद में बैठा है अर्थात् अपने से ऊँचा कोई है, जिसको याद कर रहा है। पुरुषार्थी है, सम्पूर्ण नहीं बना है; जब तक पुरुषार्थी है तब तक अपूर्ण है; लेकिन वही फिर शिव समान सम्पूर्ण बन जाता है; क्योंकि निष्पक्ष भाव समदृष्टि सदाशिव ज्योति के स्वरुप को धारण करता है।

समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरः तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः।। (14/24 गीता)

{जो} **सुख-दुःख में** {ज्योतिबिंदु आत्मा में सदाशिव समान} **आत्मस्थ है, मिट्टी-पत्थर-सोने में समदृष्टि है, प्रिय-अप्रिय में** {रागद्वेषहीन 1} **समान, धैर्यवान है। अपनी निंदा-स्तुति में** {सदा हर्षित & 1} **समान रहता है,**

तुलसीदास अयोध्या कांड ***-"सोई जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहिं तुम्हइ हुइ जाई।।"***

तुलसीदास शिव+राम को कहते हैं- जिसको तुम जानते हो, उसको तुम जानकारी दे देते हो कि वो कौन है और तुम कौन हो और जब उसको ज्ञात हो जाता है तो वो तुम्हारे समान ही बन जाता है।

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चित् यतति सिद्धये।
यततां अपि सिद्धानां कश्चित् मां वेत्ति तत्त्वतः।। (7/3 गीता)

हज़ारों {पुण्यशील} **मनुष्यात्माओं में कोई एक सिद्धि के लिए** {लगातार} **यत्न करता है। यत्न करने वाले सिद्धों में भी मुझको**{कपिलमुनि-जैसा} **कोई ही यथार्थ रीति** {शिवज्योति निराकार को साकार में} **जान पाता है।**

क्योंकि शिव के अखूट ज्ञान-भंडार को ग्रहण करने की ताकत सभी में नहीं रहती, सिर्फ़ वो एक ही ग्रहण कर पाता है। सदाशिव ज्योति ज्ञान तो सभी 500-700 करोड़ आत्माओं को समान रूप से देता है; परन्तु लेने वाले नंबरवार हो जाते हैं; क्योंकि कोई पात्र छोटा और कोई पात्र बड़ा है। पूरा ग्रहण करने की ताकत सभी में नहीं होती है। प्रयास तो करते हैं; परन्तु प्राप्त नहीं कर पाते हैं। अखूट ज्ञान का भंडार धारण करने का तरीका है- जितना अपने को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे, उतना अखूट भंडारी बन जाएँगे। बाबा ने बताया है- **• बाप को याद करने से ज्ञान आपे ही इमर्ज हो जाता है। (अ.वा.ता. 24.1.70 पृ.3 आदि)** जैसे आज मनुष्य ऐरोप्लेन में जाते हैं, साइंस ने इतनी वृद्धि कर ली है कि चन्द्रमा आदि ग्रह-उपग्रहों तक भी चले जाते हैं; परन्तु सूर्य तक कोई नहीं पहुँच पाता। सिर्फ़ एक ही चैतन्य ज्ञान-सागर का पार्ट बजाने वाली आत्मा है, जो शिव के ज्ञान को पूरा ही प्राप्त कर, उसके समान निराकारी,निर्विकारी,निरहंकारी बन जाती है और उसको फिर कोई क्रॉस नहीं कर पाता है। जिसके लिए वृहदारण्यक उपनिषद् में कहा है***-"पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय***

पूर्णमेवावशिष्यते।।" ऐसा पूर्ण बन जाता है, जो उसमें से पूरा कोई ले भी ले, तो भी पूरा ही रहता है; क्योंकि ज्ञान देने से बढ़ता है। भौतिक पदार्थों के दान से ज्ञान दान श्रेष्ठ है। **"श्रेयान् द्रव्यमयात् यज्ञात् ज्ञानयज्ञः परन्तप।"(4/33 गीता)** आज सारी दुनिया गरीब है। स्थूल धन की बात नहीं है, ज्ञान धन की बात है; क्योंकि सच्चे ज्ञान के बिना मनुष्य पशु के समान हैं। वह एक से ही ज्ञान लेकर सारे संसार को देता है, इसलिए कहते हैं – *'दाता एक राम भिखारी सारी दुनिया।'* जो बाप का धंधा है वो ही धंधा करता है; इसलिए शिवबाप भी अपनी राजाई उसी बड़े और प्रिय बच्चे को देता है। जिसकी यादगार है कि हिस्ट्री में भी सभी राजाओं ने अपना राजाई का वर्सा अपने बड़े पुत्र को उसकी योग्यता के आधार पर दिया है। **मु.ता.10.2.72 पृ.4 के अन्त में बोला है- "गॉड इज़ वन, उनका बच्चा भी वन। कहा जाता है त्रिमूर्ति ब्रह्मा। देवी-देवताओं में बड़ा कौन? महादेव शंकर को कहते हैं।"**

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिः विशिष्यते।
प्रियः हि ज्ञानिनः अत्यर्थं अहं स च मम प्रियः।। (7/17 गीता)

उनमें एक {हीरो पात्रधारी शिवज्योति की अव्यभिचारी**} याद वाला सदा योगी, ज्ञानी {**त्रिनेत्री महादेवात्मा**} विशेष श्रेष्ठ है; क्योंकि ज्ञानी को मैं प्रिय हूँ और वह {**मेरा अखूट ज्ञानवारिस**} मुझको अति प्रिय है। •** {बाबा कहते ज्ञानी तू (1) आत्मा ही मुझे (सदाशिव को अति) प्रिय है। ऐसे नहीं कि योगी प्रिय नहीं है। जो (जितना) ज्ञानी होगा, वह (उतना) योगी भी जरूर होगा। (मु.ता.4.12.88 पृ.2 मध्य)}

न च तस्मात् मनुष्येषु कश्चित् मे प्रियकृत्तमः।
भविता न च मे तस्मात् अन्यः प्रियतरो भुवि।। (18/69 गीता)

मनुष्यों में कोई {भी**} मेरा उस {**साकार रथी सो निराकार शिवज्योति समान**} से प्रिय कर्म करने वाला नहीं है और पृथ्वी भर में {**जो 1 जगत्पिता महादेव की मूर्ति है**}, मुझे उसके अलावा {**कभी**} कोई दूसरा {**व्यक्ति**} अधिक प्रिय {**न हुआ है,**} न होगा।**

रामचरित मानस- "*संत-संग अपवर्ग सुख, धरिय तुला एक अंग।*
तूल न ताहि तुरीह सम, जो सुख लभ सत्संग।।"

इस दुनिया में जो संत बनकर बैठे हैं उनको और साथ ही विष्णुलोक के सुख, स्थूल धन-संपत्ति या मानवीय ज्ञान की संपत्ति जो सभी आत्माओं में नंबरवार है- इन सबको एक तराजू के पलड़े में रखो और दूसरे पलड़े में उस एक शिव+बाबा जो वास्तव में सदा सत्य है और सच्चा अविनाशी संग देता है, उसको रखो तो वो सद्‌गुरु ही भारी होगा। उसके सामने सब हल्के पड़ जाते हैं, कोई सदा विजयी नहीं होता है; इसलिए शास्त्रों में नारायण की कभी हार नहीं दिखाई है। **• यह है सत्य। सत्यम् शिवं कहा जाता है ना! सत्य बोलने वाला। पुरुषोत्तम बनने लिए तो यही एक सत्संग होता है। बाप जब आवे तब उनके ज्ञान को ही सत्संग कहा जाता है। बाकी तो सभी है कुसंग। (मु.ता. 13.7.67 पृ.2 मध्य)** जिसका गायन पारसनाथ के रूप में भी है। पारस कोई पत्थर नहीं होता, जो छूने से सोना बन जाए। अगर होता तो आज साइंस के पकड़ में आ जाता। पारसनाथ का सही शब्द है- स्पर्शनाथ, जिसके सम्पर्क में जो भी आत्माएँ आती हैं, वो नंबरवार सोने समान सच्ची चमकदार बन जाती हैं। ऐसे ही यही आदम/अर्जुन साकार सो निराकार बन जाता है तो दोनों में कोई भेद नहीं होता है; मुसलमानी फिकरा भी है ***"आदम को खुदा मत कहो, आदम खुदा नहीं; लेकिन खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं।"*** जैसे शरीर और आत्मा दोनों का महत्व है। निराकार आकर साकार की पहचान देता है और फिर साकार उस निराकार का ज्ञान सभी को देता है। ***"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े,काके लागूँ पाँय। बलिहारी गुरु आपने,जिन गोविन्द दियो बताय।"*** निराकार के बिना साकार को नहीं जान सकते और साकार के बिना निराकार को। ऐसे ही साकार और निराकार दोनों ही पूरक है; इसलिए सिर्फ़ साकार को पकड़ा या निराकार को पकड़ा तो भी सद्गति नहीं हो सकती है। रामायण में भी है- ***"शिवद्रोही मम दास कहावा, सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा।"*** जो शिव का

द्रोही है, वह मेरा कितना भी बड़ा भक्त बने, फिर भी मुझको नहीं पा सकता है। इन्हीं दोनों आत्माओं को गीता में क्षेत्र (साकार अर्जुन) और क्षेत्रज्ञ (निराकार शिव) बताया है। क्षेत्र है अर्जुन का मुकर्रर रथ, जिसमें कल्प-कल्प क्षेत्रज्ञ सदाशिव ज्योति प्रवेश करते हैं ।

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रं इति अभिधीयते।
एतत् यः वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः।। (13/1 गीता)

हे अर्जुन! यह {तेरा मुकर्रर*} **शरीर** {रूपी रथ ही धर्मयुद्ध का महाभारत} **'क्षेत्र' इस नाम से** {युद्ध & कर्मभूमि} **कहा जाता है। इस** {कलि+कृतयुग के संगम कालरूप को} **जो जानता है, उसको वह** {द्वापर के ऋषि-मुनि} **विद्वान 'क्षेत्र का ज्ञाता' ऐसे कहते हैं।**

यही क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ का जो ज्ञान है वो असली ज्ञान है।

क्षेत्रज्ञं च अपि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः ज्ञानं यत् तत् ज्ञानं मतं मम।। (13/2 गीता)

हे भरतवंशी! {ऐसे तो यथार्थ में} **सारे** {प्राणियों के} **शरीरों में क्षेत्रों का ज्ञानी भी** {इसी पु. संगम में} **मुझ** {शिवबाबा} **को जान और इस देह व देह के ज्ञाता** {शिवज्योति} **का जो ज्ञान है, वही** {इस दुनियाँ में सच्चा} **ज्ञान है- ऐसा मेरा मत है।**

संसार में हैं तो दो ही प्रकार की आत्माएँ हैं क्षर (सभी प्राणी मात्र) और एक अक्षर जो सिर्फ़ एक सदाशिव ज्योति है; लेकिन एक और तीसरी आत्मा है जो क्षर भी है और सदाशिव ज्योति के समान अक्षर भी बनती है। {'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया, समानं वृक्षं परिषस्वजाते। ।।(ऋग्वेद 01-164-20)।। (1 सदा अभोक्ता, दूसरा भोक्ता+अभोक्ता भी)}

द्वौ इमौ पुरुषौ लोके क्षरश्च अक्षरः एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थः अक्षरः उच्यते।। (15/16 गीता)

{पु.संगमयुगी} **संसार में ये** {सभी प्राणी भोक्ता & 1 अभोक्ता} **दो* ही प्रकार की आत्माएँ हैं-*अक्षर=क्षरणरहित** {शिव+समान शंकर} **और** {भोगी होने से} **पतनशील**{1 महादेव सिवा} **सभी** {क्षतवीर्य/पतनशील} **प्राणी विनाशी हैं,** {आज हैं, कल नहीं} **और** {परम ब्रह्मलोक वासी ऊँचे कैलाश-जैसे एवरेस्ट} **शिखर पर स्थित अविनाशी-** {सदाशिव के दैहिक लिंगरूप सोमनाथ मंदिर का शिवबाबा} **कहा जाता है;**

उत्तमः पुरुषः तु अन्यः परमात्मा इति उदाहृतः।
यो लोकत्रयं आविश्य बिभर्ति अव्ययः ईश्वरः।। (15/17 गीता)

किंतु इन दोनों में {प्राणीमात्र क्षर & सदाशिव ज्योति अक्षर} **से भिन्न सर्वोत्तम** {पुरुषोत्तम आदिनारायण की} **आत्मा** {हीरो पार्टधारी+परमब्रह्म (देहमूर्ति महादेव)} **'परमात्मा'← ऐसे** {तुरीया भोगी} **कहा जाता है,** {सभी आत्मा सो परमात्मा नहीं हैं।} **जो अमोघवीर्य महेश्वर** {त्रिलोकीनाथ सदाशिव ज्योति समान शिवबाबा} {सुख, दुःख, शांतिधाम} **तीनों लोकों* को अधिकार में लेकर धारण करता है।**

यस्मात् क्षरं अतीतः अहं अक्षरात् अपि च उत्तमः।
अतः अस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः।। (15/18 गीता)

जिस अक्षर {आदि नारायण} **से भी** {आत्मस्थिति में} **अतीत और उत्तम** {सदाशिव ज्योति, पुरुषोत्तम} **मैं हूँ,** {तो भी मेरी याद से वह मेरे समान बना है;} **इसलिए लोक & वेद में क्षर को भी पुरुषोत्तम कहा है।**

जो सदाशिव ज्योति समान ऊँच-ते-ऊँच भगवंत इस संसार में बनता है। साकार शंकर मूर्तिमंत महादेव सो निराकार बने अमूर्त स्वरूप की यादगार त्रिमूर्ति में सबसे ऊपर अव्यक्तमूर्ति लिंग रूप दिखाया है, वो कोई

निराकार शिव बिंदी नहीं है, लिंगाकार रूप है। लिंग साकार मूर्ति को ही होता है, निराकार अमूर्त शिव को नहीं होता।

मया ततं इदं सर्वं जगत् अव्यक्तमूर्तिना। (9/4 गीता)

मेरी अव्यक्त {स्थिति की लिंग-} **मूर्ति** {शंकर} **द्वारा यह सारा** {जड़-जंगम} **जगत्** {साकार बीज से साकार सृष्टिवृक्ष-जैसा} **विस्तृत है।** {इसलिए} **सभी प्राणी** {समुदाय} **मेरे** {लिंग बीज} **में स्थित हैं।**

जिसकी यादगार मंदिरों में भी शिवलिंग दिखाई जाती है। जिस शिवलिंग में हाथ, पाँव, कान, नाक नहीं दिखाए जाते; क्योंकि वो आत्मा ऐसा पुरुषार्थ करती है कि उसको अपने शरीर की इन्द्रियों का भान ही नहीं रहता है। कर्म करती है; परन्तु उसमें बुद्धि लिम्पायमान नहीं होती है, जैसे कर्मातीत हो जाती है। इसलिए यादगार भी वैसी बनाई है।

न एव किञ्चित् करोमि इति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्।
पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन् अश्नन् गच्छन् स्वपन् श्वसन्।। (5/8 गीता)
प्रलपन् विसृजन् गृह्णन् उन्मिषन् निमिषन् अपि।
इन्द्रियाणि इन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन्।। (5/9 गीता)

{शिवबाबा की} **यादमग्न, तेईस तत्त्वों का जानकार,** {प्रकृतिकृत ज्ञान&कर्म मुखादि} **इन्द्रियाँ, इन्द्रियों के** {स्वाभाविक} **भोगों में लगी हुई हैं- ऐसा** {निश्चय} **धारण करते हुए देखते, सुनते, छूते, सूँघते, खाते, जाते, सोते, श्वाँस लेते, बोलते,** {मल-मूत्र} **त्यागते,** {कुछ} **लेते हुए, आँखें खोलते** {और} **बन्द करते भी, कुछ भी नहीं करता, ऐसे मानता है।** {ऐसा आत्मज्योति में स्थिर तुरीया योगी भी अकर्ता है।}

जिसकी सात्विक यादगार द्वापुर के आदि में सोमनाथ मंदिर में लाल पत्थर का लिंग रखा था और उसमें हीरा लगा हुआ था जिसको समझते थे लिंग साकार की यादगार है और हीरा निराकार आत्मज्योति की यादगार है; परन्तु हीरा तो पत्थर होता है, भल बहुमूल्य रत्न है; परंतु है तो पत्थर ही है और मुरली में बोला है- **न मैं पूज्य बनता हूँ, न पुजारी बनता हूँ (मु. ता. 22.5.71 पृ. 2 मध्यांत)** न मैं (शिव) पत्थर बनता हूँ, न मैं पारस बनता हूँ; इसलिए शिवलिंग निराकार शिव की यादगार नहीं है। फिर निराकार की पूजा कैसे होती है? क्योंकि मुरली में ये भी बोला है – मेरी भक्ति भी ज़रूर होनी है। 'मेरी' अर्थात् निराकार शिव की भक्ति अर्थात् पूजा कैसे होती है? साकार ही 100% निराकारी स्थिति में स्थित होता है तो शिवलिंग स्वरूप में साकार मनुष्यात्माओं के द्वारा निराकार बनने वाले की पूजा होती है (मेरी माना शिव+बाबा की भक्ति तो ज़रूर होनी है) शिवलिंग में जो हीरा है, वो जो साकार शरीरधारी पुरुषार्थी शंकर है, उसकी सम्पन्न आत्मा की यादगार है और लिंग उसके शरीर की यादगार है। शिवलिंग कोई साकार व्यक्तित्व है। मुरली में बोला है – **• शिवलिंग तो चैतन्य है, उनकी (साकारी) प्रतिमा पूजी जाती है। (मु.ता.10.10.73 पृ.3 मध्य)**

• तुम जानते हो सबसे पुराना शिव का लिंग है। उनसे पुराना क्या होगा। .... इनसे पुरानी चीज़ तो कोई हो न सके। (रात्रि मु.ता. 13.9.68 पृ.1 मध्यांत)

• हे प्रभु कहने से शिवलिंग ही सामने आएगा। कोई देहधारी को हे प्रभु! कह न सके। (मु. 8.2.89 पृ.2 आदि)

• शिव के मन्दिर में जाकर देखो, वहाँ लिंग रखा है। ज़रूर चैतन्य था तब तो पूजा होती है। यह देवताएँ भी कब चैतन्य थे ना! उन्हों की महिमा है। (मु.ता. 27.6.71 पृ.2 आदि)

•पास्ट जो हुआ उसका यादगार है। जिसका जड़ यादगार है वह अब प्रेज़ेन्ट चैतन्य में है। (मु.ता. 8.3.83 पृ.3 अंत)

शंकर पुरुषार्थी है अर्थात् अपूर्ण है, उसी के सम्पूर्ण स्वरुप शिवलिंग की ही साकारी संसार में सार्वभौम सत्ता है। हर धर्म में उस एक सम्पूर्ण निराकारी स्टेज की ही मान्यता है, जो हरेक धर्मवंशी भी मानते हैं। उन सबका उद्गम और गंतव्य स्थान आदि पुरुष ही परमब्रह्म है, अन्य धर्मपिताएँ नहीं हैं, जिस आदि पुरुष को हिन्दूओं में आदि देव, मुसलमानों में आदम, जैनियों में आदिनाथ, क्रिश्चियन्स में एडम कहा जाता है। हिन्दू मान्यतानुसार जब सृष्टि के आदि में कुछ नहीं था, तब लिंगोद्भ्व की कथा बताते हैं अग्नि के समान लिंग का

आदि और अंत पाने के लिए ब्रह्मा ऊपर और विष्णु नीचे गए; परन्तु कोई उसका अंत नहीं पा सके; क्योंकि वो अनंत है

रामचरित मानस में भी है-*"हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।।"*

सर्व शास्त्रमयी शिरोमणि श्रीमदभगवद गीता-**अनादिमध्यान्तं अनन्तवीर्यं (11/19 गीता)**

आदि, मध्य और अंतरहित,{ऑलराउंड**} अमोघवीर्य वाले {**आप परमपिता शिव+बाबा आदम ही तो महादेव है**},**

लेकिन मानते तो सभी हैं; परन्तु जानते नहीं हैं; क्योंकि सभी जन्म-मरण में आने के कारण अपने स्वरूप को ही भूल गए हैं तो ईश्वर के स्वरूप को कैसे याद रखेंगे? स्वयं साकार मुकर्रर शरीरधारी भी 84 वें अंतिम जन्म में अज्ञानी, पत्थरबुद्धि जैसा बन जाता है इसलिए युगानुरूप साकार की यादगार शिवलिंग भी स्वर्णलिंग, रजतलिंग, ताम्रलिंग और अभी तो लौह लिंग या पत्थर का लिंग बनाया जाता है। तब शिवबाप आते हैं और आकर ज्ञान की रोशनी देते हैं। बाबा ने बोला है- '**जब तुम पूरा डूब जाते हो तो चोटी पकड़कर उठाता हूँ।' 'बाप भारत पर आशिक होते है।'**

भगवान की अवतरण भूमि भारत ही है। स्थूल भारत हो या चैतन्य भारत। भारत अर्थात् जो सदा ज्ञान की रोशनी में रत रहता है; इसलिए उसको स्वयंभू कहते हैं, जो स्वयं जन्म लेता है उसको ज्ञान में जन्म देने वाला कोई अन्य साकार मनुष्य नहीं होता है। संगठित चतुर्मुखी ब्रह्मामुख से निसृत गीता ज्ञान का चिन्तन करके उसको अपना बना लेता है। • **जब ज्ञान घिसेंगे तब ही राजतिलक के लायक बनेंगे। (मु.ता. 8.8.73 पृ.3 अंत)** जितना हम ज्ञान का मनन-चिन्तन-मंथन करेंगे तो वो ज्ञान अपना बन जाता है। ऐसे पुरुषार्थी का शरीर भी धनुष के समान लचीला होता है, जिसको कैसी भी परिस्थिति में मोल्ड करना चाहो, मोल्ड हो जाता है; इसलिए शिवबाप भी कल्प-2 उसी मुकर्रर रथधारी का आधार लेते हैं। यही साकार सो निराकार की याद से सम्पन्न बना प्रवृत्ति स्वरुप शिवलिंग जो मंदिरों में पूजा जाता है, जिसके सामने जाकर कहते हैं- ***"त्वमेव माता च पिता त्वमेव...."*** तू एक ही पहली-2 हमारी माता परमब्रह्म है और तू एक ही पहला-2 हमारा पिता है; क्योंकि शिव+बाबा का कार्य है स्थापना, विनाश और पालना का, वो प्रैक्टिकल कार्य 100% में तो एक ही करता है। परमब्रह्म बनकर स्थापना करता है, महाकाल बनकर विनाश करता है और परमपद धारी विष्णु बनकर पालना करता है। बाकी तो सभी निमित्त मात्र हैं।

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणि इति उपधारय।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयः तथा।। (7/6 गीता)

{स्त्री-पुरुष रूप**} प्राणियों का यह {**मूर्तिरूप देह+शिवसमान ज्योति**} उद्गम है, ऐसा {**तू**} जान ले {**और**} मैं {**शिव+बाबा**} समस्त {**जड़-जंगम प्राणीमात्र**} जगत् का {**इस पुरुषोत्तम संगमयुग में**} उत्पत्तिकर्ता तथा विनाशकर्ता हूँ।**

दिल्ली में भविष्य राजधानी का फाउण्डेशन/एडवांस पार्टी

सन् 1977 सम्पूर्णता वर्ष के बाद मुकर्रर रथ के द्वारा ही दिल्ली त्रिनगर में एक छोटा-सा संगठन का बीज पड़ता है इसलिए दिल्ली की विशेषताएँ बापदादा ने बताई हैं–

• सम्पूर्णता सम्पन्नता का झण्डा और राज्य का झण्डा दोनों देहली में होना है। तो देहली निवासी फ्लैग सेरीमनी की डेट फिक्स करें- अभी से तीव्र तैयारियाँ करने लग जाना है। ....देहली पर सबको चढ़ाई करनी है। देहली की धरनी को प्रणाम ज़रूर करना है। .....देहली के तरफ़ सभी की नज़र है। (विश्वपिता बनने वाले) बाप की भी नज़र है तो सर्व की भी नज़र है। (अ.वा.ता. 26.12.78 पृ.153,155)

• दिल्ली में कमाल कब करेंगे? दिल्ली का आवाज़ ही चारों ओर फैलता है। दिल्ली में नाम बाला होना, (सारे) भारत में नाम बाला होना है। इतनी ज़िम्मेवारी दिल्ली वालों को उठानी है। (अ.वा.ता. 24.1.70 पृ.189 मध्य)

दिल्ली में ही राजधानी स्थापन होनी है, जिसका बीज सन् 1977 से ही पड़ गया था और बाप का कार्य भी दिल्ली में ही चल रहा है, इसलिए 15.11.2016 की अव्यक्त वाणी में बापदादा ने बताया- दिल्ली में राजधानी

स्थापन हो रही है और बाप का कार्य भी वहीं चल रहा है। वहीं सभी को जाना **है। "आज बाबा से मिले; लेकिन दिल्ली में मिलें।"** पूरी अव्यक्त वाणी में बापदादा ने दिल्ली राजधानी का ही जिक्र किया और ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ जिस ब्रह्मा बाबा को वो भगवान मानते हैं, उनका ही मुँह बंद करने लगे। बापदादा आप दिल्ली में नहीं, माउण्ट आबू में बैठे हैं; जैसे बापदादा जानते नहीं हैं मानों उनसे ज़्यादा समझदार बच्चे हैं; लेकिन वो बेसमझ बच्चे क्या जाने कि दिल्ली में ही भविष्य राजधानी बननी है। वो तो माउण्ट आबू में बने महल-माड़ियों को ही स्वर्ग समझते हैं। बाप दादा तो चले गए, अब हम स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं- यही समझते है; क्योंकि मुरलियों के महावाक्यों पर कभी विचार-मंथन ही नहीं किया। **• दिल्ली को वरदान है, और उसमें भी आदि रत्न जगदीश को वरदान है स्थापना के कार्य में। (अ.वा.ता. 23.2.97 पृ.33 अंत, 34 आदि)** बेहद का जगदीश अर्थात् सारे जगत का ईश्वर, उनके द्वारा राजधानी का फाउण्डेशन सन् 1977 में ही एडवांस पार्टी के रूप में पड़ गया था जो अभी विस्तार को प्राप्त हो गया है। **• एडवांस का ग्रुप, उसमें भी जो विशेष नामी-ग्रामी आत्मायें हैं, उनका संगठन बहुत मजबूत है। श्रेष्ठ जन्म, फर्स्ट जन्म दिलाने के लिए धरनी तैयार करने का वंडरफुल पार्ट इन आत्माओं द्वारा तीव्रगति से चल रहा है। (अ.वा.ता. 18.1.80 पृ.222 अंत)** आदिनारायण के द्वारा ही फर्स्ट जन्म की शुरुआत होती है और वो ही राजधानी का फाउण्डेशन डालने के निमित्त बनता है।

• यह शिवरात्रि प्रत्यक्षता की शिवरात्रि करके मनाओ। सब (ब्राह्मणों) का अटेंशन जाए- यह कौन हैं और किसके प्रति सम्बंध जोड़ने वाले हैं। सब अनुभव करें कि जो आवश्यकता है वह यहाँ से ही मिल सकती है, सब सुखों के खान की चाबी यहाँ (स्वर्ग की राजधानी दिल्ली में) ही मिलेगी। (अ.वा.ता. 3.2.79 पृ.267 मध्य)

• अभी तो गुप्त वेश में अपना फाउण्डेशन स्टोन डाला है अर्थात् बीज डाला है; लेकिन समय प्रमाण यही बीज फल के रूप में आप सब देखेंगे। (अ.वा.ता. 24.1.78 पृ.41 मध्य)

• नई सृष्टि की स्थापना में भी विशेष ब्रह्मा के साथ-2 अनन्य आत्माओं का अभी जोर-शोर से पार्ट चल रहा है। (अ.वा. 10.11.83 पृ.12 आदि)

• यह तो बाप को आना पड़ता है। अंत तक बाप को ज्ञान सुनाना है। आते ही गुप्त रूप में हैं। (मु.ता. 16.8.72 पृ.2 मध्य)

जिसको ब्रह्माकुमारियों ने शंकर पार्टी घोषित कर दिया; परन्तु बाबा ने तो मुरलियों में कहीं शंकर पार्टी नहीं कहा है। एक बाप के सारी सृष्टि से चुनिन्दा त्रिमूर्ति रूप तीन बच्चे, उनमें पार्टी बाजी कहाँ से होगी? और अव्यक्त वाणियों में एडवांस पार्टी का जिक्र आने लगा। ब्रह्मा वत्सों ने सोचा एडवांस पार्टी ऊपर है; परन्तु अव्यक्त बापदादा ने स्पष्ट रूप से वाणियों में क्लीयर किया है एडवांस पार्टी साकार सृष्टि में है।

• एडवांस पार्टी का पार्ट अभी तक गुप्त है। (अ.वा.ता.19.3.2000 पृ.101 अंत)

• तुम (विजयमाला में आने वाली आत्माओं) को तो एडवांस पार्टी में जाकर बहुत बड़ी सेवा करनी है। बाबा तो आपका साथी है ही, बाबा ऊपर से सेवा करेंगे, बाकी आपको अभी नीचे जाकर सेवा करनी है। (अ.सं.ता.18.7.96 पृ. 105 आदि) तात्पर्य है कि एडवांस पार्टी कहीं ऊपर में नहीं है, इसी सृष्टि पर है। **• आप लोग ही सोचते हो और बार-2 पूछते हो कि एडवांस पार्टी की विशेष आत्माएँ अब तक गुप्त क्यों? तो प्रत्यक्ष करने चाहते हो ना! समय प्रमाण कुछ एडवांस पार्टी की आत्माएँ श्रेष्ठ योगबल की श्रेष्ठ विधि को आरम्भ करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं का आवाहन कर रही हैं। ऐसे आदि परिवर्तन के विशेष कार्य अर्थ आदिकाल वाली आदि रत्न आत्माएँ चाहिए, विशेष योगी आत्माएँ चाहिए। जो अपने योगबल का प्रयोग कर सकें। भाग्यविधाता बाप की भागीदार आत्माएँ चाहिए। (अ.वा.ता. 30.7.83 पृ.243 मध्य)**

दादा लेखराज ब्रह्मा को भाग्य का लेखा लिखने वालों का राजा भाग्यविधाता कहा जाता है और उसी दादा लेखराज ब्रह्मा का भागीदार ही प्रजापिता ब्रह्मा था, जो आदिरत्न है, जिसके द्वारा ही आदि होती है। उसके द्वारा ही एडवांस ज्ञान निकलता है, एडवांस ज्ञान कोई अलग से नहीं है। मुरलियों और अव्यक्त वाणियों के एक-2 वर्शन्स पर विचार-सागर-मंथन करने के बाद, चित्रों की लिखत व चित्रण को उनसे टैली करने पर जो सार

निकलता है, गुह्य राज़ प्रकट होता है वही एडवांस नॉलेज या नया ज्ञान है। जबकि ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ समझते हैं कि शिवबाबा की मुरलियाँ तो सीधी-सादी सरल अर्थ वाली हैं। उनमें ऐसा कोई गुह्य अर्थ नहीं है जिसको समझने के लिए विचार-सागर-मंथन करने की आवश्यकता हो; लेकिन दूध का मंथन करने से ही मक्खन निकलता है।

• जब ज्ञान घिसेंगे तब ही राजतिलक के लायक बनेंगे। (मु.ता. 8.8.73 पृ.3 अंत) मु.ता.31.8.73 पृ.4 के मध्यांत में बाबा ने कहा है कि "मुरली बच्चों को 5-6 बार पढ़नी चाहिए, सुननी चाहिए, तब ही बुद्धि में बैठेगी।"

• सारा मदार याद की यात्रा पर है। यहाँ तुम सुनते हो फिर उस पर मंथन चलता है। जैसे गाय घास खाती है फिर उगाली करती है। मुख चलता ही रहता है। तुम बच्चों को भी कहते हैं- ज्ञान की बातों पर खूब विचार करो। (मु.ता. 16.12.68 पृ.3 मध्य)

• विचार-सागर-मंथन करता रहे, स्मृति में लाते रहें तो बहुत फ़ायदा होगा। (मु.ता. 10.10.66 पृ.2 आदि)

• तुम बच्चों की बुद्धि में है; परन्तु प्वॉइण्ट्स खिसक जाती है, पूरी धारणा नहीं करते हैं। अगर एक-2 प्वॉइण्ट भी विचार-सागर-मंथन करते रहें तो ऐसा ना हो। जानवरों में जितना अकल है आजकल के मनुष्यों में भी इतना अकल नहीं है। जानवर(गऊ) खाती है तो ओगारती रहती है। तुमको यह भोजन मिलता है फिर सारा दिन ओगारते नहीं हो। (मु.ता. 10.10.66 पृ.1 आदि)

• कोई-2 को ज्ञान धन देने का शौक होता है। गऊशाला में मनुष्य जाकर गऊओं को घास आदि देते हैं, वो भी पुण्य समझते हैं। बाप तुमको यह ज्ञान घास खिलाते हैं। इन पर विचार-सागर-मंथन करते रहेंगे तो खुशी में रहेंगे और शौक होगा सर्विस का। (मु.ता. 10.10.66 पृ.1 मध्य)

इन महावाक्यों से तो ये स्पष्ट होता है कि मुरलियों का गहन अध्ययन और विचार-सागर-मंथन करने की आवयश्कता है। वो एक आदि आत्मा ही लगातार आत्मिक स्थिति का पुरुषार्थ करते हुए और ज्ञान का सदा मनन-चिन्तन-मंथन करके, गीता-ज्ञान को गीता-ज्ञान अमृत में बदल देती है। जिसने किया, उसी ने रास्ता बताया अन्यथा उससे पहले वाणियों पर कोई भी विचार-सागर-मंथन नहीं करते थे।

• विचार-सागर-मंथन कर रत्न निकालने हैं। <u>बाबा</u> जैसे खुद करते हैं, बच्चों को भी युक्ति बतलाते हैं। (मु.ता. 12.9.75 पृ.2 आदि) मु.ता. 21.3.72 पृ.3 के अंत में बोला है कि "विचार-सागर-मंथन करने का नम्बरवन बच्चा तो यह है ना!" जो ब्रह्मा बाबा नहीं कर सके, न कोई और ब्रह्मा वत्स सन् 1969 तक कर सका; इसलिए सन् 1969 से पहले कभी 'गीता-ज्ञान अमृत' नहीं कहा। अभी (ब्रह्मा बाबा के जीवित रहने तक) गीता ज्ञानामृत नहीं कहेंगे। **• गीता को ज्ञानामृत कहना भी राँग है। भल बाबा ने इतने दिन नहीं कहा। (मु.ता. 6.3.67 पृ.2 मध्य)** जिसको पीकर स्वयं ब्रह्मा ही अमर नहीं बने तो वो किसी और को कैसे बना सकते थे!

बाप/टीचर/सतगुरु (ब्रह्मा बाबा नहीं)

निराकार शिव ने ब्रह्मा तन द्वारा जो वाणी चलाई, उस गीता-ज्ञान को भूलकर जब समस्त ब्राह्मण परिवार देहधारी ब्राह्मण बने धर्मगुरुओं की मतों पर चलने लगा, तो किसी ने भी इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि हम भगवान के आधार पर चल रहे हैं या मरण धर्मा मनुष्य गुरुओं के आधार पर? और न ही किसी में विरोध करने की ताकत थी। परन्तु सर्वप्रथम सन् 1969 में उस सदा शिव के आधार बने एक व्यक्तित्व ने ही बोध कराया-

•एक ईश्वर के मत को ही श्रीमत कहेंगे। (मु.ता. 08.03.73 पृ.1 आदि)

• <u>बाकी सब</u> हैं आसुरी मत देने वाली आसुरी सम्प्रदाय। (मु.ता. 19.05.73 पृ.2 आदि)

• बी.के. की मत मिलती है, सो भी (श्रीमत अर्थात् शिवबाबा की वाणियों से) जाँच करनी होती है कि यह मत राइट है वा राँग है? तुम बच्चों को राइट और राँग समझ भी अभी मिली है। (मु.ता. 27.1.95 पृ.3 मध्य)

शंकर का काम है विनाश करना; सिर्फ़ स्थूल विनाश नहीं, पुरानी धारणाओं, मत-मतान्तरों परम्पराओं का भी विनाश कर देना। इसलिए तथाकथित ब्रह्माकुमार-कुमारियों को ही सर्वोपरि मानने वाले या उनकी मत को ही भगवान की वाणी मानने वाले- ऐसी मतों का खंडन भी वही शंकर वाली आत्मा करती है, जिनका

लौकिक नाम 'दीक्षित' है। इस बात से यह साबित होता है कि उनकी इन्हीं बातों का समस्त आसुरी/कौरव सम्प्रदायों ने विरोध किया और उन्हे सत्य ज्ञान देने से मना कर दिया और बाहुबल का प्रयोग करके वहाँ से निकाल भी दिया। जैसे इतिहास में आचार्य चाणक्य ने जब धनानन्द को सही दिशा बतानी चाही तो उनको मगध से निष्कासित कर दिया; परन्तु फिर भी चाणक्य ने सत्य का साथ नहीं छोड़ा और मगध को चुनौती दी और एक निर्धन शिक्षक ने धनानन्द की सत्ता का ही अंत कर दिया, ऐसे ही उस सदा शिव ज्योति के आधार रूप व्यक्तित्व (दीक्षित) ने भी अपने धर्म को नहीं छोड़ा, समस्त संसार को सत्य का मार्ग बताने के लिए, कौरव संप्रदाय के आगे स्थूल धन से निर्धन होते हुए भी झुके नहीं, सामना किया; लेकिन शिव के ज्ञान-धन से सदा भरपूर किसी के आगे माथा नहीं झुकाया। **• बेगर बनना मासी का घर थोड़े ही है। बेगर के पास तो (धन, पद, मान, मर्तबा) कुछ भी न हो। (मु.ता. 21.1.74 पृ.4 अंत)** जब तक फुल बेगर नहीं बने हैं तब तक फुल प्रिंस नहीं बन सकते। **• तुम सभी सुदामा हो। देते क्या हो? (मुट्ठी चावल) लेते क्या हो? विश्व की बादशाही लेते हो। (मु.ता. 17.2.69 पृ.3 आदि) • बाप है ही गरीब निवाज़। (मु.ता. 7.1.74 पृ.3 मध्य)** गरीबों को ही विश्व की बादशाही देते हैं।

• गाया हुआ है जिन्हों को 3 पैर पृथ्वी के न मिले थे, वे सारे विश्व के मालिक बन गए। मनुष्य थोड़े ही समझते हैं। (मु.ता.1.5.73 पृ.2 मध्यादि) इन महावाक्यों के अनुसार शिवबाप जिसमें प्रवेश करते हैं, वो ज़रूर गरीब होगा। फुल बेगर बनता है फिर वही विश्व का मालिक बनता है; क्योंकि अपनी भूख-प्यास, सुख-सुविधाओं की चिंता न करके शिवबाबा के निमित्त रथ ने सत् शिक्षक बनकर सारी वसुधा को अपना परिवार मानकर सबके कल्याण में लगे रहे। ***"अयं निज: परो वेति, गणना लघु चेतसाम। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम।।"*** आदि ॐ मंडली में बीजारोपण कर बाप का निमित्त मात्र कर्तव्य निभाया, ऐसे ही मध्य में सत् शिक्षक बने और वही अंत में सतगुरु बन सबकी सद्गति करता है, ये तीनों पार्ट एक ही आत्मा के द्वारा चलते हैं जो कि ब्रह्मा बाबा नहीं है। ये ज़रूरी नहीं है कि शिव की प्रवेशता जिसमें हो वो बाप, टीचर, सतगुरु का पार्टधारी हो; क्योंकि ब्रह्मामुख तो पाँच हैं, सभी ब्रह्मामुखों के लिए ये बात नहीं है। धरणी के अनुसार ही बीज फल देता है। ऐसे ही व्यक्तित्व की योग्यता पर ये भी निर्भर करता है। योग्यता सिर्फ़ एक ऊर्ध्वमुखी ब्रह्मा में ही है, जो सदाशिव ज्योति का आदि-मध्य-अंत में भी मुकर्रर आधार है। जिसके प्रमाण मुरलियों में दिए हैं –

• बाप के तो बच्चे बने हो। टीचर रूप में इनसे शिक्षा पा रहे हो। अंत में (साकार) सतगुरू (दलाल) बन तुमको सच खंड में ले जावेंगे। तीनों काम प्रैक्टिकल में करते हैं। (मु.ता. 17.2.73 पृ.1 आदि)

• वहाँ (B.k. में भी) बाप मिला नहीं, टीचर मिला नहीं, फट से गुरू बन गए। यहाँ कितने कायदे का ज्ञान है। यहाँ तुम्हारा बाप, शिक्षक, गुरू एक मैं ही हूँ। (मु.ता. 20.4.72 पृ.2 अंत)

• ऐसा भी कोई नहीं जो कहे कि मैं बाप भी हूँ, टीचर भी हूँ, गुरू भी हूँ। <u>यह ब्रह्मा भी ऐसे नहीं कह सकते।</u> एक शिवबाबा ही <u>कहते</u> हैं- मैं सभी का बाप, टीचर, गुरू हूँ। (मु.ता.19.10.76 पृ.1 मध्यादि)

• यह मूर्ति एक ही है; परंतु है तीनों ही अर्थात् बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं, गुरू भी बनते हैं। (मु.ता. 28.6.84 पृ.1 आदि)

<u>बाप</u>- बाप का कार्य होता है बीजारोपण करना और अंत में वर्सा देना। आदि स्थापना में ज्ञान का बीज प्रजापिता ब्रह्मा ने डाला और अंत में वर्सा देने के लिए अभी ब्रह्मा बाबा साकार शरीर से मौजूद नहीं हैं।

• एक शिवबाबा को याद करना है। वर्सा उनसे मिलना है। माता से वर्सा मिल न सके। माता से जन्म लेते हैं, याद पिता को करना है। (मु.ता. 9.1.73 पृ.3 अंत)

• ब्रह्मा वर्सा देने वाला नहीं है, वह तो लेने वाला है। (मु.ता. 17.1.70 पृ.1 आदि)

• ब्रह्मा से तो कुछ भी मिलने का है नहीं। वर्सा बाप से ही मिलता है इन द्वारा। बाकी ब्रह्मा की कोई वैल्यू नहीं है। (मु.ता.3.2.67 पृ.2 अंत)

• रचना से कब वर्सा नहीं मिल सकता। तुम जानते हो ब्रह्मा से कुछ भी वर्सा नहीं मिल सकता। ब्रह्मा वर्थ नॉट ए पैनी है। (मु.ता. 25.2.67 पृ.1 अंत)

• रचना से वर्सा नहीं मिल सकता, रचना को रचता से वर्सा मिलना है। (मु.ता. 25.6.65 पृ.1 मध्य)

• ब्रह्मा कोई क्रियेटर नहीं है। (साकार सृष्टि का साकार) रचयिता तो एक बाप है। (मु.ता. 5.3.73 पृ.1 मध्य)

• क्रियेटर तो एक ही है। बाकी सभी पढ़ रहे हैं। इसमें यह (ब्रह्मा) भी आ गया। फिर भी रचना हो गए ना! (मु.ता.8.1.68 पृ.2 अंत, 3 आदि)

• शिवबाबा कहते हैं बच्चे, ख्याल रखना वर्सा तुमको हम (दोनों शिवबाप+बाबा) से लेना है, ब्रह्मा से नहीं मिलना है। बिल्कुल नहीं मिलता है। स्वर्ग की राजधानी का वर्सा हम (दोनों बेहद के बाप) से ही मिल सकता है। रचयिता स्वर्ग का मैं हूँ। इसको हैविनली गॉड फादर कहा जाता है। (मु.ता.1.7.73 पृ.1 मध्यांत)

• कोई द्वारा तो वर्सा लेंगे। निराकार से वर्सा कैसे ले सकेंगे! (साकार मु.ता. 27.10.66)

• बाप से हमेशा पूरा वर्सा लेने का पुरुषार्थ करना है। जैसे मम्मा-बाबा भी उस मात-पिता से पूरा (16 कला स्वर्ग का) वर्सा ले रहे हैं। (मु.ता.17.4.73 पृ.4 अंत)

इन महावाक्यों के अनुसार ब्रह्मा बाबा से वर्सा नहीं मिल सकता; क्योंकि ब्रह्मा तो रचना है, वह वर्सा दे नहीं सकता है। वो तो खुद ही वर्सा लेने वाला है, वर्सा तो सिर्फ़ बाप जो आदि में प्रजापिता ब्रह्मा थे, जो फिर दुबारा जन्म लेकर आते हैं, उसके द्वारा मिलता है।

<u>टीचर</u>- टीचर का काम होता है जो भी टेक्स्ट बुक है, उस टेक्स्ट बुक (मुरली या अ.वाणी) का क्लैरिफिकेशन देना। मुरली है हमारी पद्य/कविता और अव्यक्त वाणी है हमारी गद्य/प्रोज। उन दोनों का क्लैरिफिकेशन सुप्रीम सोल जिस तन के द्वारा देता है वो बाप भी है, क्लैरिफिकेशन देने वाला टीचर भी है। शिवबाप ने ब्रह्मा बाबा के द्वारा गीता ज्ञान दिया; परन्तु बेबी बुद्धि ब्रह्मा बाबा का मंथन न चलने के कारण वो ज्ञान अमृत नहीं बन सका; क्योंकि शेरनी का दूध सोने के पात्र में ही ठहरता है। अगर ब्रह्मा बाबा के द्वारा टीचर का पार्ट चला होता तो सन् 1966 में जो घोषणा की गई ***<u>'आने वाले 10 वर्षों में भारत से भ्रष्टाचार और विकारों का अंत होने वाला है और होवनहार विश्वयुद्ध के पश्चात सूर्यवंशी श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण का राज्य शीघ्र ही आने वाला है।'</u>*** इस दस वर्षीय घोषणा में कौन-सा रहस्य है? उस रहस्य को ब्रह्मा बाबा को स्वयं ही समझ जाना चाहिए था; लेकिन नहीं समझ पाए। ब्रह्मा बाबा ने तो यही समझा कि सारी 7 अरब स्थूल दुनिया के विनाश की घोषणा है। **अ.वाणी में बाबा ने बोला है कि "ब्राह्मणों के लिए इतने बड़े विश्व के अंदर अपना ही छोटा-सा संसार है।" (अ.वा. ता.13.6.73 पृ.97 अंत)** इसका मतलब बाबा जो भी बोलते हैं, वो पहले ब्राह्मणों की दुनिया के प्रति ही लागू होता है; लेकिन ब्रह्मा बाबा समझ नहीं पाए। बच्चा बुद्धि होने के कारण ब्रह्मा बाबा ने हद में ले लिया और उस समय की जो लौकिक गवर्मेण्ट थी, उनको मेमोरैंडम लिखकर दे दिया कि सन् 1976 में सारी दुनिया का विनाश हो जाएगा और अगर विनाश नहीं होगा तो ब्राह्मणों की सारी प्रॉपर्टी सरकार की हो जाएगी। **मु.ता.25.7.67 पृ.3 के अंत में भी ये बात आई है कि- "गवर्मेंट को भी कहते हैं- 10 वर्ष के अंदर हम यहाँ दैवी राज्य स्थापन करेंगे। न करें तो आप यह मकान आदि सब ले लेना। लड़ना चाहिए ना। बोलो, दूसरा कोई ऐसा नहीं कहेगा कि हम 10 वर्ष के अंदर यह कार्य न करें तो मकान आपका। तुम लिखत में देते हो तो भी समझते नहीं। ऐसा कोई लिखकर दे न सके। हम तो 5000 ब्राह्मणों की सही लेकर देते हैं।"** जब ब्रह्मा बाबा ही समझ नहीं पाए तो जो भी उस समय के ब्राह्मण बच्चे थे, उन्होंने भी नहीं समझा। सन् 1976 में स्थूल दुनिया का विनाश नहीं हुआ तो बहुत से ब्राह्मण बच्चे अनिश्चयबुद्धि हो गए, जिसके परिणामस्वरूप ब्राह्मणों की दुनिया में विघटन हो गया। इसके लिए बाबा ने मुरली में बोला कि **"हाहाकार के बाद जयजयकार होनी है।" (मु.ता. 1.11.00 पृ.2 मध्य)**

त्रिमूर्ति के जो एक गोले के चित्र में सफेद पोशधारी ब्राह्मण आत्माएँ ही यहाँ आपस में लड़ते-झगड़ते, विघटित होते दिखाई गई हैं। जबकि दूसरी तरफ दूसरे गोले में जो अटल निश्चयबुद्धि आत्माएँ हैं, उनको जयजयकार करते हुए दिखाया गया है।

टीचर तो हमेशा स्ट्रिक्ट होता है। त्रिमूर्ति में ब्रह्मा बाबा लूज़ होकर बैठे हैं। इसका मतलब ब्रह्मा बाबा लूज़ हो जाते थे। भले मुरली में बोल दिया कि 'मकान नहीं बनाना है' **• तुमको तो प्रॉपर्टी कुछ भी बनानी नहीं है। हुक्म नहीं है। (मु.ता. 7.1.67 पृ.1 मध्य)** प्रॉपर्टी बनाकर अभी क्या करेंगे? सभी विनाश हो जावेगी। और ये भी बोल दिया 'शादी बरबादी' मु.ता. 9.3.78 पृ.3 के अंत में बाबा ने बोला है कि **• विकार के लिए शादी बरबादी है। ....आधा कल्प भक्तिमार्ग में विकार के लिए शादी चली। अब संगम पर हैं। अब विकार के लिए शादी करना बरबादी है। परमपिता परमात्मा शिव के साथ सगाई आबादी कर देती है।** लेकिन बाबा से कोई बच्चे आ करके पूछते थे- बाबा बड़ी परेशानी है, हमसे खाना बनाया नहीं जाता है, हमें इतना काम करना पड़ता है और घर में बूढ़ी माता है, तो बाबा (ब्रह्मा माँ) का हृदय द्रवित हो जाता था। अच्छा बच्चे, भल शादी कर लो; लेकिन पवित्र रहकर दिखाना। अरे, शादी करने के बाद पवित्र रहकर दिखा ही दें तो फिर मुरली में बाबा को कहने की दरकार क्या थी कि शादी बरबादी। माना माँ का दिल ऐसा होता है कि वो भावनावादी होने के कारण परमिशन दे देती थी। मुरली की व्याख्या देने वाले टीचर का भी पार्ट ब्रह्मा बाबा के द्वारा नहीं चला।

<u>**सद्‌गुरू**</u>- सद्‌गुरू का काम क्या होता है? सख्त पार्ट बजा करके बच्चों की सद्गति करना। सद्गति दो प्रकार से होती है। पहले सूक्ष्म रूप में मन-बुद्धि की सद्गति, फिर स्थूल रूप में शरीर की सद्गति सम्पन्न होती है। सद्गति सीधी नहीं हो सकती कि एकदम शरीर की भी सद्गति हो जाए, शरीर निरोगी कंचन-काया बन जाए। पहले सूक्ष्म मन-बुद्धि सहित आत्मा की सद्गति होनी चाहिए। मन-बुद्धि की सद्गति की पहचान क्या है? सद्गति की पहचान है कि बुद्धि इस विनाशी दुनिया के आडम्बरों में न रमे, देह और देह के सम्बन्धियों से बुद्धि उपराम होने लगे। कहाँ रमण करे? ज्ञान के मनन-चिंतन में रमण करने में आराम महसूस करे। उसको मनन-चिंतन-मंथन ही अच्छा लगे। ईश्वरीय सेवा की बातों में बुद्धि बिज़ी रहे, परमपिता+परमात्मा की याद में और नई दुनिया की प्लानिंग करने में बुद्धि रमण करती रहे। अगर बुद्धि में दुनियावी संकल्प चल रहे हैं, देह और देह के सम्बन्धियों के संकल्प चल रहे हैं, पेट के दुनियावी धंधा-धोरी के संकल्प चल रहे हैं, तो ऐसी बुद्धि को सद्गति वाली मन-बुद्धि नहीं कहा जाएगा। वो आत्मा सद्गति की ओर नहीं है। अगर मनन-चिंतन-मंथन बुद्धि में नहीं चलता, तो समझ लो आत्मा अभी रोगी है, सद्गति पाने वाली नहीं। सद्‌गुरु का पार्ट सूक्ष्म शरीरी ब्रह्मा के द्वारा नहीं कह सकते हैं। सद्गति करने के लिए ज़रूर मुकर्रर साकार रथ में आना पड़े, जिस साकार के द्वारा ब्रह्मा बाबा की भी सद्गति होती है जिसके प्रमाण मुरलियों में दिए हैं -

• स्वर्ग का रचयिता कोई ब्रह्मा को नहीं कहा जाता। वास्तव में तुम्हारा गुरू ब्रह्मा नहीं है। (दलाल) सतगुरू है ही एक। यह ब्रह्मा भी उनसे सीख रहा है। ऐसे नहीं कि वो (ब्रह्मा) सीखकर मर जावेगा तो हम गद्दी पर बैठेंगे। नहीं, ऐसे होता नहीं। सतगुरू एक ही सतगुरू है। हम सब उनसे सीखकर और सद्गति को पाते हैं। (मु.ता. 25.7.65 पृ.2 अंत)

• सद्‌गुरू तो एक ही है। ब्रह्मा का भी गुरू <u>वह</u> हो गया। (मु.ता. 4.9.72 पृ.3 अंत)

• यह मात-पिता, ब्रह्मा-सरस्वती दोनों कल्पवृक्ष के नीचे बैठे हैं, राजयोग सीख रहे हैं। तो ज़रूर उन्हों के गुरू चाहिए। (मु.ता. 28.1.73 पृ.2 मध्यादि)

• ब्रह्मा को भी पावन बनाने वाला वह एक (दलाल) सतगुरू है। सत बाबा, सत टीचर, सतगुरू तीनों इकट्ठे हैं। (मु.ता. 25.9.73 पृ.2 अंत)

• देहधारी नम्बरवन है कृष्ण। उनको बाप,टीचर, सतगुरु नहीं कह सकते। (मु.ता.19.12.74 पृ.1 मध्य)

इन महावाक्यों से भी यही साबित होता है कि ब्रह्मा बाबा बाप, टीचर और सद्‌गुरु तीनों ही नहीं हैं; ये तीनों पार्ट कोई स्ट्रिक्ट पार्टधारी के ही हो सकते हैं, जिसको त्रिमूर्ति के चित्र में कड़क बैठक में दिखाया है जो श्रीमत में कभी लूज़ नहीं होता है इसलिए बैठक भी ऐसी दिखाई है । जबकि ब्रह्मा को चित्रों में लूज़ बैठे ही दिखाया है। जैसे पार्ट बजाते हैं, यादगार चित्र भी वैसे ही बनते हैं। ये बाप-टीचर-गुरु का पार्ट कोई तीन व्यक्तियों के नहीं हैं, एक ही व्यक्तित्व के हैं। ये एक ही व्यक्तित्व (दीक्षित) है, जो ये तीनों पार्ट बजाता है।

• यह मूर्ति एक ही है; परंतु हैं तीनों ही अर्थात् बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं, गुरू भी बनते हैं। (मु.ता. 28.6.84 पृ.1 आदि)

• जब इसमें प्रवेश करता हूँ तब प्रवृत्ति वाला (विष्णु) बन जाता हूँ। मुझे ही सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम गुरु भी कहते हैं। (मु.ता.30.11.96 पृ.1 मध्य)

पहली मूर्ति जगदम्बा ही सारे 7 अरब मनुष्यों की प्रैक्टिकल ब्रह्मा है

एडवांस पार्टी के फाउण्डेशन डालने के बाद उस व्यक्तित्व की पहले-2 माता के रूप में सहयोगी वही जगदम्बा बनती है। आदि ब्रह्मा जो वास्तव में ब्रह्मा का पार्टधारी है; क्योंकि ब्रह्मा का अर्थ है- बड़ी+माँ। ब्रह्मा बाबा के द्वारा शिवबाप ने माँ का पार्ट तो बजाया; परन्तु पुरुष तन होने के कारण कन्या-माताओं की संभाल के लिए ॐ राधे मम्मा निमित्त बनी ; इसलिए ब्रह्मा-सरस्वती को मात-पिता नहीं कहेंगे।

• सरस्वती है ब्रह्मा-मुख वंशावली। वह कोई ब्रह्मा की युगल नहीं है। ब्रह्मा की बेटी है। उनको फिर जगदम्बा क्यों कहते हैं; क्योंकि यह मेल हैं ना! तो माताओं की संभाल के लिए उनको रखा है। ब्रह्मा मुखवंशावली सरस्वती तो ब्रह्मा की बेटी हो गई। (मु.ता. 26.10.83 पृ.2 मध्यांत)

• (अभी) मम्मा तो जवान है। ब्रह्मा तो बूढ़ा है। सरस्वती जवान ब्रह्मा की स्त्री शोभती भी नहीं। हाफ पार्टनर कहला न सके। (मु.ता.4.11.73 पृ.3 आदि)

यज्ञ के आदि में जिस माता ने प्रजापिता ब्रह्मा को दादा लेखराज के साक्षात्कारों को सुनाया था, उस समय शिव की प्रवेशता उसी माता में भी होती है, जिस कारण वो आदि ब्रह्मा हुई। वही माता सम्पूर्ण सूर्यवंशी ब्राह्मण वर्ण की आदि स्थापना में निमित्त बनती है; परन्तु सन् 1947 तक वो भी शरीर छोड़ देती है। फिर उसी आत्मा का जन्म सन् 1966 में दिल्ली के एक पंजाबी ब्राह्मण परिवार में हुआ, जिनका लौकिक नाम 'कमला देवी दीक्षित' है। अव्यक्त बापदादा ने उनका नाम लेकर जिक्र भी किया है- **• सभी के दिलों पर विजय किन गुणों से पहन सकते हो? सभी को सन्तुष्ट करना। बाप में यह विशेष गुण था। वही फॉलो करना है। <u>कमला</u> तुम किस लिस्ट में हो- मधुबन की लिस्ट में हो या (सारी दुनिया की) ऑलराउण्डर की लिस्ट में हो? एक है हद की लिस्ट, दूसरी है बेहद (7अरब) की लिस्ट। (अ.वा.ता. 9.11.69 पृ.137 मध्य)** वह सन् 1983-84 में एडवांस सच्ची गीता-ज्ञान-यज्ञ में आकर समर्पित हो जाती है। **• पंजाब की धरनी (होशियारपुर) कन्या दान में श्रेष्ठ निकली अर्थात् महादानी निकली। (अ.वा.ता.19.12.78 पृ.137 मध्य) अव्यक्त-वाणी ता. 21.3.81 पृ.80 के मध्य में बोला– • अभी तेरहवें में तेरा ही होना चाहिए ना!** जगत्पिता राम वाली आत्मा सन् 1969 में ज्ञान में आती है और 1981 तक 13 साल हो जाते हैं। वाणी सन् 1981 की है, इसलिए बोला है 13 साल हो गए हैं तो कोई तेरा होना चाहिए न! वही बड़ी माता जगत्पिता के साथ यज्ञ स्थापना के कार्य में पुनः प्रैक्टिकल में निमित्त बनती है, **• (7-7 ½ अरब का) पिता है तो माता भी ज़रूर (साकार में) होनी चाहिए, नहीं तो बाप क्रियेट कैसे करें? (मु.ता. 20.10.73 पृ.1 मध्य)** ये ब्रह्मा-सरस्वती के लिए नहीं बोला है; क्योंकि वो तो मम्मा-बाबा हैं ही नहीं। **• ब्रह्मा-सरस्वती भी वास्तव में मम्मा-बाबा नहीं हैं। (मु.ता.31.3.72 पृ.1 मध्य)** असल सब धर्मवंशियों के मात-पिता हैं जगत्पिता और जगदम्बा। जो आदि स्थापना में थे, वही फिर वर्तमान में मौजूद हैं –

• जगतअम्बा जगत पिता होकर गए हैं। इस समय फिर तुम आकर उनके बने हो फिर से हिस्ट्री जाग्राफी रिपीट हो रही है। (मु.ता. 18.4.92 पृ.1 मध्य)

• यह जगदम्बा चैतन्य में थी। जिसका भी जड़ यादगार है। (मु.ता. 15.9.73 पृ.3 मध्य)

• 'तुम मात-पिता' किसको कहा जाता है। विचार की बात है ना। ब्रह्मा द्वारा एडॉप्ट करते हैं। फिर माँ भी ज़रूर चाहिए। तो जो अनन्य बच्ची होती है, ड्रामा प्लैन अनुसार उनको जगत अम्बा का टाइटिल दिया जाता है। मेल (ब्रह्मा बाबा) को जगत अम्बा नहीं कह सकेंगे। इनको जगतपिता कहेंगे। इनका प्रजापिता नाम मशहूर है। अच्छा (5 अरब) प्रजा (की) माता कहाँ? तो एडॉप्ट किया जाता है माता को। आदिदेव तो है फिर आदिदेवी को मुकर्रर किया जाता है। जगत अम्बा तो एक ही है- उनकी ही महिमा है। जगतअम्बा के मन्दिर बनाए हैं। जगतअम्बा पर कितना मेला लगता है।....जगतअम्बा का मन्दिर है। शक्ल अलग-2 है। काली की शक्ल अलग, जगत अम्बा है कौन? यह कोई नहीं जानते। उनको भी (भगवान की) भगवती कहते हैं। अब जगत अम्बा को भगवती नहीं कह सकते। वह तो (ब्रह्मा की बेटी, अंतिम बाला) ब्राह्मणी है। ज्ञान-ज्ञानेश्वरी है। उनको बाप से ज्ञान मिला है। (मु.ता. 18.5.91 पृ.2 मध्यादि)

• जगदम्बा की महिमा तो भारत में बहुत है । जगदम्बा को भारतवासियों के सिवाय और कोई जानते नहीं। नाम सुना है, जिसको ईव अथवा बीबी भी कहते हैं। अब तुम बच्चों की बुद्धि में है कि बीबी और मालिक माता के सिवाय रचना तो रची नहीं जा सकती। जरूर जगदम्बा को प्रगट होना पड़े। जरूर थी तब तो गायन करते हैं। भारत की महिमा बहुत भारी है। (मु.ता.30.12.73 पृ.1 आदि)

सारे जगत की पालना करने वाली जगदम्बा बनती है और दादा लेखराज (ज्ञान-चंद्रमा ब्रह्मा) जिन्होंने बीच में ही शरीर छोड़ दिया, वो बड़ी माँ में प्रवेश करते हैं; इसलिए जगदम्बा के स्त्री चोले के रूप में उनकी पूजा होती है। पुरुष चोलाधारी ब्रह्मा की पूजा, यादगार पुष्कर के ब्राह्मणों के सिवाय सभी नहीं करते हैं; लेकिन जगदम्बा में प्रवेश करने के कारण उनकी पूजा होती है। वही जगदम्बा महाकाली बनती है तो उनके मस्तक पर ज्ञान-चंद्रमा के प्रवेश होने की यादगार अर्ध चंद्रमा दिखाते हैं।

• चन्द्रमा अर्थात् बड़ी माँ ब्रह्मा को कहा जाता है। (अ.वा.ता. 22.6.77 पृ.271 अंत)

• जगदम्बा तो है ही चन्द्रमा। (अ.वा.ता. 18.1.85 पृ.134 अंत)

• माता-गुरु तो मशहूर है। यह है डीटी धर्म की पहली माता, जिसको जगदम्बा कहते हैं। (मु.ता. 30.12.05 पृ.3 मध्य) आदि स्थापना में बाप के साथ निमित्त बनती है।

• तुम्हारी बड़ी मम्मी ब्रह्मा है; परंतु कई बच्चों ने पूरा नहीं पहचाना है। अभी अजन पहचानते रहते हैं। (मु.ता. 1.5.73 पृ.2 आदि) ब्रह्मा बाबा और ॐ राधे मम्मा को तो सभी जानते थे; परन्तु असली जगदम्बा को एडवांस ग्रुप में आने वाली आत्माओं ने ही पहचाना।

• बेहद के भी (मेल रूप में) दो बाप हैं तो (फीमेल) माँ भी ज़रूर दो होंगी। एक जगत+अम्बा माँ, दूसरी यह (33 करोड़ की ब्रह्मा) भी (छोटी) माता ठहरी। (मु.ता. 10.2.73 पृ.1 आदि)

• यह दादा मम्मी भी है। वह बाप तो अलग है। ...परंतु यह मेल होने कारण फिर माता मुकर्रर की जाती है। (मु.ता. 19.1.75 पृ.1 मध्यादि)

• जो होकर जाते हैं, उनकी महिमा गाई जाती है। ... जिसको जगतअम्बा कहते हैं, वो अपने बच्चों के सम्मुख बैठी है। (मु.ता. 15.10.73 पृ.1 आदि) अर्थात् पास्ट में कोई जगदम्बा वाली आत्मा थी, जिसकी ही महिमा है और अभी वह दुबारा अपने बीजरूप बच्चों के सन्मुख है, ना कि सभी ब्रह्मा वत्सों के।

• भारत में कुमारियों की बहुत मान्यता है। ...जगदम्बा भी कुमारी है न! कुमारी को जगदम्बा कहना इसका भी अर्थ चाहिए न! जगदम्बा (है) तो (सारे जगत का) जगतपिता भी चाहिए। (मु.ता.17.8.73 पृ.1 अंत, 2 आदि)

ब्रह्मा बाबा को तो कुमारी नहीं कह सकते हैं, वो तो पुरुष तन थे और जगदम्बा है तो अंडरस्टुड है कि जगत्पिता भी है, अर्थात् दोनों प्रैक्टिकल में मौजूद हैं।

• माता तू है सबकी (7 अरब की) भाग्यविधाता... गीत तो है पास्ट का। ऐसे जगतअम्बा थी। बरोबर उसने (सारे जगत का) सौभाग्य बनाया। जिसके मन्दिर भी हैं; परन्तु वह कौन थी, कैसे आई, भाग्य कौन-सा बनाया, कुछ भी नहीं जानते। तो इस पढ़ाई और उस पढ़ाई में रात-दिन का फ़र्क है। (मु. ता.27.2.88 पृ.1 मध्य)

• यह गुप्त मम्मा अलग है- इस राज़ को तो कोई मुश्किल समझ और समझा सके। उस मम्मा का नाम अलग है। (यादगार) मन्दिर उनके हैं। (इन मम्मा-बाबा के नहीं।) (मु. ता.17.11.77 पृ.3 मध्य) ज़रूर कोई माता है जो अभी गुप्त है, जिसकी पूजा भक्तिमार्ग में की जाती है।

ऊपर दिए गए महावाक्यों से यह साबित होता है- ब्रह्मा बाबा के द्वारा शिव ने माँ का पार्ट बजाया इसलिए उनको जगदम्बा या ब्रह्मा कहा जाता है; परन्तु तन पुरुष का होने के कारण उस समय भी ॐ राधे (मम्मा) पालना के लिए निमित्त बनी और अभी साकार शरीर से वो मौजूद नहीं है और यज्ञ के आदि में भी माता के रूप में उन्होंने पालना नहीं की; क्योंकि उनको भी ड्रिल कराने वाली कोई और दो माताएँ थीं। उस आदि ॐ मंडली के समय जिस जगदम्बा ने ब्रह्मा अर्थात् बड़ी माँ बनकर पालना की, वो 'आदि सो अंत' के नियमानुसार अंत में दुबारा भी ब्राह्मणों की पालना के निमित्त बनती है, जो स्वर्ग के द्वार खोलने के लिए प्रैक्टिकल में निमित्त भी बनती है और जिसके द्वारा ही वर्सा मिलता है, न कि ब्रह्मा बाबा के द्वारा। उनके लिए तो बोला है- वो तो दादा है।

• बोलो- (अपूर्ण) ब्रह्मा कोई हमारा गुरू आदि कुछ भी नहीं है। वो तो दादा है, बाबा भी नहीं है। बाबा से तो वर्सा मिलता है, ब्रह्मा से थोड़े ही वर्सा मिलता है। (मु.ता. 3.2.67 पृ.2 अंत)

• बाप खुद आकर ब्रह्मा तन से स्वर्ग स्थापन करते हैं। (मु.ता. 24.1.70 पृ.2 अंत) (मु.ता. 21.1.75 पृ.2 अंत)

इसलिए त्रिमूर्ति के चित्र में उस ब्रह्मा की असली और प्रैक्टिकल चैतन्य मूर्ति दिखाई गई है, जिसने यज्ञ के आदि और अंत में भी बड़ी माँ/ब्रह्मा का पार्ट बजाया है और अभी भी साकार में मौजूद है। जिस जगद्+अम्बा की भक्तिमार्गीय यादगार में आज भी पूजा होती है। मंदिर और मूर्तियाँ भी बनती हैं। भल इस समय वह यज्ञ में मौजूद नहीं, जिसका कारण यह है कि दादा लेखराज ज्ञान-चन्द्रमा ब्रह्मा जिसमें शिव की टेम्परररी प्रवेशता होती थी, उन्होंने कभी भी संघर्ष का जीवन नहीं व्यतीत किया, न ही उनमें वो ताकत थी; इसलिए जब संघर्ष का समय आया तो वो बिना किसी को बताए अकेले ही सिंध से कराची भाग गए, यज्ञपिता का साथ छोड़ दिया।

• तुम भागे थे ना! सिंध से कराची में गए। (मु.ता. 24.7.70 पृ.2 आदि) ऐसे ही सन् 1998 में जब आ.वि.वि. पर बड़ी विपत्ति आई तो जगदम्बा अर्थात् बड़ी माँ भी जगत्पिता को छोड़कर यज्ञ से चली गई। ज्ञान-चन्द्रमा ब्रह्मा की प्रवेशता का प्रभाव उस शरीरधारी जगदम्बा (चन्द्रभाला महाकाली) पर पड़ता है। जगदम्बा के दो रूप प्रसिद्ध हैं- एक गौरी और एक महाकाली। जब तक जगत्पिता के सम्पर्क में थी, जिस पिता ने अपनी एड़ी से चोटी की सारी ताकत लगाकर उसे जगदम्बा बनाया, तब तक वह दुर्गुणों को दूर करने वाली दुर्गा थी। **• माँ को भी जगद अम्बा बनाने वाला फिर भी तो कोई और है। जन्म देने वाला तो ज़रूर कोई और है। तो ऐसी माँ को भी जन्म किसने दिया? कहेंगे पतित-पावन परमपिता परमात्मा शिव ने दिया। (साकार मु.ता. 23.9.64)** वही आत्मा जब जगत्पिता से दूर होती है, शरीर से भल दूर होती है; परन्तु मन से सदा उसकी ही स्मृति में रहती है। इसलिए महाकाली के मस्तक पर शंकर का चित्र (त्रिनेत्र भी) दिखाते हैं; क्योंकि जिससे पहला-2 सुख मिलता है, याद उसी को किया जाता है और वह आत्मा भी जानती है- इस संसार में सबसे जास्ती सुख एक शिवबाबा के अलावा और कोई दे नहीं सकता है। सबसे जास्ती संग लेने के कारण वो याद आत्मा में भर जाती है; इसलिए सबसे बड़ा मेला भक्तिमार्ग में जगदम्बा का ही लगता है; लेकिन लगातार आसुरी प्रवृत्ति के बच्चों के संग में आने के कारण अपने को ज़्यादा शक्तिशाली समझने लगती है और अपने पति की शक्ति को ही भूल जाती है कि वो तो महाकाल है और उनकी ही छाती पर पाँव रख देती है अर्थात् अपने बुद्धि रूपी पाँव से उनके प्रभाव को कम कर देती है। आखरीन जब स्मृति आती है तो पश्चाताप के कारण जीभ बाहर आ जाती है, जो चित्रों में यादगार बनी है। यही परम्परा आज भी चली आ रही है- अभी बच्चों की देवताई पैदाइश नहीं हो रही है, सभी आसुरी ब्राह्मण रावण की प्रवृत्ति जैसे बच्चे जन्म ले रहे हैं। जो पिता के रहते हुए भी या पिता कारणे-अकारणे शरीर छोड़ दे तो

माता के ऊपर हावी हो जाते हैं और माता भी मोह में आने के कारण पति से अधिक बच्चों को ही महत्व देने लगती है। आसुरी प्रवृत्ति के बच्चे माता के प्यार का नाजायज़ फ़ायदा उठाते हैं। धरणी माता इसी प्रकार सहन करते-2 फिर बाद में ज्वालामुखी का विकराल रूप धारण करती है, जिसका परिणाम हम आज भी देखते हैं- भूकंप और प्राकृतिक आपदाएँ होती हैं, जो द्वैतवादी दैत्यों के द्वापुर-कलियुग से शुरू हुई हैं। (स्वर्गीय) कृत-त्रेतायुग में ऐसा कुछ नहीं होता है। ऐसे ही जगदम्बा भी पहले दुर्गा या सौम्य रूप शीतला देवी होती है, वही फिर चंडिका या महाकाली बन उन्हीं आसुरी प्रवृत्ति वाले बच्चों का बेहद में अंत करने के निमित्त बनती है।

शंकर का वर्तमान प्रैक्टिकल पार्ट

सदाशिव के आधार बने व्यक्तित्व जगत्पिता कभी किसी सहारे के आधार पर नहीं रहे। चाहे विशेष सहयोगी शिवबाबा की अष्टमूर्तियाँ भी साथ नहीं रहीं, जैसे आदि में हुआ था वो अंत में भी होता है, तो भी वो सदा अल्फ के समान खड़े रहे। राज्यसत्ताधीशों और धर्मसत्ताधीशों की ताकत के आगे सभी झुक जाते हैं, चाहे अज्ञानी हों या बी.केज़ या फिर पी.बी.केज़ ही क्यों ना हों, वो भी संशय में आ जाते हैं; परन्तु उस व्यक्तित्व (दीक्षित) ने सदाशिव ज्योति शिवबाबा की मुरली रूपी सच्ची गीता विधान को सर्वोपरि माना। उसके आगे कितनी भी बड़ी संसार की शक्ति हो; परंतु फिर भी सन् 1969 से लेकर अभी तक झुके नहीं और न भविष्य में कभी झुकेंगे। जैसे अकबर महान तो कहा जाता था, जिसके आगे समस्त भारत, सारे विश्व के इतिहासकार झुक गए; लेकिन महाराणा प्रताप नहीं झुके, ऐसे ही वे सदा श्रीमत के मार्ग पर चलते और सभी को उसी मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया (सम्पूर्ण चरित्र को 'एक अद्‌भुत जीवन कहानी' में देख सकते हैं) • **कितना भी सहन करना पड़े, सामना करना पड़े; लेकिन प्रतिज्ञा को पूरा करना ही है। ऐसी प्रतिज्ञा की है। भला सारे विश्व की आत्माएँ मिलकर भी प्रतिज्ञा से हटाने की कोशिश करें तो भी प्रतिज्ञा से नहीं हटेंगे; लेकिन सामना करके सम्पूर्ण बन करके ही दिखाएँगे। ऐसी प्रतिज्ञा करने वालों का यादगार बना हुआ है अचलघर। (अ.वा.ता. 18.3.71 पृ.49 अंत)** उसका ही गायन शास्त्रों में है- सत्य नारायण, सत्य हरिश्चंद्र, 'राम नाम सत्य है, 'सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्'। सत्य कोई अनेक नहीं होते हैं, सत्य एक ही है, जिसके ही अलग-2 नाम दे दिए हैं। जैसे मरते समय नारायण का जाप करते हैं, मरने के बाद पार्थिव शरीर को ले जाते समय राम नाम सत्य कहते हैं और ले जाते हैं श्मशान में, जहाँ महादेव रहते हैं, न कि कृष्ण अर्थात् जब अंतिम समय आता है तो सभी उस राम नाम सत्य को याद करते हैं; क्योंकि एक सुप्रीम शिक्षक शिवबाबा ही संसार को सही दिशा दे सकता है। • **मनुष्य जब कोई मरते हैं तो उनको कहते हैं राम-राम कहो। पिछाड़ी में उठाने समय कहते हैं- राम नाम सत्य है। यह भगवान को ही सत्य कहते हैं। अर्थात परमपिता परमात्मा जो सत है, उसका ही नाम लेना चाहिए। उसको राम कह देते हैं। माला भी राम-राम कह सिमरते हैं। राम की धुनी ऐसे लगाते हैं जैसे सरन्दा बजता है। (मु.ता. 28.8.73 पृ.1 मध्य)**

इसलिए भगवान भी सत् शिक्षक बनकर ज्ञान दे रहे हैं। जगतगुरु भी शिवबाबा को ही कहा जाता है। वो चमत्कार नहीं करते हैं; क्योंकि भगवान कभी प्रकृति के नियमों को नहीं तोड़ता है; इसलिए महाभारत के समय भगवान को गीता-ज्ञान देते हुए बताया है, जैसे स्थूल जल स्वच्छ करता है, वैसे ज्ञान-जल भी मन-बुद्धि रूपी आत्मा को शुद्ध करता है।

"ॐ असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय।" (बृहदारण्यक उपनिषद)

वही सदाशिव निराकार ज्योति का साकार आधार, गीता-ज्ञान अमृत के द्वारा हम सभी सोयी/मुर्दा हुई आत्माओं को जगा रहा है और ज्ञान का प्रकाश दे रहा है; क्योंकि भगवान को जानने के लिए ज्ञान का तीसरा नेत्र चाहिए; इन स्थूल आँखों से उसे नहीं देखा जा सकता है।

न तु मां शक्यसे द्रष्टुं अनेन एव स्वचक्षुषा।

दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगं ऐश्वरं।।" (11/8 गीता)

ज्ञान के तीसरे नेत्र से ही भगवान की पहचान हो सकती है। वो ज्ञान-नेत्र शिव भगवान ही आकर देता है, अन्यथा अज्ञान फैलाने वाले, दुर्गति करने वाले गुरु आज अनेक हैं, जो दीवार बनकर खड़े हो गए हैं। सूर्य को विकारी राहु राक्षस का ग्रहण लगने पर ऐसा समझते हैं; किन्तु सूर्य तो आग का गोला है, उसको ग्रहण नहीं लगता है; लेकिन धर्मगुरुओं ने अपना मान-मर्तबा बढ़ाने के लिए सभी की बुद्धि को ग्रहण लगा दिया है। • **बाबा**

कहते अभी झूठे भगवान कहलाने वाले भी इतने निकल पड़े हैं जो सच्चे बाबा को दबा देते हैं। (मु.ता. 9.1.62 पृ.2 अंत) क्योंकि ज्ञान से सामना तो नहीं कर सके, तो साम,दाम,दंड,भेद सभी नीतियाँ अपना कर ग्लानि का रास्ता अपना लिया...मुरली में भी बोला है- **"शिव पर भी झूठ कलंक लगाए हैं। (विषभरी नशीली चीज़) धतूरा खाता था। कितनी ग्लानि करते हैं। ऐसे मूर्ख बुद्धि मनुष्यों का विनाश हो जावेगा और जो तुम सुज्ञान बनते हो उनको बादशाही मिलेगी।" (मु.ता. 4.11.78 पृ.3 मध्य)**

• सबसे जास्ती गाली खाने वाला है शिवबाबा नम्बरवन। सेकण्ड नम्बर में गाली खाने वाला है ब्रह्मा। (परम) (मु.ता. 24.12.73 पृ.2 मध्यादि)

ग्लानि तो संसार में सभी धर्मपिताओं की भी हुई है, जिन्होंने भी सत्य का साथ दिया है। जेल भी बहुतों को जाना पड़ा; जैसे- सुभाषचन्द्र बोस, रानी लक्ष्मीबाई, महात्मा गाँधी, भगत सिंह, मंगलपांडे इत्यादि। स्वयं कलाबद्ध कृष्ण भगवान जिसे समझा गया, उनका जन्म भी जेल में हुआ । धर्म के धक्के भी तो सभी धर्मपिताओं ने खाए हैं। भस्मासुर से बचने के लिए तो भगवान को भी भागना पड़ा था। राम ने भी रावण से सीधा युद्ध नहीं किया, जंगलों में वास करना पड़ा। कृष्ण भी कंसी, जरासिन्धी से बच-2 कर गाँव-गाँव में भागते रहे और शिशुपाल के 100 अपराधों को भी क्षमा करते रहे। **• देखो पहाड़ पर जाते हैं एवरेस्ट पर, कितने तूफान लगते हैं! बहुत ऊपर जा करके देखते हैं कि बहुत नुकसान, नीचे थोड़ा उतर आते हैं। पीछे वायुमण्डल अच्छा देख करके फिर चढ़ाई चढ़ते हैं।...... वो जब देखते हैं कि ऊपर में चढ़ने से ये बड़ा खौफनाक है और थोड़ा ठहर जाएँ, (जैसे मिडिया आदि द्वारा बिगड़ा हुआ) क्लाईमेट(वायुमण्डल) ठीक नहीं देखने में आती है, तो नीचे थोड़ा (अंडरग्राउंड में या गुप्त गुफा में) उतर आएगा। देखेंगे वायुमण्डल अभी ठीक है, फिर शुरू करेगा। तो ये भी ऐसे है। (साकार मु.ता. 18.5.67)** पहाड़ पर जब चढ़ते हैं यदि तूफान आता है तो शैल्टर लिया जाता है; पर चढ़ना नहीं छोड़ते हैं। बाप का पार्ट अभी गुप्त रूप में चल रहा है। मुरली में बोला भी है-

• गुप्तवेश में शांतिधाम-सुखधाम की स्थापना हो रही है। (मु.ता. 20.9.77 पृ.2 आदि)

• ब्रह्मा बाप गुप्त रूप में कार्य करा रहा है। अलग नहीं है, साथ ही है, सिर्फ़ गुप्त रूप में करा रहा है। (अ.वा.ता. 18.1.99 पृ.42 मध्य)

• बाप कहते हैं- मुझे गुप्त ही रहने दो, इसमें बड़ा मज़ा है। (मु.ता. 25.9.72 पृ.1 आदि)

संसार में जब सभी ग्लानि करते हैं तो ग्लानि को सुनकर बच्चे सेवा करना छोड़ देते हैं; परन्तु वो आत्मा अपना ईश्वरीय कार्य नहीं छोड़ती, दुनिया ग्लानि करती है और वो शिवबाबा का ज्ञान प्रतिदिन देती ही रहती है। अभी भी ब्रह्माकुमारियों/पुलिस/प्रशासन/सी.बी.आई का दबाव होते हुए भी उनके सामने चट्टान के समान चुनौती बनकर खड़ी है। यह ताकत कोई भी व्यक्ति/धर्मगुरुओं में भी नहीं है। इतने गुरु हुए, जिन्होंने ज्ञान दिया; परन्तु सत्य गुरु नहीं होने के कारण वो अंत तक टिके नहीं। सारे संसार में ग्लानि होती है, पराये तो पराये होते हैं; परन्तु अपने भी संशय में आने लगते हैं। फिर भी वो आत्मा अपनी स्थिति से नीचे नहीं आती है, उस पर उनका असर नहीं होता है।

• फकीर से अमीर (विश्व के बादशाह) बनेंगे। अंदर में यह मस्ती चढ़ी हुई है। इसलिए मस्त कलंकीधर कहते हैं। (मु.ता. 28.2.68 पृ.1 अंत, पृ.2 आदि)

• अख़बारों में भूँ-2 करते रहते हैं। करने दो। तुम कुछ भी न करो। नहीं तो फिर (और) ही जास्ती भूँ-2 करेंगे। गाया हुआ है- कलंकीधर पिछाड़ी कुत्ते भौंकते हैं। तुम अब कलंकीधर बन रहे हो। पतित मनुष्य तुम्हारे पीछे भौंकेंगे; क्योंकि नई बात है। (मु.ता. 26.6.72 पृ.4 अंत)

हर धर्मपिता ने अपना कार्य 100 वर्ष में पूरा किया, ऐसे ही सत्य सनातन धर्म की पूरी स्थापना भी ज़रूर 100 वर्ष (1937 से 2038) के अंदर ही पूरी होगी। अभी ज़्यादा समय नहीं है; इसलिए ग्लानि को देखकर डरना नहीं है। आज ग्लानि हुई है तो कल गायन भी होगा; क्योंकि 'सदा एकसा समय किसी का सुना और ना देखा है।' **• विघ्न कितने भी आये उन खिटपिट से पास होकर अपनी राजधानी तो स्थापन करनी ही है।**

(मु.ता.16.06.87 पृ.3 मध्य) लेकिन जब प्रत्यक्षता होगी तो सभी को समान रूप से नहीं, बल्कि अपनी-2 भावना के अनुसार ही बाप को देख पाएँगे। अव्यक्त-वाणी और मुरली में बोला भी है-

• जैसी-जैसी स्मृति रहेगी, वैसा स्वरूप अपने को महसूस करेंगे। (अ.वा.ता. 30.5.71 पृ.86 मध्य)

• जिस रूप में देखा हुआ होगा, वही सा. होगा। (रात्रि मु.ता. 10.4.68 पृ.3 अंत)

• बाबा ने समझाया है- जो जिस भावना से जिसकी भक्ति करते हैं, वह भावना पूरी करने लिए मैं सा. करा देता हूँ। (मु.ता. 30.7.65 पृ.2 मध्य)

शास्त्रों में दिखाया भी है– जब कृष्ण मथुरा आए तो सभी प्रजाजन ने अपनी-2 भावना के अनुसार देखा (पति,पिता,योद्धा,बच्चा या परमेश्वर के रूप में); लेकिन मथुरा का राजा मूर्ख कामी कंस, राजा होते हुए भी सिर्फ़ यमराज रूप को ही देख सका; क्योंकि बोला है-***"जाकी रही भावना जैसी,प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।"*** (रामायण) भावना के आधार पर ही प्राप्ति होगी।

• आदिपिता (आदम) को पाना- यह है भाग्य की श्रेष्ठ निशानी। (अ.वा.ता. 25.12.82 पृ.9 अंत)

सर्वसाधारण मानव-तन में आए भगवान को पहचानना कठिन नहीं है। दुनिया में भल अनेक धर्म हैं, अनेक मठ-पंथ, संप्रदाय और गुरु हैं; परन्तु ये सभी शास्त्रों का रटा-रटाया ही सुनाते हैं, जिसका कोई ऐतिहासिक पक्का प्रमाण नहीं; लेकिन एक ही ऐसे व्यक्तित्व द्वारा निराकार शिव भगवान भारत भूमि (उत्तर प्रदेश-काम्पिल्यनगर) में अवतरित हुए हैं, जिसने सही गीता-ज्ञान दिया, जो प्रूफ/प्रमाण और अर्थ सहित है। उन्होंने ही अंधश्रद्धा और अन्धविश्वास का खंडन किया। सिर्फ़ आत्मा का नहीं; अपितु आत्मा के पिता की भी प्रैक्टिकल रूप में पहचान दी। इस सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान दिया। अनेक तिनकों/पगडंडियों (धर्मगुरु) में फँसे हुए लोगों को गीता अनुसार **"सर्वधर्मान् परित्यज्य" (गीता 18/66)** का रास्ता बताकर एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा, एक मत की स्थापना का ज्ञान दिया। यह भी बताया कि निराकार भगवान शिव साकार मूर्तिमान तन में आकर कार्य करता है, सिर्फ़ निराकार आत्मा भी कुछ नहीं कर सकती है। जैसे प्रैक्टिकल रूप में पार्ट बजाने के लिए साकार शरीर और निराकार आत्मा को अलग नहीं किया जा सकता है; इसलिए कहते हैं- ***"सगुनहिं अगुनहिं नहिं कछु भेदा" (रामायण)*** सगुण साकार और निराकार दोनों में कोई भेद नहीं है और दोनों ही दुखों को हरने वाले है| सभी धर्मपिताओं ने आकर धर्म स्थापन तो किया; परन्तु किसी ने भी राजधानी स्थापन नहीं की, न ही राजाई का ज्ञान किसी धर्मपिता या गुरुओं ने दिया; क्योंकि सभी आधीन ही बनाते हैं। ये स्वाधीन राजा बनने का ज्ञान सिर्फ़ उस एक व्यक्तित्व के द्वारा सदाशिव ज्योति ने बताया कि स्वाधीन राजा कैसे बना जा सकता है! उसका उपाय क्या है? **• वह सिर्फ़ अपना-2 धर्म स्थापन करते हैं, राजधानी स्थापन नहीं करते हैं। एक परमपिता परमात्मा ही राजधानी स्थापन करते हैं। (मु.ता. 3.4.69 पृ.2 मध्य)** ***"यदि कोई तेरा साथ न दे तो तू अकेला चलो रे"*** जब सच्चखण्ड की स्थापना करने वाले सच्चे बाप की प्रत्यक्षता में कोई सहयोग नहीं देता तो अपना परिचय या पैगाम देने का काम उन्हें खुद ही बाप के सच्चे और साफ़दिल विजयी वत्सों के घर-2 जाकर करना पड़ता है। अतः बाबा ने **मु.ता. 28.12.68 पृ.3 के आदि में कहा है- "बाप आकर तुमको अपना परिचय देते हैं। तुम आपे ही परिचय नहीं पाते हो।"**

• वह सद्गुरू स्वयं ही आकर अपना परिचय देते हैं। (मु.ता.8.10.74 पृ.2 मध्य)

• पैगाम अथवा मैसेज तो शिवबाबा ही देते हैं। खुदा को पैगम्बर कहते हैं न! (मु.ता.9.3.74 पृ.2 आदि) धर्मपिताओं को पैगम्बर कहते हैं; पर वो कोई सच्चे पैगम्बर नहीं है। किसी ने भी सुख की दुनिया में जाने का रास्ता नहीं बताया, न ही कोई अपने साथ अपने फालोअर्स को लेकर गया। सिर्फ़ एक ही मनुष्य सृष्टि का पिता है, जो उस ऊँचे-ते-ऊँच भगवंत का पैगाम देता है भगवान् का मैसेज देता है– अपने को देह नहीं समझो, अपने को आत्मा समझो, अपने पार्ट को जानो और आत्मा समझकर बाप को याद करो तो तुम्हारे सभी पाप नष्ट हो जाएँगे और तुम नर्कवासी से स्वर्गवासी बन जायेंगे। ये पक्का-2 पैगाम देता है और जो पैगाम तुमको मिला है, वो

तुम दूसरों को भी दो। जब बहुतों को आप समान बनायेंगे तब राजा बनेंगे। ये राजा बनने का ज्ञान, वो एक ही देता है; लेकिन उसको ब्राह्मणों की दुनिया में भुला दिया और उसके बारे में कोई समझानी त्रिमूर्ति के चित्र में नहीं दी जाती है। **• त्रिमूर्ति शिव के चित्र में सारी नॉलेज है। सिर्फ़ त्रिमूर्ति के चित्र में नॉलेज देने वाले (शिवबाबा) का चित्र है नहीं। नॉलेज लेने वाले (ब्रह्मा) का चित्र है। (मु.ता. 23.1.70 पृ.2 मध्य)** सिर्फ़ जो तीन मूर्तियाँ दिखाई हैं, उसमें दो मूर्तियाँ तो भक्तिमार्ग की दिखाई हैं और B.K में समझानी ये दी जाती है कि ये ही ब्रह्मा सो विष्णु बनता है, बाकी शंकर अलग से कोई होता नहीं। शंकर का कोई पार्ट नहीं। अगर पार्ट नहीं होता तो भक्तिमार्ग में शंकर की सबसे ज़्यादा पूजा, मान्यता, मंदिर और मूर्तियाँ क्यों हैं? शंकर ही एकमात्र देवता महादेव है, जिसका नाम शिव के साथ जोड़ा जाता है। शंकर को ही अमोघवीर्य/महादेव/जगत्पिता/विश्वनाथ कहते हैं। यदि ब्रह्मा उर्फ़ दादा लेखराज ही सब-कुछ हैं तो उनका नाम शिव के साथ जोड़ा जाता। न ब्रह्मा की मंदिरों में मूर्ति की पूजा है, न मान्यता है। शंकर के ऊपर कोई समझानी न देना, इसके दो कारण हो सकते हैं:-

पहला- अज्ञानता और दूसरा- वर्तमान आ.विश्वविद्यालय में चल रहे वास्तविक/यथार्थ अस्तित्व को मिटाना।

जबकि उन्हीं ब्रह्मा-वाक्य रूपी मुरलियों/अव्यक्त-वाणियों में शंकर का व्यक्तित्व प्रैक्टिकल में मौजूद बताया है, उसके कई प्रूफ/प्रमाण दिए हैं:-

जिसने अस्तित्व मिटाया, उससे ही बापदादा ने सवाल किया:-

• कुमारका, बताओ, शिवबाबा को कितने बच्चे हैं? कोई कहते हैं- 500 करोड़, कोई कहते एक ब्रह्मा बच्चा है। क्या शंकर बच्चा नहीं है? तब शंकर किसका बच्चा है? यह भी गुंजाइश है। मैं कहता हूँ शिवबाबा को दो बच्चे हैं; क्योंकि ब्रह्मा वह तो विष्णु बन जाते हैं। बाकी रहा शंकर तो दो हुए ना! तुम शंकर को क्यों छोड़ देती हो? भल त्रिमूर्ति कहते हैं; परंतु ऑक्युपेशन तो अलग-2 है ना! (मु.ता.14.5.72 पृ.2 अंत)

• जिसमें आते हैं, उनको ही उड़ा दें तो क्या कहेंगे? माया में इतना बल है जो नम्बरवन वर्थ नॉट ए पैनी बना देती है। (मु.ता. 30.12.89 पृ.1 मध्यांत)

• शंकर क्या करते हैं? उनका पार्ट ऐसा वण्डरफुल है जो तुम विश्वास कर न सको। (मु.ता.14.5.70 पृ.2 आदि)

• शंकर न होता तो हम (शिवबाबा) को शंकर के साथ मिलाते भी नहीं। चित्र बनाया है तो मुझे भी शंकर साथ मिला दिया है। शिव-शंकर महादेव कह देते तो महादेव बड़ा हो जाता। (मु.ता. 26.6.70 पृ.2 अंत)

• वास्तव में ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को देव-2 महादेव कहते हैं; क्योंकि शिव के बाद है शंकर। ब्रह्मा और विष्णु पुनर्जन्म में आते हैं, बाकी शंकर (मरणधर्मा मूर्तियों में) नहीं आता। जैसे शिवबाबा सूक्ष्म है, वैसे शंकर (की आत्मा) भी सूक्ष्म (मननचिन्तन में) है। (मु.ता. 29.9.77 पृ.2 अंत)

• बाप ने समझाया है, शंकर का इतना (शिव की आत्मा जितना) पार्ट नहीं है। वह (फिर भी) नेक्स्ट टू शिव है। (मु.ता. 8.3.76 पृ.2 मध्य)

• (रूहानी सेना में) तुम्हारा मार्शल है ही शंकर। उनका काम है ही विनाश कराना। (हिंसा के) हथियार-पवार तो न तुम चलाते हो, न वह चलाते हैं। शंकर का काम है विनाश कराना। (शंकर में) शिवबाबा का काम है स्थापना का कार्य कराना। शिव और शंकर तो एक (आत्मा) नहीं हैं। वह शंकर (की आत्मा) तो शिवबाबा का बच्चा है। (मु.ता. 20.12.73 पृ.2 मध्य)

• बाप तो एवर पूज्य है। वह कब पुजारी बनते नहीं हैं। अच्छा, फिर सेकण्ड नम्बर में कहेंगे शंकर भी एवर पूज्य है। वह कब (किसी और मनुष्य मात्र के) पुजारी बनते नहीं। (मु.ता. 28.8.71 पृ.2 मध्य)

• शंकर द्वारा विनाश होना है। वह भी अपना कर्तव्य कर रहे हैं। ज़रूर शंकर भी है तब तो सा. होता है। (मु.ता. 26.2.73 पृ.1 अंत)

इन महावाक्यों से यह बात साबित होती है कि शंकर ज़रूर प्रैक्टिकल में है और वो ब्रह्मा बाबा नहीं है; क्योंकि ब्रह्मा के लिए कभी मुरलियों में नेक्स्ट टू शिव नहीं कहा, ना एवर पूज्य कहा है; क्योंकि सूक्ष्मवतन की

तीन पुरियों में ब्रह्मा को सबसे नीचे पृथ्वी की ओर दिखाया है; क्योंकि वो शिव समान निराकारी ज्योतिबिंदु रूप स्टेज धारण ही नहीं करते हैं, ना ही ब्रह्मा के चित्र में बुद्ध-क्राइस्ट-गुरुनानक के चेहरों की तरह निराकारी चढ़ी हुई आँखों वाली स्टेज दिखाई जाती है। भल स्थापना और पालना के निमित्त तो बन जाते हैं; परन्तु विनाश का काम करना, वो काम कोई धर्मपिताएँ भी नहीं कर सकते हैं और विनाश भी ऐसा करे जो उसका लेप-छेप न लगे। इसलिए मुरली में बोला :–

• **बाप विनाश उनसे कराते हैं, जिस पर कोई पाप न लगे। (मु.ता.29.4.70 पृ.1 मध्य)**

यस्य न अहङ्कृतो भावो बुद्धिः यस्य न लिप्यते।
हत्वा अपि स इमान् लोकान् न हन्ति न निबध्यते।। (18/17 गीता)

जिसका अहंकार भाव नहीं है, जिसकी बुद्धि {1 प्रभु सिवा कहीं भी**} लिम्पायमान नहीं होती, वह (महादेव) इन {**देहासक्त नास्तिक पापी**} लोगों को मारकर* भी नहीं मारता {**और**} न बंधायमान होता है।**

विष पीकर निर्विष रहे, नाग-बलाएँ संग में रहे, श्मशान घाट में सदाकाल निवास करे, सभी को सुख देकर सुख की इच्छा न करे और संघर्ष में सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर दे- ये पार्ट ब्रह्मा बाबा का हो ही नहीं सकता।

• **राम-सीता बनने में कोई हाथ नहीं उठाते। (अ.वा.ता. 27.03.83 पृ.103 आदि)**

सभी आत्माएँ सुख चाहती हैं, काँटों के जंगल में रहकर संघर्ष का जीवन कोई नहीं चाहता है। ब्रह्मा बाबा तो 60 वर्ष होने तक आराम से रहे, वानप्रस्थ होने पर त्याग किया, जब सारे सांसारिक सुख भोग लिए। वो काम तो दुनिया में कोई भी कर सकता है। सिंध-हैदराबाद (की ॐ मंडली) में झगड़ा शुरू हुआ तो उसका मुकाबला नहीं कर सके और कराची में भाग गए। मम्मा के शरीर छोड़ने के बाद आसुरी स्वभाव-संस्कार वाले बच्चों ने जब अपना प्रभाव दिखाया तो सहन नहीं कर सके तो हार्ट फेल हो गया। जबकि बाबा ने मुरली में बोला है- **"इस (योगमार्ग) में हार्टफेल तो कभी होना ही नहीं है कभी भी। ये तो जो जो कर्मेन्द्रियों को वश नहीं कर सकते हैं, वो गिर पड़ते हैं...।" (साकार मु.ता. 13.12.67)** वे योगी नहीं थे। जबकि यादगार मूर्तियों में शंकर को प्राय: याद में बैठे हुए दिखाया भी है और योगेश्वर/ज्ञानेश्वर कहा भी जाता है। इन सब बातों से साबित होता है कि ब्रह्मा बाबा शिव के मुकर्रर रथ नहीं थे। शिवबाप ने रामबाप के मुकर्रर रथ की अनुपस्थिति में दादा लेखराज ब्रह्मा को कार्यकारी रूप से यज्ञ संचालन के लिए सिर्फ़ टेम्परेरी रथ के रूप में निमित्त तब तक के लिए बनाया था, जब तक वो आदि वाली ॐ मंडली की आत्माएँ दुबारा ज्ञान-यज्ञ में नहीं आ जातीं; क्योंकि यज्ञ में कुछ घटनाक्रम ॐ मंडली में हुआ, जिसके कारण पहले यज्ञपिता सन् 1942 में शरीर छोड़ देते हैं फिर आदि की यज्ञ माताएँ भी कुछ समय के बाद सन् 1947 के आस-पास शरीर छोड़ देती हैं। जब तीनों ही आत्माएँ शरीर छोड़ देती हैं तो यज्ञ का संचालन उसी तरह दादा लेखराज उर्फ़ ब्रह्मा के द्वारा होता है। जैसे महाभारत काल में महाराज पांडु के राज्य त्यागने पर धृतराष्ट्र को कार्यकारी राजा बनाया था; परन्तु राजगद्दी पर बैठते ही वो स्वयं को ही राजा समझने लगे। महाराज पांडु या उनके बच्चे पांडव दुबारा राज्य न ले सकें, उसके लिए धृतराष्ट्र के कौरव-पुत्रों ने अनेक लाखा भवन-निर्माण जैसे मरवाने के प्रयत्न किए और उनका अस्तित्व ही मिटाने लगे। यह बात इस वर्तमान समय की ही है। जिन आदि आत्माओं ने यज्ञ की स्थापना की थी, उनकी हिस्ट्री ही मिटा दी। उनका नाम भी कोई लेता नहीं। जबकि मुरली में बोला है- **"बाबा के पास फोटो होता तो दिखलाते। तुम समझेंगे बाबा तो बिल्कुल ठीक कहते हैं। यह कितना महारथी, बहुतों को उठाते थे। आज है नहीं।" (मु.ता. 02.01.69 पृ.2 आदि)**

• **त्रिमूर्ति रचने वाले का नाम-निशान ही गुम कर दिया है। (मु.ता. 25.11.72 पृ.2 अंत)**

और आज भी दादा लेखराज उर्फ़ धृतराष्ट्र के पुत्र/बेसिक ब्राह्मण उनके वर्तमान जन्म का अस्तित्व मिटाने के लिए लगातार प्रयासरत हैं; लेकिन वही आत्माएँ लम्बे समय से दुबारा जन्म तो ले ही चुकी हैं, स्थापना, विनाश और पालना का जो अधूरा कार्य है उसको पूरा करने के लिए; क्योंकि शरीर का विनाश होता है; लेकिन आत्मा का विनाश नहीं होता है। सर्वशास्त्रमई शिरोमणि श्रीमद्भगवद्गीता में भी कहा हैः-

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।

अजः नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।। (2/20 गीता)

यह कभी न जन्मता है और न मरता है, अथवा होकर फिर से {सृष्टि रंगमंच पर**} नहीं होगा- {**ऐसे भी नहीं है**}। अजन्मा, नित्य, सनातन, {**कल्प पूर्व का सदा स्थायी**} पुरातन यह {**हीरो पार्टधारी**}, देह हनन होने पर {**भी**} नहीं मारा जाता।**

सिक्खों में अकालमूर्त और अकालतख़्त नाम से इसी शरीरधारी का गायन है। उन्होंने तो जड़ तख़्त बनाया है, वास्तव में अकाल अर्थात् जिसे काल नहीं खा सकता है। मूर्त अर्थात् ऐसी साकार मूर्ति जिसको कोई काल नहीं खा सकता है। सबको काल के गाल में जाते देखा जा सकता है; क्योंकि सभी प्राणी नश्वर हैं; परन्तु एक ही शंकर वाली चेतन मूर्ति है जिसको महाविनाश में भी कोई मरते नहीं देखता है; क्योंकि वो कभी अनिश्चय की मौत भी नहीं मरता। शिवबाप पर 100% निश्चय करता है, यही बाप है, 1% भी कम नहीं; लेकिन बाकी सभी आत्माएँ तो आज निश्चय करती हैं कल किसी ने कुछ कह दिया तो अनिश्चय भी आने लगता है; इसलिए सभी प्राणी मात्र में सिर्फ़ उसका तख़्त ही अकाल तख़्त कहेंगे। उस आत्मा का जो भृकुटि रूपी तख्त है, वो जन्म-मरण रहित शिव का भी अकाल तख़्त है; लेकिन सभी प्राणियों का नहीं। सिर्फ़ एक शंकर वाली आत्मा का स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर या कारण शरीर भी नष्ट नहीं होता ।

• **अकालमूर्त का यह रथ अथवा तख्त खास मुकर्रर है। (मु.ता. 27.7.88 पृ.2 आदि)**

• **अकालमूर्त का बोलता-चलता तख़्त है। (मु.ता. 21.7.69 पृ.1 मध्य)** ज़रूर चैतन्य है

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततं।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति।। (2/17 गीता)

जिस {मानवीय सृष्टिवृक्ष के बीज महादेव**} द्वारा यह सारा {**अश्वत्थ नाम का बड़ा वृक्ष**} फैला है, उसको तो अविनाशी जान। इस अविनाशी {**जगत्पिता स्वरूप साकार बीज**} का विनाश करने में कोई भी समर्थ नहीं है।{**कल्पांत में भी अव्यक्तमूर्ति अकालमूर्त है।**}**

शंकर के मस्तक पर अर्धचंद्रमा दिखाते हैं, जो ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा की प्रवेशता की यादगार है और तीसरा खड़ा शिवनेत्र तो उनमें है ही; क्योंकि वो शिव का मुकर्रर रथ है। एक व्यक्तित्व में तीन आत्माएँ कार्य करती हैं राम वाली आत्मा जिनका अपना शरीर है; इसलिए शंकर का मिक्स पार्ट है।

• **शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा का रथ एक ही है तो ज़रूर शिवबाबा भी खेल तो सकते होंगे ना! (मु.ता.13.10.68 पृ.3 आदि)**

बाप का नाम,रूप,देश,काल,गुण,विशेषताएँ आदि

उस बाप की पूरी-पूरी बायोग्राफी जानना चाहिए। • **बच्चा बाप की जीवन कहानी न जाने तो उनको मूर्ख कहा जावेगा। (मु.ता. 27.12.73 पृ.4 आदि)** इस मूर्खता के कारण ही भगवान को नाम रूप से न्यारा कर दिया।

• **परमपिता परमात्मा के नाम-रूप, देश, काल को ही नहीं जानते। बस, कह देते परमात्मा नाम-रूप से न्यारा है। (मु.ता. 26.4.75 पृ.1 मध्य)** इसलिए वो सदाशिव स्वयं ही उसका परिचय देते हैं कि वो प्रैक्टिकल में मौजूद है। उस क्षेत्र का ज्ञाताशिव ही क्षेत्र के बारे में बता सकता है।

तत् क्षेत्रं यत् च यादृक् च यद्विकारि यतश्च यत्।
स च यो यत्प्रभावश्च तत् समासेन मे शृणु।। (13/3 गीता)

वह {अर्जुन की**} क्षेत्र रूपी देह जो जैसी {**महानतम पतित-व्यभिचारी**} है और जैसा विकारी {**कामी**} है {**'मैं पतितन को राजा'=तुलसीदास**}, और जो {**बालोंरहित बच्चों-जैसी उसकी लौकिक देह**} जहाँ {**अहं+द+गंद गाँव (कायमगंद तालुका)**} से है, और वह {**देहांकारी अलौकिक ब्रह्मापुत्र**} जो {**अहं+दा+बाद का ही**} है, और {**बदला लेने वाले नाग-**} {**स्वभावी धृष्टद्युम्न जैसा ढीठ, निर्लज्ज**} और जो {**सारा हिसाब-किताब चुक्तू करने के**} प्रभाव वाला है- वह सब संक्षेप में मुझ {**बहुरूपिया शिवबाबा से सम्मुख**} सुन।**

सदाशिव के आधार बने व्यक्तित्व के नाम, रूप, देश, काल, विशेषताओं के बारे में ब्रह्म-वाक्य रूपी मुरलियों/अव्यक्त-वाणियों में ही इशारे भी दिए हैं:-

काल

• बाप कहते हैं- जब ऐसी धर्म ग्लानि होती है तो मैं आता हूँ। अपने बड़ों को गालियाँ देना- यह भारत में ही होता है। यदा-यदा हि.... यह यहाँ की बात है। (मु.ता. 5.1.77 पृ.2 अंत)

सबसे नंबरवन ग्लानि और बड़े-ते-बड़ी ग्लानि है भगवान् को सर्वव्यापी बना दिया। दूसरी एकज भूल कृष्ण बच्चे को गीता माता का पति 'गीतापति भगवान' बना दिया। दूसरे धर्म वाले अपने धर्मपिता को गाली नहीं देते हैं; लेकिन भारतवासी ही अपने भगवान को सर्वव्यापी बताकर गाली देते हैं। सब संसारी रास्ता भटकते हैं तब ही शिवबाप आते हैं। कलियुग के अंत में जब सब धर्म मौजूद होते हैं और सतयुग के आदि में पुरुषोत्तम संगमयुग में आते हैं।

देश-

• यह भारत है पारलौकिक बेहद के बाप का बर्थ प्लेस। (मु.ता. 15.11.73 पृ.1 आदि) भारत ही भगवान की अवतरण भूमि है।

• शिवजयंती का कितना अच्छा अर्थ है- शिवबाबा की पधरामणी। जबकि शिवबाबा भगवान आया हुआ है भारत में, जिसका गायन है, मंदिर वगैरह तो ज़रूर आया होगा तो आ करके भारत को राजधानी दी होगी ना! सो दी है ना। अभी फिर गुमाई है। (साकार रात्रि मु.ता. 4.7.65)

भगवान परम पवित्र है, वह आकर पवित्र ज्ञान देता है इसलिए आता भी है पवित्र स्थली में, जहाँ पवित्रता को और देशों के मुकाबले बहुत मान्यता दी जाती है। भल विदेशियों से प्रभावित है फिर भी और देशों के मुकाबले भारत की कन्या-माताओं की सुरक्षा की जाती है। पवित्रता के लिए यहाँ नारियों ने कई बार जौहर भी किया है जो इतिहास प्रसिद्ध है; लेकिन विदेशों में पवित्रता को कोई मान्यता नहीं दी जाती है और जितने भी विदेशी धर्मपिताएँ आए; लेकिन वो न खुद पवित्र रहे और न ही पवित्रता का ज्ञान दिया।भल पवित्र कुरान, पवित्र बाइबल कह देते है परन्तु वास्तव में उनमें पवित्र बनने का कोई ज्ञान नहीं है; इसलिए उन धर्मों में पवित्रता को महत्व नहीं दिया जाता है; इसलिए न ही वो धर्मपिताएँ भगवान है और ना ही उन्होंने भगवान का मैसेज दिया। एक भगवान ही है, जो पवित्र बनने का ज्ञान देता है; क्योंकि जो जैसा होता है वैसा ही दूसरों को भी बनाता है; परन्तु आज भारतवासी सबसे ज़्यादा दूसरे धर्मों से प्रभावित हो गए हैं और भारत में ही सभी प्रकार के धर्म मठ-पंथ सम्प्रदाय हैं। अखंड भारत की जगह खण्डित भारत हो गया है। उसको फिर से अखंड बनाने के लिए, पतित बने भारतवासियों को फिर से पावन बनाने के लिए उनके पास आते हैं; क्योंकि जो उनको पतित-पावन कहकर बुलाते हैं तो वो पतित से पावन बनते हैं। ये अविनाशी खंड है जो कभी विनाश नहीं होता है। अति प्राचीन होने के कारण जड़जड़ीभूत हो गया है, इसलिए उसको फिर से सरसब्ज बनाने के लिए आते हैं।

प्रदेश-

• बाप आते भी हैं मगध देश में, जो कि बहुत गिरा हुआ देश है, बहुत पतित है। खान-पान भी बहुत गन्दा है। (मु.ता. 16.9.68 पृ.2 अंत, 3 आदि)

• बाप कैसे, कहाँ आते हैं, किसको भी कुछ पता भी नहीं है। तुम जानते हो- मगध देश में आते हैं, जहाँ (गंगा में) मगरमच्छ (भी) होते हैं। (मु.ता. 28.12.68 पृ.3 मध्यादि) सिंध-हैदराबाद या माउण्ट आबू को मगध देश नहीं कहेंगे। वहाँ न जानवर मगरमच्छ हैं, न ही वहाँ का खान-पान गन्दा है, न वो गरीब देश हैं। मगध देश कहा जाता है प्रायः गंगा और यमुना के बीच का प्रदेश, जो उत्तर प्रदेश है जहाँ के मनुष्य मैनपुरी जैसे महाहिंसक मगरमच्छ स्वभाव के हैं।

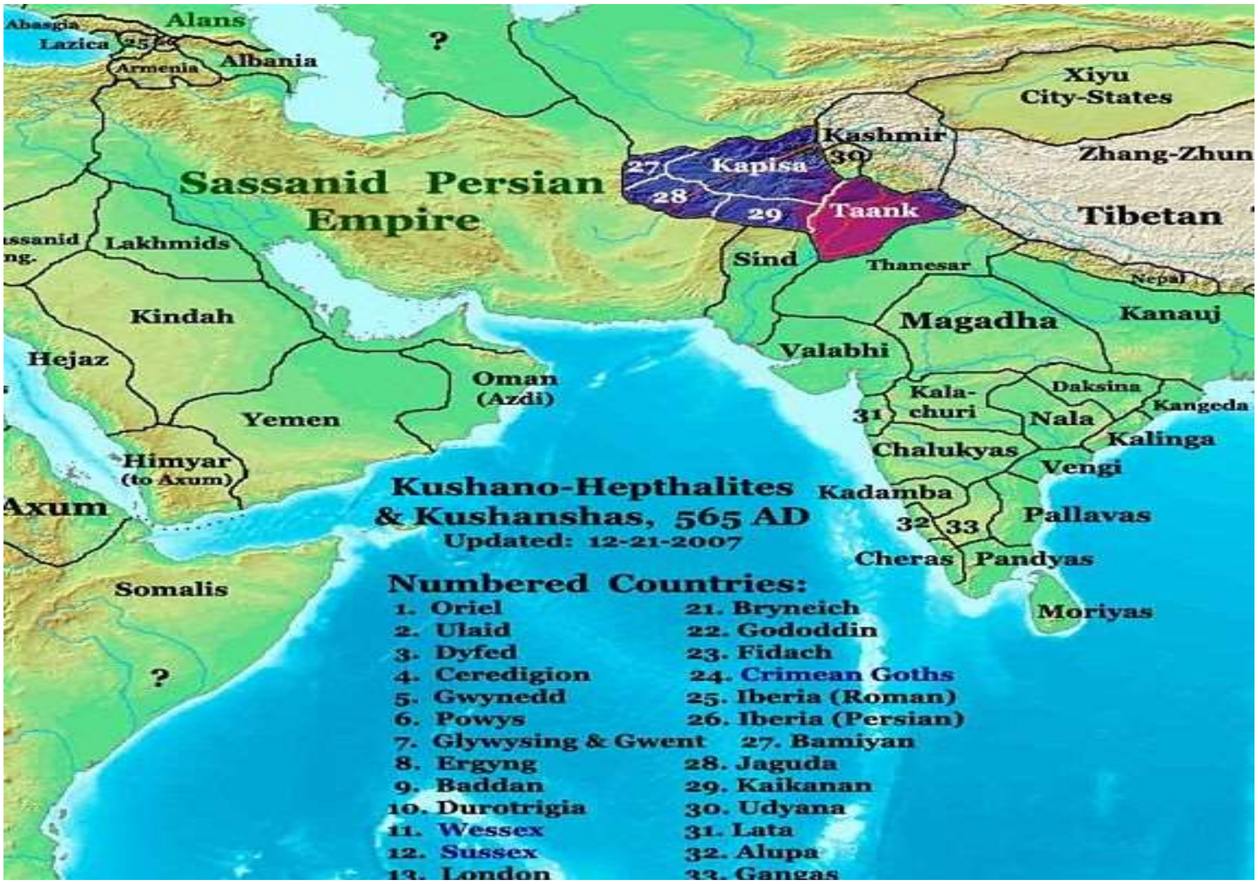

Magadh with reference (संबन्धित) to Uttar Pradesh

यह चित्र 565 AD में मगध के विस्तार को दर्शाता है। मानचित्र में दिखाए अनुसार मगध मध्य और उत्तरी भारत में फैला हुआ था। मगध की सीमाओं में उत्तर में गंगा नदी, पश्चिम में सोन नदी, दक्षिण में विन्ध्याचल और पूर्व में चंपा नदी है। सारनाथ, इलाहबाद, मेरठ, कौशाम्बी, सकिन्स्सा, बस्ती और मिर्ज़ापुर जैसे नगर जहाँ पर अशोक स्तम्भ के शिला लेख पाए गए हैं, वे उत्तर प्रदेश में स्थित हैं।

This picture shows the expansion of Magadh in 565 AD. As shown in the map it is located in the central and northern India. The Magadh was then bordered by the Ganges in the North, the Son River in the West, the Vindhya ranges in the South and the Champa River in the East. Most of the cities namely Sarnath, Allahabad, Meerut, Kaushambi, Sakinssa, Basti and Mirzapur where the Ashoka Pillars petrography are found are located in Uttar Pradesh.

• जहाँ बाप का जन्म होता है, वह भूमि सभी से ऊँच तीर्थ है। (मु.ता. 7.11.72 पृ. 2 अंत)

एक उत्तर प्रदेश में ही तो भगवान की जन्मभूमि गाई हुई है, चाहे भगवान राम की अयोध्या हो या कृष्ण की नगरी मथुरा हो, शंकर की नगरी काशी भी वहीं है। भगवान की यादगार के सबसे अधिक तीर्थस्थल भारत के उत्तर प्रदेश में ही हैं। शास्त्रों में कहा है- कलियुग में भगवान कलंकीधर अवतार के रूप में प्रत्यक्ष होंगे। कलंकी का मन्दिर भी यू.पी में है। सभी लोग ये मानते भी हैं कि कलंकीधर का जन्म उत्तरप्रदेश में होगा।

• जहाँ जड़ यादगार है, वहाँ ही तुम चैतन्य आकर ठहरे ना! (मु.ता. 27.01.70 पृ.1 आदि)

• डायरैक्ट ब्रह्मा बाप और जगदम्बा की पालना मिली है इसीलिए यू.पी. भाग्यवान है। (अ.वा.ता. 19.2.12 पृ.4 आदि) जगत्पिता और जगदम्बा दोनों का पार्ट यू.पी में ही प्रैक्टिकल में चलता है।

• यू.पी. को धर्म युद्ध का खेल दिखाना चाहिए। (अ.वा.ता.24.12.79 पृ.146 अंत)

यू.पी. माना तुम ज्ञान को पहले पियो। जो पीता है, वो धारण भी करता है; इसलिए नारायण को क्षीरसागर में दिखाते हैं। जो धारण करता है, वही सही धर्म बता सकता है। सत्य धर्म को बताने वाला तो एक ही होगा ना! आज दुनिया में सारे अधर्मी हैं, जो अपने को बड़े ज्ञानवान समझते हैं। जिन संन्यासियों को शास्त्र-निषेध है, वो ही शास्त्र हाथ में लिए दुनिया को भ्रमित कर रहे हैं। ज्ञान से तो देहभान पर विजय प्राप्त होती है; परन्तु देखा

जाए तो संन्यासी ही सबसे ज़्यादा देह-अहंकारी हैं। इन्हीं अहंकारी, हद या बेहद के कहे जाने वाले तथाकथित ब्रह्माकुमार-कुमारियों/संन्यासियों को सही धर्म का खेल एक (U.P.) ही दिखाएगा, गीता या भागवत शास्त्र में कलाबद्ध कृष्ण देवता को भगवान बना दिया है। कलातीत चेतन सूर्य शिव ने तो महाभारत काल में सब अधर्मियों के अधर्म का धर्मयुद्ध के द्वारा नाश किया था; स्थूल हिंसा की तो बात नहीं, ज्ञान से उनके अज्ञान का खात्मा करने की बात है। वो एक ही परमपिता शिव का व्यक्तित्व कर सकता है जो हद में यू.पी. (तू पी) निवासी है और प्रैक्टिकल में भी ज्ञान-जल पीने वाला है।

जिला-

• बाबा है बेहद के (की) सारी दुनिया का मालिक, सभी आत्माओं का बाप। बाप को मालिक कहा जाता है। फर्रुखाबाद तरफ मालिक को मानते हैं (जैसे अल्लाहबाद के लोग नेहरु को मानते थे)। घर का मालिक तो बाप ही होता है। बच्चों को बच्चे ही कहेंगे। जब वह भी बड़े होते हैं, (बेहद के मानसी) बच्चे पैदा करते हैं तब फिर मालिक बनते हैं। यह सभी राज़ समझने की है। (मु.ता.11.4.68 पृ.3 अंत)

• फर्रुखाबाद में तो मालिक को मानते हैं न। तुमने मालिक का भी अर्थ समझा है। वह है मालिक, हम उनके बच्चे हैं। तो ज़रूर (बेहद राजाई का) वर्सा मिलना चाहिए न! (मु.ता.7.12.73 पृ.2 मध्य)

• जैसे फर्रुखाबाद के रहवासी मालिक को मानते हैं। अनेक मत तो हैं ना! अच्छा, उस मालिक से फिर क्या मिलेगा? कुछ भी पता नहीं। मालिक को कैसे याद करें ? उनका नाम, रूप क्या है? कुछ पता नहीं है। मालिक तो (सारी) सृष्टि का मालिक ठहरा ना। वह हुआ रचयिता, हम हुए रचना। (मु.ता.22.1.72 पृ.1 आदि)

जो व्यक्ति जहाँ से निकलता है, वहाँ के लोगों को उस पर गर्व होता है। ज़रूर सारी सृष्टि का मालिक फर्रु+खा+बाद जिले से ही निकला है; इसलिए मुरली में फर्रुखाबाद जिले का नाम अनेकों बार आया है। मुरली में कभी 'माउण्ट आबू' या 'सिंध-हैदराबाद' में मालिक को मानते हैं- ऐसे नहीं कहा है।

गाँव+रथ

• बंदरों की महफिल में आता हूँ। मैं देवताओं की महफिल में कब आता ही नहीं हूँ। जहाँ (B.k. में) माल मिलता, 36 प्रकार के भोजन मिल सकते, वहाँ मैं आता ही नहीं हूँ। जहाँ (गरीबी में) रोटी भी नहीं मिलती बच्चों को, उन्हों को आए गोद में लेकर बच्चा बनाए गोद में लेता हूँ। साहूकारों को गोद में नहीं लेता हूँ। (मु.ता.15.8.76 पृ.3 मध्यादि)

ऐसे गरीबों की यादगार जगन्नाथ भंडार है, जबकि पश्चिम के श्रीनाथ में जहाँ 36 प्रकार के भोजन मिलते हैं वो भी पैसे वालों को,वहाँ नहीं आते हैं, जिसकी यादगार हद में भी मंदिर है और बेहद में माउण्ट आबू है, जहाँ पैसे वालों को 36 प्रकार का फर्स्ट क्लास भोजन मिलता है।

जहाँ दो वक्त की रोटी भी नहीं मिलती है ऐसे गंदे गाँव में आते हैं, फर्रुखाबाद से कम्पिल तक की रेलवे लाइनों में ही गंद शब्द जुड़ा है, वर्तमान में उसको गंज कर दिया है।

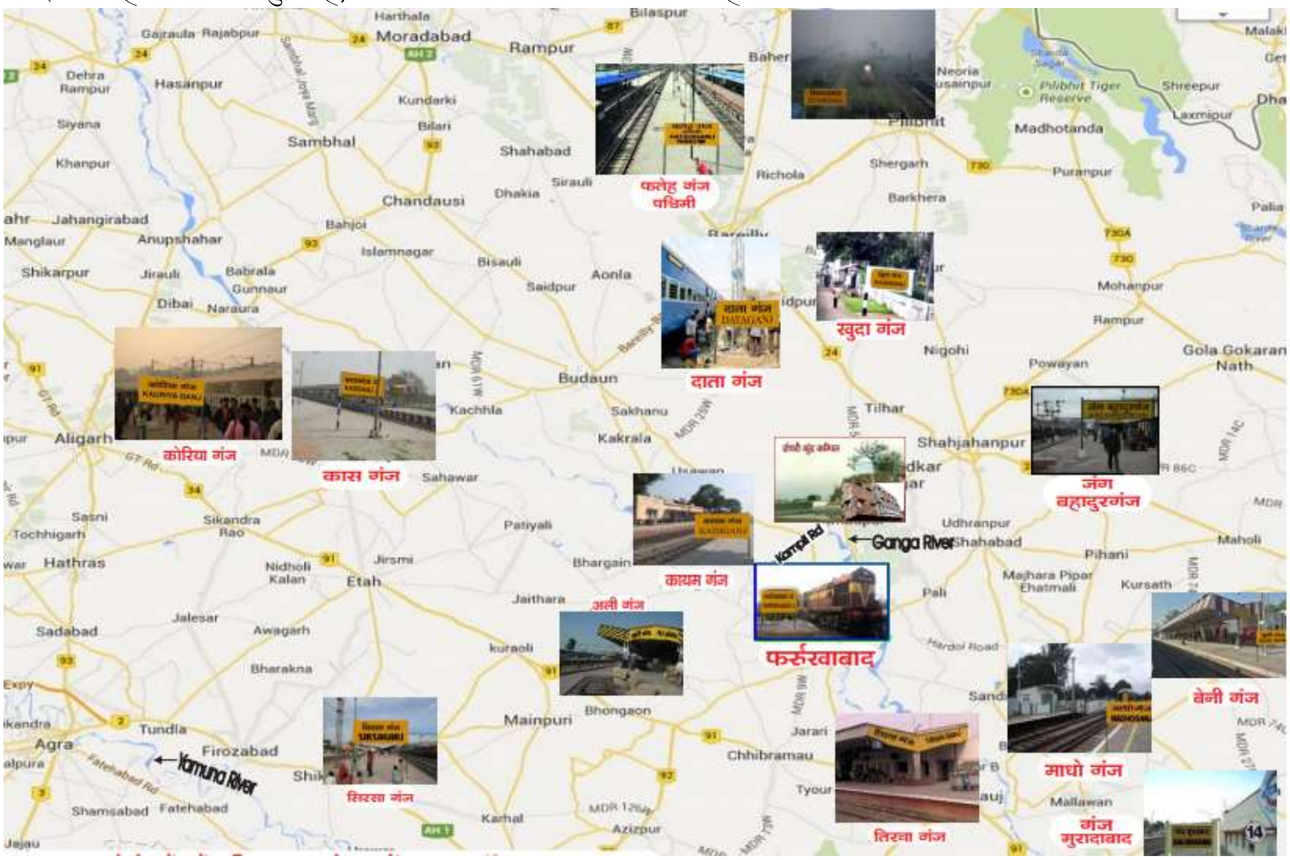

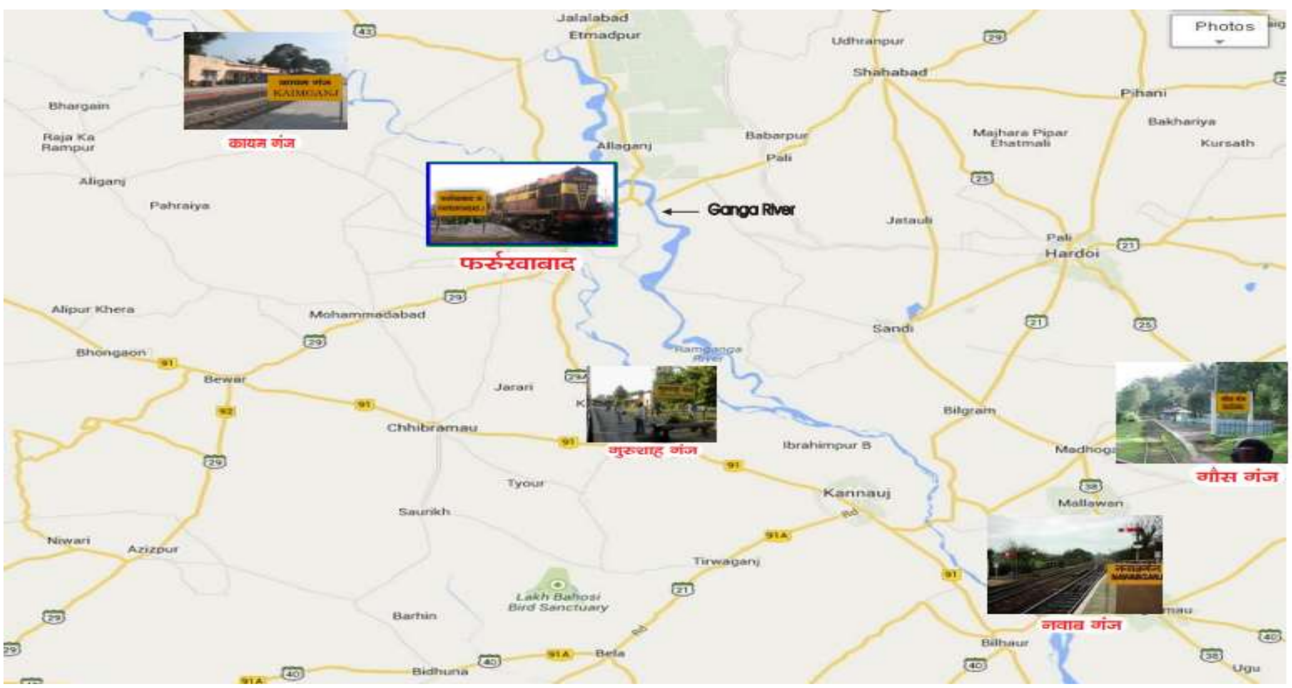

• ज्ञान-सागर को कोई महल तो नहीं है, झोंपड़ी है। ज्ञान-सागर झोंपड़ी में रहना पसंद करते हैं। (मु.ता.15.9.78 पृ.1 आदि)

• इतना ऊँच-ते-ऊँच (बाप) कैसे छी-2 गाँवरों (कायम+गंद ताल्लुका के अहं+द+गंद) में आते हैं। ....बच्चों को बहुत ही प्यार से समझाते हैं। (मु.ता. 31.7.68 पृ.3 मध्यादि)

• इन संन्यासियों आदि को अपना नशा कितना रहता है। वह पहले-2 नज़र रखते हैं साहूकारों में, बाबा पहले-2

नज़र रखते हैं गरीबों पर। गरीब निवाज़ है ना! (मु.ता. 28.6.70 पृ.2 अंत)

जहाँ के नाम में ही गंद जुड़ा है, लौकिक जन्म ही कायमगंद तालुका में अहमदगंद से है। अब फैसला करें कि सिंध-हैदराबाद जहाँ के लिए कहा जाता है कि वहाँ की गलियाँ प्रतिदिन इत्र से सफाई की जाती थीं तो उसको गन्दा गाँव तो नहीं कहेंगे और दादा लेखराज ब्रह्मा एक शिक्षक के पुत्र थे, जो गरीब नहीं थे। सिंध छोड़कर कुछ समय बाद ब्रह्मा बाबा बम्बई गए। बाद में वे कलकत्ते में हीरे-जवाहरात के बड़े प्रसिद्ध व्यापारी माने गए। उनका व्यापार भी काफी फैला हुआ था। ब्रह्मा बाबा झोपड़ी में नहीं रहते थे, उनके तो सिंध में कई बंगले थे। माउण्ट आबू में जो झोपड़ी बनाई है, वो तो मात्र दिखावटी है।

• जो अंत का जन्म है, वो साँवरा, गाँवडे का छोरा। जूती भी उनकी नहीं है उसकी आत्मा को जो 84 जन्म भोगती है, वो गाँवडे का छोरा हो जाते हैं। (साकार मु.ता. 8.10.66)

• जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं, उनके गाँव में ही आते हैं। (मु.ता. 30.6.74 पृ.2 आदि)

• न कृष्ण गाँव का छोरा था। अब कृष्ण गाँव का छोरा हो न सके। (मु.ता. 02.12.73 पृ.3 मध्य)

इन महावाक्यों के अनुसार ब्रह्मा बाबा कृष्ण की आत्मा गाँवडे का छोरा नहीं कहे जा सकते है; इसलिए उनको साधारण तन नहीं कहेंगे।

• बाप कहते हैं- देखो, भक्तिमार्ग में मुझ शिव को रहने के लिए कितने अच्छे-2 महल बनाते हैं हीरो-जवाहिरातों के और अभी मैं डायरेक्ट आया हूँ तो देखो कहाँ रहता हूँ। कम-से-कम राष्ट्रपति जैसा मकान तो होना चाहिए; परन्तु देखो तीन पैर पृथ्वी भी नहीं मिलती। भक्तिमार्ग में जिनको बहुत धन मिलता है कितना साहूकार बनते हैं। स्वर्ग का पहला नम्बर महाराजा-महारानी ही फिर पूज्य से पुजारी बनते हैं तो मेरा महल कैसा अच्छा बनाते हैं। अभी देखो तो कहाँ रहता हूँ। यह है ही पतित पुरानी दुनिया। तीन पैर पृथ्वी की नहीं मिलती। (मु.ता. 01.05.73 पृ.1 मध्य)

दादा लेखराज उर्फ़ ब्रह्मा बाबा के जीवन चरित्र में कोई ऐसा समय नहीं था जो उनको तीन पैर पृथ्वी के ना मिले हों। ये बात वर्तमान समय में चल रहे सदाशिव ज्योति के आधार बने व्यक्तित्व की बात है, जिन्हें रहने के लिए निश्चित रूप से तीन पैर पृथ्वी के भी नहीं मिलते है; इसलिए शंकर को शास्त्रों में फ़क़ीर दिखाते हैं जिनके पास कोई महल नहीं होते हैं।

• देखो, कितनी बड़ी-ते-बड़ी हस्ती साधारण रूप में है। (मु.ता. 20.2.72 पृ.2 अंत)

• बाप कहते हैं- मैं बहुत साधारण तन में आता हूँ, (ब्रह्मा अर्थात् बड़ी माँ का तन तो गोरा-चिट्ठा, असाधारण राजाओं जैसी पर्सनालिटी का था)। इसलिए कोई विरला ही पहचानते हैं। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, साथ रहने वाले भी समझते नहीं हैं। (मु.ता. 5.2.68 पृ.3 अंत)

• इनका तो 'वही' साधारण रूप है, 'वही' ड्रेस आदि है। फ़र्क नहीं। इसलिए कोई समझ नहीं सकते। (मु.ता. 5.2.74 पृ.2 आदि)

• बाप कहते हैं- इस रथ को साधारण देख कोई बिरला ही निश्चय बुद्धि होते हैं। (रात्रि मु.ता. 7.5.68 पृ.2 मध्य)

बाबा भी कहते हैं- मैं तो साधारण गुप्त रूप में आता हूँ। मैं जब आता हूँ तो इतने गुप्त रूप में आता हूँ कि मूढ़मति लोग मुझे पहचान नहीं सकते। सर्वशास्त्र शिरोमणि श्रीमद्भगवद गीता में भी बताया है-

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।। (9/11 गीता)

मूर्खलोग {अर्जुन/आदम के साधारण और मुकर्रर} **शरीर का आधार लेने वाले मुझ प्राणियों के महेश्वर शिवबाबा की** {व्यक्त स्वरूप सहित}**, अवज्ञा करते हैं, मेरे श्रेष्ठतम** {ज्योतिर्लिंग} **परमात्मभाव को** {भी} **नहीं जानते।**

• वही महाभारत लड़ाई है। तो ज़रूर भगवान भी होगा। किस रूप में, किस तन में हैं, वह सिवाय तुम (राम की सेना जैसे) बच्चों के किसको पता नहीं है। कहते भी हैं- मैं बिल्कुल साधारण तन में आता हूँ। मैं कृष्ण (उर्फ़ ब्रह्मा) के (शोभायमान) तन में नहीं आता हूँ। (मु.ता. 13.8.76 पृ.3 अंत)

"ब्रह्मा बाबा का तो बड़े-बड़े राजाओं के साथ उठना-बैठना होता था, इंग्लैंड की महारानी एलिज़ाबेथ भी उनसे रत्न लेती थी" (किताब-श्री इन वन) तो उनको साधारण तन तो नहीं कहेंगे। ये सभी साधारण तन की बातें प्रजापिता ब्रह्मा/राम बाप के लिए लागू होती हैं, जिनका जन्म एक साधारण दीक्षित ब्राह्मण कुल में, अहमदगंद गाँव में हुआ है। जो कुछ समय बाद अपने पिता के ननिहाल कम्पिला में निवास करने लगते हैं, सांख्ययोग के प्रख्याता कपिल मुनि की यादगार काम्पिल्य नगरी में रहने लगते हैं, जिसको वर्तमान में कम्पिला कहा जाता है। जिस नगरी के बारे में कहा है –

"आसीत्काम्पिल्यनगरे सोमयाजि कुलोद्भवः।
दीक्षितो, यज्ञदत्ताख्यो यज्ञविद्याम् विशारदः।।" (स्कन्दपुराण)

अर्थात् काम्पिल्य में सोम यज्ञ करने वाले दीक्षित ब्राह्मणों का निवास था, जो यज्ञविद्या में परम विशारद थे।

"तदैव कम्पिलानाम्ना विद्यते परमापुरी।
दोषैर्मुक्ता गुणैयुक्तः धनाढ़या, स्वर्णसंगृहा।।" (विमलनाथ पुराण)

अर्थात् कम्पिल नाम की परमपुरी सभी दोषों से मुक्त है। यहाँ के निवासी गुणवान, धनवान और स्वर्ण के स्वामी हैं। (ये पुराण निर्माण काल की बात है।) जैन ही नहीं, बौद्ध साहित्य में भी काम्पिल्य की कीर्ति का अद्भुत वर्णन है। 'काम्पिल्य-महात्म्य' नामक ग्रंथ में– काली क्षेत्र भी (कम्पिल को) कहा है। काली क्षेत्र में जन्मे और तपस्या सिद्ध करके महेश काशी में निवास करने लगे। इस गाँव का महत्व आदि देश के रूप में होने से काम्पिल्य को ज्ञानतीर्थ और सिद्धभूमि माना गया है। शास्त्रों में दिखाया है, कम्पिल में पाण्डवों ने लम्बे समय तक गुप्त वास किया। यादगार रूप में कपिलमुनि मन्दिर वा आश्रम भी यहाँ हैं। लिखा है कि सभी ऋषि-मुनियों ने यहाँ तपस्या की है। जैनियों की यादगार दिलवाड़ा मंदिर भी है।

"कम्पिला सदृशं तीर्थ नास्ति भूमण्डले क्विचित।"

'कम्पिल' शब्द की रचना (ब्रह्मा) के अपर नामों (कमलोद्भव-कमलासन और कः) के प्रथम अक्षर 'कं', पिनाकी (शंकर) के प्रथम अक्षर 'पि' और लक्ष्मी-पति (विष्णु) के प्रथम अक्षर 'ल' से मिलकर 'कम्पिल' होता है। यही क्षेत्र ब्र.वि.श. तीन मूर्तियों का आदि सृष्टि का स्थल माना गया है, जिसको अत्यंत प्राचीन होने के कारण आज भुला दिया है, साथ ही ज्ञानदाता और उसके दिए हुए सच्ची गीता-ज्ञान को भी भुला दिया है।

घर-

• यह (AIVV कम्पिला) घर का घर भी है और यूनिवर्सिटी भी है। इसको ही गॉड फादरली वर्ल्ड यूनिवर्सिटी कहा जाता है; क्योंकि सारी दुनियाँ के मनुष्य मात्र की सद्गति होती है। रियल वर्ल्ड यूनिवर्सिटी यह है। घर का घर भी है। मात-पिता के सन्मुख बैठे हो। ... स्प्रिच्युअल नॉलेज सिवाय स्प्रिच्युअल फादर के और कोई भी मनुष्य दे नहीं सकता। (मु.ता. 18.8.76 पृ.1 आदि)

भाषा-

• बाबा इतना अंग्रेजी नहीं पढ़ा हुआ है। तुम कहेंगे- बाबा, अंग्रेजी नहीं जानते! बाबा कहते, वाह! मैं कहाँ तक सब भाषाएँ बैठ सीखूँगा! मुख्य है ही हिंदी, तो मैं हिंदी में ही मुरली चलाता हूँ। जिसका शरीर धारण किया है वह (फर्रुखाबादी) भी तो हिंदी ही जानता है। (मु.ता. 26.11.73 पृ.2 मध्य) (ब्रह्मा बाबा की मातृभाषा तो सिंधी थी; जबकि शिवबाबा बाप के रूप में जिस तन से विश्व के आगे प्रत्यक्ष होते हैं, उसकी मातृभाषा हिंदी ही है।)

• जिस रथ में आते हैं उनकी भाषा ही काम में लावेंगे। (मु.ता. 4.6.68 पृ.1 अंत) (मु.ता. 29.5.84 पृ.2 आदि)

शिवबाप ने हिंदी में ही वाणी चलाई, न की सिन्धी में इसका अर्थ है कि मुकर्रर रथ की मातृभाषा हिंदी ही होगी।

नाम-

जैसे कृष्ण की आत्मा 'ब्रह्मा' बाबा का लौकिक नाम उनके अलौकिक कर्तव्य के अनुरूप 'लेखराज' अर्थात् भाग्य का लेखा लिखने वालों का राजा पहले से ही निश्चित था, ठीक वैसे ही 'राम' की आत्मा ('शंकर') का लौकिक नाम मायावी रावण और उसके सम्प्रदाय से युद्ध करने में महान वीरता के अलौकिक कर्तव्य के अनुरूप पहले से ही निश्चित होना चाहिए। महावीर को ही 'वीरों' का राजा इन्द्रदेव कहा जाता है जिसके नाम पर बसाई गई 'इन्द्रप्रस्थ नगरी' और 'इन्द्र सभा' आज भी मशहूर है। पाण्डवों की विख्यात राजधानी माउण्ट आबू में नहीं, बल्कि दिल्ली क्षेत्र में थी। जैसे ब्रह्मा बाबा (दादा लेखराज) 'बडग' जाति के ब्राह्मण थे वैसे ही (राम बाप) की आत्मा शंकर भी कुलीन ब्राह्मण वर्ग से है। सच्चे ब्राह्मणों की रक्षा के लिए ज्ञान यज्ञ रचने में 'दक्ष' अर्थात् 'दीक्षित' होने के कारण उसे शास्त्रों में 'दक्ष-प्रजा-पति' कह दिया है। पति का अर्थ ही है रक्षा करने वाला।

विशेषताएँ-

स्वाभिमानी- ऊँच-ते-ऊँच स्वाभिमानी की यादगार गुरुशिखर (शिखा अर्थात् ब्राह्मण चोटी) में प्रवेश करके रहने वाले जगद्गुरू शिव की भेंट में (अधरकुमारी, दिलवाड़ा आदि) सब नीचे हैं। ऐसे ऊँचे बाप शिव का सबसे बड़ा स्वाभिमानी बच्चा देव-देव-महादेव शंकर किसी नीचे तबक्के वाले की शरण में नहीं जाता इसलिए **ता.29.1.74 पृ.3 आदि की मु. में बाबा ने खास बताया है- "धनवान बाप (शिव) का बच्चा कब गरीब (ब्रह्मा बाबा, दीदी-दादी-दादा आदि देहधारियों) की एडॉप्शन थोड़े ही कबूल करेगा।"** क्योंकि बाबा ने खास बताया है **ब्र0 वि0 'वर्थ नॉट ए पैनी' हैं। (मु.ता.26.2.75 पृ.1 अंत)** हम नंबरवन (संगमयुगी विश्व महाराजन) बनते हैं तो फिर सेकेण्ड-थर्ड (सतयुगी ल.ना.) की पूजा (खुट्टेबरदारी) क्यों करेंगे? • **मम्मा-बाबा यह (16 कला सम्पूर्ण ल.ना.) बनते हैं तो हम फिर कम बनेंगे क्या? (मु.ता.16.3.75 पृ.3 अंत)**

निर्भयता- बाबा ने कहा है कि योगबल वाले निडर होंगे। गुप्त ज्ञान के गुह्य राज़ों को डंके की चोट पर निर्भीकतापूर्वक सारे विश्व में प्रत्यक्ष करना ही अंडरग्राउंड रूहानी मिलेट्री के शूरवीर वॉरियर्स का काम है; क्योंकि हमारा कोई स्थूल हिंसक युद्ध तो है नहीं। यह तो ज्ञान के अस्त्र-शस्त्रों का रूहानी युद्ध है। जिसका सामना करने के लिए विशेष प्रिय ज्ञानी तू आत्मा बच्चे सदा तैयार रहते हैं। **अ.वा.19.12.78 पृ.139 के शुरू में कहा है- "महावीर तो दुश्मन (अर्थात् विरोधियों) का आह्वान करते हैं (अर्थात् निमंत्रण देते हैं) कि आओ और हम विजयी बनें। महावीर पेपर को देख घबराएँगे नहीं, चैलेंज करेंगे; क्योंकि त्रिकालदर्शी होने के कारण जानते हैं कि हम कल्प-2 के विजयी हैं।"**

• शूरवीर (आत्माएँ) कब किससे घबराते नहीं; लेकिन शूरवीर के सामने आने वाले घबराते हैं। (अ.वा.ता.13.3.71 पृ.47 आदि)

सच्चाई और सफाई- अव्यक्त बापदादा ने हम बच्चों को सत्यता और निर्भीकता की अथॉरिटी से बाप की प्रत्यक्षता करने का डायरैक्शन दिया है; परंतु इस डायरैक्शन को वही बच्चा अमल में ला सकेगा जो स्वयं बाप के सामने सच्चाई और दिल की सफ़ाई का सैम्पल बनकर दिखायेगा; क्योंकि बाबा ने कहा है- 'सच्चे दिल पर सच्चा साहब राज़ी होगा। झूठे दिल पर सच्चा साहब कब राज़ी नहीं होगा।' • **"बापदादा सुनाते भी सत्यनारायण की कथा हैं और स्थापना भी सतयुग की करते हैं। तो बाप को, जो सत् बाप, सत् टीचर, सत्+गुरु का प्रैक्टिकल पार्ट बजाते हैं, तो सत् बाप को क्या प्रिय लगता है? सच्चाई। जहाँ सच्चाई है अर्थात् सत्यता है, वहाँ स्वच्छता व**

सफ़ाई अवश्य ही होती है। गायन भी है- 'सच्चे दिल पर साहब राज़ी।"(अ.वा.ता. 2.9.75 पृ.89 मध्य) दिलवाड़ा बाप भी ऐसे सच्चे दिल वाले बच्चे के द्वारा प्रत्यक्ष होते हैं, जिसने तन-मन-धन से सम्बंधित एक-2 पाई-पैसे का पोतामेल खुले दिल से, लोकलाज की परवाह न करते हुये बेहिचक दिया हो। इसलिए बाबा ने **मु.ता.16.4.70 पृ.1 के मध्य में कहा भी है- "रात को सारा दिन का पोतामेल निकालो क्या किया। .....ऐसा सच्च लिखने वाला कोटों में कोऊ ही है।"** 'साफ़दिल तो मुराद हासिल' करने वाले ऐसे सच्चे पुरुषार्थी बच्चे द्वारा जब बाप की प्रत्यक्षता होती है तो झूठे बगुले सामना करने लग जाते हैं। **ता.9.5.73 पृ.3 अंत की मु. में बाबा ने कहा भी है- "सच जब निकलता है तो झूठ सामना करते हैं। .... तुम किसको सच बताते हो तो जैसे मिर्ची हो लगती है।"**

गुप्त पुरुषार्थी- **• हम यह सुख-शांति के राज्य स्थापन कर रहे हैं अपने ही तन-मन-धन से गुप्त रीति। बाप भी है गुप्त। (उनके) नॉलेज भी गुप्त। तुम्हारा पुरुषार्थ भी है गुप्त। (दान-मान-पद-सर्विस आदि सब गुप्त।) (मु.ता. 13.9.70 पृ.2 अंत)**

• पाण्डव थे गुप्त। (मु.ता. 20.5.73 पृ.3 अंत)

• वह तो अपने टाइम पर, अपनी सर्विस पर खड़े हो जाते हैं। किसको भी पता नहीं पड़ता है। कल्प (की शूटिंगकाल 40 वर्ष) पहले भी तुम बच्चों को मालूम था नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कौरवों को पता ही नहीं था। अभी भी ऐसे है। (मु.ता. 4.2.74 पृ.1 मध्यादि)

"जोग जुपति जब मन्त्र प्रभाऊ। फलै तबै जब करिए दुराऊ।।" जितना जो गुप्त पुरुषार्थ करता है, उतना वो फलित होता है। भारतीयता गुप्त रहना सिखाती है और विदेशीयता सदा दिखावा करने वाली होती है।

मस्त कलंकीधर फ़क़ीरी स्वभाव- दुनिया वालों को उलाहना न रह जाए कि परमपिता लखपति दादा लेखराज के अंदर ही क्यों आया? किसी गरीब या फ़क़ीर के तन का अधार क्यों नहीं लिया? सिर्फ कहने मात्र के लिए 'गरीब निवाज़' है क्या? फ़क़ीर भी कोई ऐसा क्यों हो, जो धर्म का ठेकेदार बनकर कोई ख़ास गद्दी या ठिकाना जमाकर बैठ जाए? इसलिए बाबा ने सुदामा का मिसाल देकर गरीब या फ़क़ीर की सच्ची व्याख्या करते हुए कहा है- **"बेगर बनना मासी का घर थोड़े ही है। बेगर के पास तो (धन, पद, मान, मर्तबा) कुछ भी न हो।" (मु.21.1.74 पृ.4 अंत) • (लौकिक या अलौकिक ब्राह्मणों की दुनिया में) बड़ा पद जो मिला है, वह उसमें ही रहते हैं। पैसे वालों को अपने पैसे ही याद पड़ते हैं। ....धन, मर्तबा याद पड़ता रहेगा। (मु.ता.26.1.74 पृ.2 अंत)** भारतीय परम्परा में आज भी शंकर की यादगार मूर्ति फ़क़ीरी वेश में दिखाई जाती है। ज़रूर फ़क़ीर ही रहा होगा। अमीरों के मुक़ाबले में फ़कीरों को दुनिया वाले भी कलंक जास्ती लगाते हैं। बाबा ने **मु.ता.14.5.73 पृ.3 मध्य पर कहा भी है- "बड़े-2 आदमियों की गुप्त रहती है।"** गरीबों को ही सितम सहन करने पड़ते हैं। यज्ञ के आदि में जो हुआ सो अंत में भी ज़रूर होना है। इसलिए बाबा ने कहा है- **• बाबा गाली खायेंगे तो क्या बच्चे नहीं खायेंगे? सितम सहन करेंगे, अत्याचार होंगे। यह तो ड्रामा में नूँध है। बाबा कहते हैं, मेरी कितनी ग्लानि की है। यह भी बना-बनाया ड्रामा है। फिर भी ऐसे ही होगा। (मु.ता.28.5.73 पृ.3 अंत) • कलंक जिस पर लगते हैं, वही फिर कलंकीधर डबल सिरताज (अर्थात् स्वर्ग स्थापना की ज़िम्मेवारी और पवित्रता दोनों के ताजधारी) बनते हैं। जैसे इन (ब्रह्मा) के लिए वैसे तुम्हारे (अर्थात् शंकर के) लिए। ..... हमारा यह सितम सहन करने का भी पार्ट है। (मु.ता.9.7.73 पृ.5 अंत)**

रमता जोगिया स्वभाव- जैसे सांड को कोई भी व्यक्ति अपने खेती-बाड़ी या बाड़ा में 3 पैर पृथ्वी का ठिकाना नहीं देता, ठीक वही हाल शिव के रथी नन्दीगण बैल का होता है। यही कारण है कि जानबूझकर कलंकरूपी मल धारण करने वाले शंकर (अथवा आदिनाथ या महावीर) को शास्त्रों में अवधूत वेश में रमता

जोगी बताया गया है। **ता.24.4.70 पृ.3 की मुरली के अंत में बाबा ने कहा भी है- "हम तो हैं ही रमतायोगी। जिसमें भी चाहूँ तो जाकर कल्याण कर सकता हूँ।"** अर्थात् किसी को भी माला का मणका बनाने के लिए उठा सकता हूँ। **• कहते हैं जिधर देखो राम ही राम रमता है। अभी (संगमयुग में) रमते तो मनुष्य (रूप में भगवान) हैं ना! (त्रेतायुगी राम की तो बात ही नहीं, उनके संगमयुगी पार्ट शंकर की बात है) (मु.11.3.75 पृ.1 अंत)**

फुट्टैल-एकाक-अड़ियल स्वभाव- धर्म स्थापना के प्रतीक बैल (सांड) को भी अड़ियल स्वभाव होने के कारण कोई पालता नहीं। वह धक्के ही खाता रहता है। इसलिए धर्म के धक्के प्रसिद्ध हैं। (शंकर) को ही अड़ियल बैल कहेंगे; क्योंकि अधूरा ज्ञान चंद्रमा ब्रह्मा भी शंकर के मस्तक में विराजमान दिखाया जाता है। अतः **मु.ता.17.1.79 पृ.3 के मध्य में बाबा कहते हैं- "मैं जानता हूँ तुमको कितने धक्के खाने पड़ते हैं। समझते हैं भगवान कोई-न-कोई रूप में आ जावेगा। कब बैल पर सवारी भी दिखाते हैं। अब बैल पर सवारी कोई होती थोड़े ही है।" (यह तो बैल के फुट्टैल अड़ियल स्वभाव की बात है)** यही कारण है कि शंकर को कोमल और मीठे स्वभाव वाले ब्रह्मा की तरह 100 या 1000 सहयोगी रूपी भुजाएँ नहीं दिखाई जातीं। बाबा ने **मु.ता. 5.7.73 पृ.3 के आदि में कहा भी है- "तुम ऐसे कभी नहीं सुनेंगे, शंकर को (एक साथ इकट्ठी) 100 अथवा 1000 भुजाएँ हैं।"** हाँ, एक-दो करके आगे-पीछे नं.वार सहयोगी बनते रहे, वह दूसरी बात है। जब अंत में एकजुट संगठित माला के रूप में 108 सहयोगी देखने में आवेंगे तब तो 'औघड़ वरदानी' शंकर का पार्ट ही समाप्त हो जावेगा। फिर तो सहस्त्रभुजी विराट रूप विष्णु देखने में आवेगा। यह गुप्त साधारण फकीरी पार्ट गुम हो जावेगा।

तीव्र ज्ञानी- **अ.वाणी 18.6.70 पृ.6 के मध्यादि में कहा है- "रमता योगी वह जो ज्ञान में रमण करता हो और याद में रहता रहे इसको कहा जाता है रमतायोगी।"** बाबा की वाणी के अनुसार ऐसा ज्ञानी तू आत्मा बच्चा शिवबाबा को विशेष प्रिय है। ज्ञान में बड़ा होने के कारण ही देवताओं में सबसे महान देव-देव महादेव शंकर शिवबाबा का सबसे बड़ा, बाप समान बच्चा साबित हो जाता है। भारतीय परम्परानुसार शिवबाबा का यह बड़ा बच्चा त्रिनेत्री महादेव शंकर ही विश्व के राजभाग का अधिकारी 'विश्वनाथ' बनता है। ईश्वरीय ज्ञान की तीव्रता ही उस बच्चे में शिवबाबा की प्रवेशता की पक्की पहचान है। दान से ही ज्ञान की परख होती है। मैं तो नॉलेज क्रियेट करता हूँ। इसलिए क्रियेटर हूँ।

उदाराः सर्व एव एते ज्ञानी तु आत्मा एव मे मतं।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मां एव अनुत्तमां गतिं।। (7/18 गीता)

{सम्पूर्ण**} ज्ञानी {**तो मेरी**} आत्मा ही हैं-{**ये**} मेरा मत है। क्योंकि वह योगीश्वर मुझ {**शिव ज्योति की**} सर्वोत्तम गति में ही *आधारित है।**

• बाप है विचित्र तो उनकी नॉलेज भी विचित्र है। (मु.ता. 1.5.73 पृ.1 का मध्यांत)

सत्य ज्ञान की इस पराकाष्ठा के कारण आज भी शंकर को ज्ञान का तीसरा नेत्र दिखाया जाता है। बाबा ने **ता.4.10.74 पृ.1 की मुरली के अंत में भी कहा है- "भल कितने भी (संगमयुगी बेहद के) बड़े संन्यासी, पंडित, विद्वान आदि हैं; परंतु तीसरा नेत्र देने की कोई में ताकत नहीं। यह (काम विकार को भस्म करने वाला) तीसरा नेत्र देने के लिए ज्ञान सूर्य बाप को आना पड़ता है।" मु.ता.31.1.73 पृष्ठ 2 मध्य की वाणी के अनुसार "अच्छा, ज्ञान सूर्य तो है बाप। फिर माता चाहिए ज्ञान चन्द्रमा।"** जबकि बाबा ने कहा है- **• हमको बाप जैसा सम्पूर्ण ज्ञान सागर बनना ही है। (मु.ता. 8.8.74 पृ.1 मध्यांत)** क्योंकि **• बुद्धि में फुल नॉलेज आने से फुल वर्ल्ड की राजाई मिल जावेगी। (मु.ता. 2.1.74 पृ.1 आदि) • जिसमें जास्ती नॉलेज होगी, वह ऊँच पद पावेंगे। (मु.ता.26.1.74 पृ.1 अंत)** यही कारण है कि ब्रह्मा की आत्मा कृष्ण के नाम-रूप से सिर्फ 9 लाख की सतयुगी दुनिया का मालिक बनेगी। इसलिए उसे श्रीनाथ अर्थात् श्रेष्ठ देवों का नाथ कहा जाता है। वह सारे जगत् अर्थात् 500 करोड़ के विश्व

का मालिक जगत्पिता (जगतं पितरं वन्दे) नहीं बनेगी। सारे विश्व का मालिक तो ज्ञान बाण चलाने में अर्जुन (ब्रह्मा) से भी तीखा कोई भील जैसा ठिक्कर खाने वाला पुरुषार्थी (जगन्नाथ) ही बनेगा। बाबा ने **ता. 21.3.73 पृ.2 की मुरली के आदि में कहा भी है "कई (बाप समान) बच्चे ऐसे भी हैं, जो माँ-बाप से भी अच्छा पढ़ाते हैं। शिवबाबा की तो बात ही ऊँच ठहरी; परंतु मम्मा-बाबा से भी इस समय होशियार बच्चे हैं।"**

ईश्वरीय पढ़ाई के 4 सब्जेक्ट्स (ज्ञान,योग,धारणा,सेवा)

जैसे दुनियावी (dogly) पढ़ाई में सब्जेक्ट्स होते हैं, ऐसे ही ईश्वरीय (godly) पढ़ाई में 4 सब्जेक्ट्स हैं- ज्ञान,योग, धारणा, सेवा ।

• मुख्य चार सब्जेक्ट्स हैं चारों को सामने रखो और हर सब्जेक्ट में कितने प्रतिशत में पास हो उसको देखो। जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं- ज्ञान,योग,दैवी गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा। (अ.वा. 21.7.73 पृ.139 अंत)

• पढ़ाई के जो मुख्य चार सब्जेक्ट्स हैं, वही ब्राह्मण जीवन के चार आधार हैं; और इसी आधार पर ब्राह्मण स्वरुप की महिमा है और वह है-1. परमात्मा ज्ञानी, 2.सहज राजयोगी, 3. दिव्य गुणधारी, 4. विश्व सेवाधारी। (अ.वा.5.2.77 पृ.68 आदि)

i) ज्ञान-श्रीमत

ज्ञान अर्थात् जानकारी, उस बाप की पक्की पहचान तो मिल गई। इसलिए उसने जो रास्ता बताया है, उस रास्ते पर चलने से ही कल्याण होगा और वो रास्ता है श्रीमत, शिवबाप ने ब्रह्मा बाबा के द्वारा जो वाणियाँ चलाई हैं, जिनकी व्याख्या अभी सुप्रीम टीचर सदाशिव के आधार बने व्यक्तित्व के द्वारा हो रही है तो सिर्फ़ वो ही श्रीमत है, उस एक की मत ही श्रीमत है। **• वास्तव में राम भी राम पिता परमात्मा को कहते हैं। (मु.ता. 26.7.73 पृ.2 आदि) • तुम हो राम के श्रीमत पर। राम कहो शिव कहो नाम बहुत रख दिए हैं। (मु.ता. 6.1.70 पृ.2 आदि)**

• राम शिवबाबा को कहा जाता है। (मु.ता. 7.9.68 पृ.3 आदि)

• अभी तुम बच्चों को ईश्वरीय मत मिल रही है जिसको राम मत कहा जाता है। (मु.ता. 12.6.69 पृ.1 आदि) प्रजापिता ही राम वाली आत्मा वही शिव का मुकर्रर रथ नेक्स्ट टू गॉड अर्थात् शिवबाबा है, उसके द्वारा ही श्रीमत मिलती है। ब्रह्मा बाबा की मत को श्रीमत या ईश्वरीय मत कभी भी नहीं कहा है। **• सिर्फ़ जो बाप के महावाक्य हैं, उस श्रीमत पर चलते रहेंगे तो श्रीमत आपको श्रेष्ठ डिवीजन में ला सकती है, लाएगी। (अ.वा.ता. 16.3.11 पृ.3 अंत)** इसलिए निश्चय बुद्धि होकर उस एक ही से सुनना है, समझना है और साथ में प्रैक्टिकल में धारण भी करना है तब एक-एक ज्ञान रत्न लाखों के समान हो जायेगा।

• एक-2 बोल अमूल्य तब बनता है, जब उसे धारण करते हो। जैसे चातक बूँद को धारण कर लेते हैं, वैसे ही आप भी इस ज्ञान को सुनकर समा लेते हो। (अ.वा.ता. 4.2.75 पृ.43 मध्य)

• एकैक प्वॉइण्ट्स लाखों रुपयों का है (मु.ता. 17.3 68 पृ.2 आदि) और तब गीता ज्ञान-अमृत का कार्य करेगा, जिसे पीकर सभी अमर ही बनेंगे। एक से सुना तो अव्यभिचारी ज्ञान कहेंगे। साथ में अगर औरों की बातें भी सुनेंगे तो वो व्यभिचारी हो जाएगा जो विष का काम करेगा। बाबा की श्रीमत ही बाबा की पढ़ाई है। जितना पढ़ेंगे उतना ऊँच पद पाएँगे। ये पढ़ाई ही हमारी कमाई है। एक भी मुरली मिस नहीं करनी चाहिए, अगर सुनेंगे ही नहीं तो श्रीमत कैसे मिलेगी? **• मुरली श्रीमत देती है। (अ.वा.ता. 2.4.08 पृ.8 मध्य)** मुरली पढ़ी नहीं या सुनी नहीं तो समझो मुर्दा होने की तैयारी कर रहे हैं जैसे मौत सामने खड़ा है। यह मुरली ही आत्मा का भोजन है, शरीर का भोजन भल छूट जाए; परन्तु आत्मा का भोजन एक दिन भी छूटना नहीं चाहिए; क्योंकि ये आत्मा-परमात्मा का लिंक है। **• मुरली में ही जादू है ना! कौन-सा जादू? विश्व के मालिक बनने का जादू। इससे बड़ा जादू कोई होता नहीं। ..... मुरली तो बच्चों को रिफ्रेश करती है। (मु.ता. 21.1.87 पृ.1 अंत,2 आदि)**

• मुरली के नोट्स अपने पास रखना अच्छा है। यह बारूद है ना! (मु.ता.16.10.72 पृ.2 मध्य)

• पढ़ाई से प्रीत रखने वालों के लिए बहाना कोई नहीं होता। प्रीति, मुश्किल को सहज कर देती है। एक मुरली से प्यार, पढ़ाई से प्यार और परिवार का प्यार किला बन जाता है। किले में रहने वाले सेफ हो जाते हैं। (अ.वा.ता. 27.3.86 पृ.286 आदि)

भल कहीं भी हों, आज विज्ञान के बहुत तीखे साधन हैं जो कहीं भी रोज़ की मुरली सुन सकते हैं, जिनको ऊँच पद पाना होगा वो ये काम ज़रूर करेंगे। जिनको घाटा डालना होगा, वो अलमस्त रहेंगे अभी भी और कल्प-कल्प भी। भल सख्त बीमार हैं तो भी उनको क्लास में लाना चाहिए। 106 डिग्री बुखार है, तो भी क्लास में आना चाहिए। रेग्युलर और पंक्चुअल होकर पढ़ना चाहिए। पंक्चुअल माना टीचर आने से पहले समय पर क्लास में जाए और रेग्युलर माना रोज़ जाए; क्योंकि रेग्युलर ईश्वरीय क्लास में होना ये भी दैवी गुण है। अगर देवता बनना है तो दैवी गुण भी यहीं धारण करना है। ज्ञान से शरीर का रोम-रोम प्रकाशित होने लगेगा, हमारे अंदर ज्ञान होगा तो सत्वगुण भी बढ़ने लगेगा। हर कर्म ज्ञानयुक्त हो जायेंगे, जो किसी के लिए दुखदायी नहीं होंगे, न किसी के आधार की आवयश्कता होगी।

सर्वद्वारेषु देहे अस्मिन् प्रकाशः उपजायते।
ज्ञानं यदा तदा विद्यात् विवृद्धं सत्त्वं इति उत।। (14/11 गीता)

जब इस देह के सभी {इन्द्रिय-**}द्वारों में {**सच्चीगीता का एडवांस**} ज्ञानप्रकाश उत्पन्न होता है, तब अवश्य ही {**पुरुषोत्तम संगमयुगी शूटिंग में ब्राह्मण जीवन का सतयुगी**} सत्वगुण विशेष बढ़ा है, ऐसा जान ले।**

बुद्धि में ये बात पक्की बैठानी है ये कोई साधारण टीचर नहीं है सुप्रीम टीचर है ।

• श्रीमत है ही बाप दादा की मत। इनके सिवाय श्रीमत कहाँ से मिले। (मु.ता. 22.4.71 पृ.1 अंत)

• श्री-श्री की श्रीमत् हमारी पढ़ाई है, जिस पढ़ाई का हर बोल पद्मों की कमाई जमा कराने वाला है। (अ.वा.ता. 31.12.70 पृ.333 मध्य) डबल श्री बोला है; क्योंकि श्रेष्ठतम शिवबाप जिस श्रेष्ठ में आते हैं, उस श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ की मत श्रीमत है इसलिए श्री-श्री की श्रीमत कहते हैं और जितना श्री-श्री की मत पर चलेंगे तो बाप का साथ प्रैक्टिकल में सदा ही अनुभव करेंगे। **• बाप का स्थूल हाथ तो है नहीं। 'श्रीमत' है हाथ और 'बुद्धि-योग' है साथ। (अ.वा.ता. 8.7.73 पृ.123 मध्य)**

• सेफ्टी का साधन है बापदादा की छत्रछाया में रहना। बापदादा से कम्बाइण्ड रहना। छत्रछाया है श्रीमत। (अ.वा.ता. 31.3.07 पृ.3 आदि)

• बड़े-ते-बड़ी गवर्मेण्ट बाप का आर्डर मिलता है। (मु.ता. 3.10.69 पृ.1 अंत)

• श्रीमत है ही (बेहद) बाप दादा की मत। उनके सिवाय श्रीमत कहाँ से मिले। (मु.ता.5.5.01 पृ.2 मध्य)

• बाप श्रीमत अथवा राय देते हैं। तो तुम्हारा एडवाईज़र हुआ ना! बेहद का बाप एडवाईज़ करते हैं। कहते हैं- मैं तुमको बहुत अच्छी विचार, राय देता हूँ महाराजा बनाने लिए। ऐसे तो नहीं कहता हूँ मैं भी ताजधारी महाराजा बनूँगा। नहीं, मीठे-2 बच्चों तुमको यह मत देकर इतना ऊँच बनाता हूँ। तो इस पर चलना चाहिए ना! (मु.ता. 7.5.68 पृ.2 आदि)

• बच्चों को युक्ति मिलती है बाबा से। इस पर ध्यान बहुत चाहिए। (रात्रि मु.ता. 23.5.68 पृ.1 अंत)

• जब तक यह वायदा नहीं किया कि जो सोचेंगे, बोलेंगे, जो सुनेंगे, जो करेंगे सो श्रीमत के बिना कुछ नहीं करेंगे। तब तक इस भट्ठी से लाभ नहीं ले सकते हैं। (अ.वा.ता. 3.10.69 पृ.116 अंत)

• अगर निश्चय है कि भगवान पढ़ाते हैं तो यह पढ़ाई एक सेकेण्ड भी नहीं छोड़ सकते। यह पढ़ाई आधा-पौना घण्टा चलती है। (मु.ता. 23.2.82 पृ.1 मध्य)

• एक ईश्वर की मत को ही लीगल मत कहा जाता है। मनुष्य मत को इलीगल मत कहा जाता है। लीगल मत से तुम ऊँच बनते हो। (मु.ता. 8.10.99 पृ.2 आदि)

राजविद्या राजगुह्यं पवित्रं इदं उत्तमं।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुं अव्ययं।। (9/2 गीता)

यह {एडवांस सच्ची गीताज्ञान} **राजाओं की विद्या है, राजाई का रहस्य है,** {अत्यंत} **पवित्र है,** {विधर्मियों की अपेक्षा} **सर्वोत्तम** {ज्ञान है}, {सिर्फ़ इस पु. संगमयुग में साक्षात् ईश्वर से प्रश्नोत्तरपूर्वक} **प्रत्यक्ष जाना जाता है,** {पालन} **करने के लिए अत्यंत सुखदायी है, अविनाशी है** {और सत्य-सनातन} **धर्मानुकूल** {भी} **है।**

श्रीमत पर चलने से फ़ायदा है, अगर अनेकों की मत मानवमत या अपनी मनमत पर चलते हैं तो उसके नुकसान भी हैं-

• श्रीमत पर न चला और दुर्गति को पाया तो फिर बहुत पश्चाताप करना पड़ेगा। फिर धर्मराजपुरी में शिवबाबा इस तन में बैठ समझावेंगे कि मैंने तुमको इस ब्रह्मा तन द्वारा इतना समझाया, पढ़ाया, कितनी मेहनत की, पत्र लिखे कि श्रीमत पर चलो; परन्तु न चले। श्रीमत को तो कभी छोड़ना न चाहिए। कुछ भी हो। बाप को बताने से सावधानी मिलती रहेगी। काँटा लगता ही तब है जब बाप को भूलते हो। (मु.ता. 17.1.73 पृ. 2 मध्य)

• बाप की श्रीमत पर लग जाना है। नहीं तो अपना नुक़सान कर देंगे। (मु.ता. 4.9.75 पृ.2 अंत)

• श्रीमत की लकीर के अन्दर रहो। संकल्प करो तो भी श्रीमत की लकीर के अन्दर। बोलो, कर्म करो जो कुछ भी करो लकीर के अन्दर। तो सदा स्वयं से भी सन्तुष्ट और सर्व को भी सन्तुष्ट कर सकेंगे। संकल्प रूपी नाखून भी बाहर न हो। (अ.वा.ता. 27.3.81 पृ.115 मध्य)

• बाप तुम्हारी सभी कामनाएँ बिगर माँगे पूरी कर देते हैं, अगर बाप की आज्ञा पर चलते हैं तो। अगर बाप की आज्ञा का उल्लंघन कर उल्टा रास्ता लिया तो हो सकता है स्वर्ग में जाने के बदली नर्क में गिर जाएँ। (मु.ता.2.1.71 पृ.1 मध्य)

• चंडिकाएँ भी हैं ना! जो बाप के श्रीमत पर नहीं चलते हैं। बाप के बच्चे आज्ञाकारी नहीं होते हैं तो उनको चण्डाल कह देते हैं। (मु.ता. 13.2.68 पृ.2 मध्य)

• जो बाप का डायरेक्शन हो, श्रीमत हो, उसको उसी रूप से पालन करना- इसको कहते हैं सच्चा आज्ञाकारी बच्चा। (अ.वा.ता. 20.2.88 पृ.259 आदि)

• श्रीमत का लगाम सदा अपने अन्दर स्मृति में रखो। जब भी कोई बात हो, मन चंचल हो तो श्रीमत का लगाम टाइट करो। फिर कुछ नहीं होगा। फिर मंज़िल पर पहुँच जाएँगे। तो श्रीमत हर कदम के लिए है, श्रीमत सिर्फ़ ब्रह्मचारी बनो ये नहीं है। हर कर्म के लिए श्रीमत है। चलना, खाना, पीना, सुनना, सुनाना- सबकी श्रीमत है। (अ.वा.ता. 9.1.96 पृ.100 मध्य)

• सतगुरू द्वारा श्रीमत ऐसी मिलती है जो सदा के लिए क्या करूँ, कैसे चलूँ, ऐसे करूँ या नहीं करूँ, क्या होगा..... यह सब क्वेश्चन्स समाप्त हो जाते हैं। क्या करूँ, कैसे करूँ, ऐसे करूँ या वैसे करूँ... इन सब क्वेश्चन्स का एक शब्द में जवाब है- फॉलो फादर। (अ.वा.ता. 30.3.98 पृ.142 मध्यांत)

• बस, श्रीमत पर चलना, न मनमत, न परमत। एडीशन नहीं हो। कभी मनमत पर, कभी परमत पर चलेंगे तो मेहनत करनी पड़ेगी। सहज नहीं होगा क्योंकि मनमत, परमत उड़ने नहीं देगी। मनमत, परमत बोझ वाली है और बोझ उड़ने नहीं देगा। श्रीमत डबल लाइट बनाती है। (अ.वा.ता. 15.11.99 पृ.20 अंत)

• श्रीमत को फौरन फॉलो करना इसको कहा जाता है महापुण्य। (अ.वा.ता. 18.1.08 पृ.7 आदि)

• श्रीमत पर चलते रहते तो कोई भी सख्त ऑर्डर करने की आवश्यकता नहीं है। (अ.वा.ता. 12.11.92 पृ.63 मध्यांत)

• श्रीमत को मानना यह भी एक सफलता है। (अ.वा.ता. 27.2.96 पृ.136 मध्य)

• श्रीमत पर चलना यह भी एक सब्जेक्ट है। (अ.वा.ता. 28.3.02 पृ.81 आदि)

• जो श्रीमत मिलती है, उन पर पूरी रीति से न चलने कारण कमज़ोरी आती है। और कमज़ोरी के कारण विस्मृति होती है। विस्मृति में प्रिय वस्तु भूल जाती है। इसलिए सदैव कर्म करने के पहले श्रीमत की स्मृति रख फिर हर कर्म करो। (अ.वा.ता. 24.1.70 पृ.184 आदि)

• श्रीमत मिलते ही उस पर चलने से आटोमेटिकली शक्ति मिलती है। (अ.वा. 2.4.08 पृ.8 मध्य)

• श्रीमत से ही बेड़ा पार होना है। (मु.ता. 22.5.64 पृ.4 मध्यादि)

• अगर श्रीमत पर न चले तो भस्मासुर हो जावें(गे)। उनकी मत छोड़ी गोया अपने ऊपर हाथ फेर अपन को भस्म कर लेते हैं। (मु.ता. 21.6.64 पृ.5 आदि)

• श्रीमत पर चलना है, नहीं तो अपना पद भ्रष्ट कर देंगे। (मु.ता. 11.7.64 पृ.4 मध्य)

• श्रीमत पर चलना अर्थात् हर कर्म में अलौकिकता लाना। (अ.वा.ता. 24.1.70 पृ.183 आदि)

योग/याद

श्रीमत में भी सबसे पहली श्रीमत है अपन को आत्मा समझो **• श्रीमत पहले-2 कहती है अपन को आत्मा समझो। (मु.ता. 27.10.68 पृ.3 मध्य)** परन्तु सिर्फ़ आत्मा समझने से हमारा कल्याण नहीं होगा, आत्मा समझने के साथ-साथ उस बाप को भी याद करना है **• बच्चों से बाप यह भीख माँगते हैं। बाप कहते हैं- सिर्फ़ मुझे ही याद करो। (मु.ता. 26.2.67/70 पृ.3 अंत) • सारा मदार याद की यात्रा पर है।...जितनी-2 जो मेहनत करते हैं उतनी ही उनमें खुशी आवेगी। (मु.ता.14.6.67 पृ.1 आदि)** परन्तु बाप की याद आएगी कब? जब बाप समान निराकारी बनें। मेल तो तब ही कहा जाए जब दोनों समान हों, एक हाथी जैसे देहभान में रहे और एक सूक्ष्म तो मिलन नहीं हो सकता है इसलिए पहले-पहले देहभान को छोडकर पक्का-पक्का आत्मा बनना पड़े। **• पहले नम्बर की स्टडी है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। ... हफ्ता भर यह इकट्ठा मेहनत करो। तो बहुत फ़ायदा है। और है भी बहुत सहज। दिन में दो/तीन बार क्लास चले। बाप की याद में बैठो। (मु.ता.12.3.69 पृ.4 अंत)** गीता में भी लिखा है- "**अणोरणीयांसं अनुस्मरेत् यः।" (8/9 गीता)** आत्मा अणु रूप है, आत्मा ज्योति स्वरूप है जो ज्योति इन आँखों से निकलती है। इस शरीर में से आत्मा निकल जाती है तो आँखों में ज्योति नहीं रहती है। आँखें बटन हो जाती हैं। इसका मतलब आत्मा अणु रूप, अति सूक्ष्म और ज्योति स्वरूप है। ज्योति का पुंज है- वो ज्योति, वो अणु, वो सितारा हमको याद करना है, प्रैक्टिस करनी है। अपनी भृकुटि के मध्य उस प्राण रूप आत्मा को भली-भाँति याद करना है। "**भ्रुवोः मध्ये प्राणं आवेश्य सम्यक्।" (8/10 गीता)**

• मैं आत्मा हूँ यह तो एकदम पक्का कर दो। (मु.ता. 5.3.69 पृ.3 मध्यांत)

• मैं आत्मा हूँ यह पक्का निश्चय करना है। तब ही बाप की स्थाई याद रहेगी। (मु.ता. 2.7.68 पृ.2 अंत)

आत्मिक स्थिति इतनी गहरी होनी चाहिए कि जो बुद्धि का देह में लगाव है, याद ही न आवे। जब आत्मा बनेंगे तब ही दूसरों को भी आत्मा बना सकेंगे । **• जब ब्राह्मण अपने स्वस्थिति में, स्व-स्मृति में वा श्रेष्ठ स्मृति में स्थित रहें तो अन्य आत्माओं को स्थित करा सकेंगे। (अ.वा.ता. 24.10.71 पृ.203 आदि)** आत्मिक स्थिति एक ऐसा गुण है, जिसमें सारे गुण अपने आप आ जाते हैं। आत्मा की याद करने से फ़ायदा है, अगर इस देह की चिंता करते रहे तो फिर आत्मा की याद खत्म हो जाएगी। पहली हिम्मत करनी है अपने को आत्मा

समझने की। यह प्रैक्टिस करना है तब रूहानी मिलेट्री के मजबूत वारियर्स बनेंगे। सारा दिन यही ताँत लगी रहनी चाहिए। अपने को आत्मा समझना है और जिसको देखो उसको भी आत्मा–2 भाई-2 के रूप में देखो, भृकुटि में ही नज़र जानी चाहिए तो हमारी क्रिमिनल आई सिविल आई बन जाएगी। तब ये दुनिया खाली नज़र आएगी। अपने को आत्मा समझना बहुत मेहनत है; परन्तु इस एक जन्म में ये इम्तिहान पास ज़रूर करना है, धीरे-2 प्रैक्टिस करना है; लेकिन जो काम करना है दृढ़ता से करना है और करके ही छोड़ना है; क्योंकि संगमयुग है असम्भव को संभव करने का युग; फिर कोई और युग में नहीं कर सकेंगे।

यतो यतो निश्चरति मनः चञ्चलं अस्थिरं।

ततः ततः नियम्य एतत् आत्मनि एव वशं नयेत्।। (6/26 गीता)

अस्थिर, चंचल {कपि जैसा**} मन जहाँ-2 {**अपनी देह, देह के संबन्धियों स्थान विशेष या पदार्थों**} से {**हठपूर्वक**} चलायमान हो, वहाँ-2 से इस {**मन**} को {**भली-भाँति प्रयत्नपूर्वक & धैर्यपूर्वक**} नियमित करके {**स्टार-जैसी चेतन अणुरूप ज्योतिबिंदु**} आत्मा के ही वश में ले आए।**

आत्मा की याद पक्की हो जाएगी तो बाप भी पीछे-2 दौड़ेंगे; क्योंकि बाप चुम्बक है न! जब आकर्षण एक होगा तो दोनों मिलेंगे। क्योंकि सिर्फ़ आत्मा बनने से पाप नहीं भस्म होंगे, हमारे ऊपर 63 जन्मों का पापों का बोझा है, जिसको सिर्फ़ एक जन्म में थोड़ा-सा समय है इसमें ही उतारना है। इसलिए जब आत्मा की प्रैक्टिस हो जाए तो साथ में बाप को याद करने की प्रैक्टिस करनी है; क्योंकि एक बाप की याद से पाप कर्म विनाश होंगे। और याद कैसे करना है? उसकी विधि भी बाबा ने मुरलियों में बताई है; क्योंकि कोई निराकार प्रेमी है, कोई साकार, और कोई तो सिर्फ़ अपनी देह या पराई देह को ही याद करते रहते हैं; इसलिए बाबा ने मुरलियों में स्पष्ट बताया है कि याद किसको करना है और कैसे याद करना है, जिससे हमारा कल्याण हो।

- **बाप कहते हैं जो भी आकारी वा साकारी या निराकारी चित्र (हैं उन) को नहीं याद करना है। (मु.ता. 2.3.73 पृ.2 मध्य)** कोई भी साकार देहधारी को याद नहीं करना है। चाहे वो ब्रह्मा बाबा ही क्यों न हो, उनको भी याद नहीं करना है।
- **बाप कहते हैं कब भी देहधारी में तुमको लटकना नहीं है। (मु.ता. 6.11.77 पृ.1 आदि)**
- **बाप कहते हैं कि तुम इन (ब्रह्मा) के शरीर को भी याद न करो। शरीर को याद करने से पूरा ज्ञान उठा नहीं सकते। (मु.ता.27.11.77 पृ.3 अंत)**
- **ब्रह्मा को याद करने से विकर्म विनाश नहीं होंगे। कोई न कोई पाप हो जावेगा। इसलिए उनका फोटो भी न रखो। (मु.ता.17.5.71 पृ.4 मध्य)**
- **इस मम्मा-बाबा को भी याद न करना है। इनको याद करना यह जमा न होगा। (मु.ता.10.11.78 पृ.2 अंत)**

याद एक भगवान् को करना है और भगवान् तो एक निराकार है; परन्तु निराकार को याद करने से कुछ नहीं होगा, जो सारी दुनिया सोचती है ब्रह्म निराकार भगवान है तो ब्रह्म में लीन हो जाएँ; परन्तु ऐसा होता नहीं; इसलिए आज तक तो कोई लीन नहीं हो पाया। ब्रह्माकुमारियाँ भी निराकार बिंदु को याद करना सिखाती हैं, धर्मपितायें भी उस निराकार को अंजाने रूप में याद करते रहे होंगे; परन्तु इससे फ़ायदा तो कुछ नहीं होगा, और ही कठिनाई महसूस होगी।

- **अच्छा, परमात्मा जिसको तुम याद करते हो वह क्या चीज़ है? तुम कहते हो अखंड ज्योति स्वरूप है; परंतु ऐसे है नहीं। अखंड ज्योति को याद करना रॉंग हो जाता है। याद तो एक्युरेट चाहिए ना। सिर्फ़ गपोड़े से काम नहीं चलेगा, एक्युरेट जानना चाहिए। (मु.ता. 9.5.71 पृ.2 मध्य)**
- **जो ऊपर में बाप को याद करते होंगे वह है भक्तिमार्ग; क्योंकि उन्हों को ऑक्युपेशन का पता ही नहीं है। न उनके नाम, रूप, देश, काल का ही पता है। (मु.ता.14.12.68 पृ.1 मध्यादि)**

क्लेशः अधिकतरः तेषां अव्यक्तासक्तचेतसां।

अव्यक्ता हि गतिः दुःखं देहवद्भिः अवाप्यते।। (12/5 गीता)

{व्यक्तरूप रहित सिर्फ़} **निराकार** {शिवज्योति} **में आसक्त हुए उन** {योगियों} **को कठिनाई अधिक होती है; क्योंकि देहभानी** {विधर्मी धर्मपिताओं द्वारा} **निराकारी गति** {बड़े परिश्रम से, धर्म के धक्के खाकर} **दुःखपूर्वक प्राप्त होती है;**

वो निराकार खुद कहता है में साकार में आया हूँ।

• कोई भी चित्रों का सुमिरण न करना है। यह शिव का भी जो चित्र है, उनका भी ध्यान नहीं करना है; क्योंकि शिव ऐसा तो है नहीं। (मु.ता. 2.3.73 पृ.2 अंत)

• निराकार को क्यों याद करते हैं? उससे क्या मिलेगा? क्या निराकारी दुनिया में जाएँगे?...भल सब याद करते हैं; परंतु बिगर परिचय। इस प्रकार याद करने से तो कोई पावन नहीं बनेंगे। यहाँ तो निराकार खुद साकार में आते हैं। (मु.ता. 31.8.98 पृ.3 मध्य)

• शिव है निराकारी बाप। प्रजापिता ब्रह्मा है साकारी बाप। (मु.ता. 15.1.67 पृ.3 अंत)

सभी आत्माओं का निराकार बाप जिस साकार में आते हैं, उनकी पक्की पहचान नाम, रूप, गुण,कर्तव्य के अनुसार तो मिल गई जो मनुष्य सृष्टि का बाप अर्थात् सदाशिव ज्योति के आधार बने व्यक्तित्व(दीक्षित) है। उसे याद कैसे करना है?

मयि एव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।
निवसिष्यसि मयि एव अत ऊर्ध्वं न संशयः।। (12/8 गीता)

मुझ {व्यक्त तन में आए अव्यक्त शिवज्योतिबिंदु} **में ही मन लगा। मेरे में बुद्धि को स्थिर कर। इस प्रकार ऊर्ध्वमुखी** {परमब्रह्मरूप} **मुझमें ही** {हृदय से जन्म-जन्मान्तर भी} **निवास करेगा,** {इसमें कोई} **संदेह नहीं है।**

सिर्फ़ न साकार को याद करना है, न निराकार को याद करना है, फिर क्या करना है? साकार में निराकार को याद करना है । ये एक्यूरेट याद है इससे ही पाप भस्म होंगे। जैसे सोने को तीव्र अग्नि में डालते हैं तो खाद निकलती है और मोल्डिंग पावर आती है। ऐसे ही हमारी आत्मा में भी अनेकों की खाद है, जो हमारे स्वभाव को अड़ियल बना देती है; इसलिए उस खाद को भस्म करने के लिए तीखी योग अग्नि चाहिए; इसलिए साकार में आये निराकार को याद करना है।

• विचित्र के साथ चित्र को याद करने से खुद भी चरित्रवान बन जाएँगे। अगर सिर्फ़ चित्र और चरित्र को याद करेंगे तो चरित्र की ही याद रहेगी। इसलिए विचित्र के साथ चित्र और चरित्र याद आए। (अ.वा.ता. 18.1.70 पृ.166 आदि)

• रथ और रथी दोनों इकट्ठे ही आते हैं। बच्चों की याद किस तरफ जाती है? पहले रथ पर पीछे रथी पर या पहले रथी पर पीछे रथ पर ? (रथ पर, रथी की याद आती है तो) ठीक है। (रात्रि मु.ता. 7.5.68 पृ.1 आदि)

• इस शरीर में बैठ कहते हैं- मामेकम् याद करो। (मु.ता. 21.8.73 पृ.3 मध्यादि)

• अब तो सिर्फ़ तुमको एक्युरेट बाबा को याद करना है। (मु.ता. 2.01.98 पृ.3 अंत)

• अभी तुम शिवबाबा चैतन्य को याद करते हो। (मु.ता. 2.3.68 पृ.3 मध्य)

• बाप भी भृकुटि के बीच में बैठा है ना। तुमको भी अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है, न कि ब्रह्मा की आत्मा को। ... इनको देखते हुए भी हम उनको देखते हैं। (मु.ता. 12.4.68 पृ.4 अंत)

उद्धरेत् आत्मना आत्मानं न आत्मानं अवसादयेत्। (6/5 गीता)

अपने मन-बुद्धि द्वारा ज्योतिर्बिंदु आत्मा को ऊँची स्थिति {परमब्रह्म में} **ले जाए।**

याद करने की सहज विधि सर्व सम्बन्ध से याद करना है। निराकार के साथ तो सर्व सम्बन्ध नहीं जोड़े जा सकते है इसलिए जो साकार है, उसको अपना सर्व सम्बन्धी समझकर याद करना है। कहते है **–*"त्वमेव माता***

च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।" **• जब एक (शिव) द्वारा सर्व (संबंधो की) रसनाएँ प्राप्त हो सकती हैं तो अनेक (देहधारी गुरुओं) तरफ़ जाने की आवश्यकता ही क्या? (अ.वा.ता. 25.10.69 पृ.131 अंत) "मद्योगं आश्रितः" (12/11 गीता)** मेरे आश्रित सर्वसम्बंधों की शरण ले।**• मेरे को निरंतर याद करो। (रात्रि मु.ता.11.2.73 पृ.1 अंत)** निरन्तर याद करने का अभ्यास करना है। विधर्मियों की तरह नहीं जो दिन में दो-पाँच बार याद करें। नहीं, उठते-बैठते,चलते-फिरते कुछ भी करते रूहानी यात्रा में रहना है। तो कर्म से अतीत हो जाएँगे और ऐसी स्थिति में स्थित हो जाएँ तो फिर उसमें स्थिरियम रहने की प्रैक्टिस करना है; क्योंकि स्थिरियम रहने से ही ऊँच पद पाएंगे। जैसे निर्वात स्थान में दीपक की लौ हिलती नहीं है, ऐसे ही हमें भी अपनी स्थिति निर्वात स्थान जैसी बनाना है जो हमारी आत्मा इधर-उधर संसार में हिले नहीं।

यथा दीपो निवातस्थो न इङ्गते सा उपमा स्मृता।
योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगं आत्मनः।। (6/19 गीता)

जैसे निर्वात स्थान में दीपक हिलता नहीं, {वैसे वशीभूत चित्त वाली आत्मा का**} लगाव {**परमात्मा से**} जुड़े {**तो**} योगी की वह उपमा याद की जाती है।**

लेकिन ये प्रैक्टिस होगी कैसे? दो ही रास्ते हैं- अभ्यास और पुरानी दुनिया से वैराग्य। जो श्रीमद्भगवद गीता में अर्जुन ने भगवान से पूछा- ये मन बड़ा चंचल है। वायु के समान इसको वश में करना अति कठिन है। तब भगवान ने रास्ता बताया-

श्रीभगवानुवाच-असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलं।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।। (6/35 गीता)

निस्संदेह हे महाबाहु! {तीव्रधावी**} चंचल मन {**रूपी अश्व**} दुराग्रही है; किन्तु हे कुन्ती-पुत्र! {**सामने खड़े एटॉमिक महाविनाश के**} वैराग्य&योगाभ्यास से वश में आता है।**

याद की प्रैक्टिस सारा दिन करना है परन्तु सारा दिन भी याद कब आएगी जब फाउण्डेशन बेला में ही नींव डालेंगे। वो फाउण्डेशन क्या है? **• अमृतवेला है फाउण्डेशन। अमृतवेला ठीक है तो सारा दिन ठीक हो जायेगा। (अ.वा.ता. 21.11.81. पृ. 3 मध्य)** अमृतवेला जिस समय अमृत ही बरसता है, जिसको शास्त्रों में ब्रह्म-मुहूर्त कहा है, उस समय वातावरण साफ़ रहता है, भूत-प्रेतों का भी प्रभाव नहीं रहता है।

• अमृतवेले बाप को याद करना अच्छा है। (मु.ता. 14.11.71 पृ.3 अंत)

• याद की यात्रा में रहने से तुम्हारा बहुत जमा होगा। सवेरे का टाइम बहुत अच्छा है। हम बाबा को याद करते हैं। बाबा से हमको यह पद मिलेगा। सिवाय शिवबाबा के और कोई को देखो ही नहीं। (मु.ता. 21.1.74 पृ.2 अंत)

• अमृतवेला विशेष प्रभु पालना का वेला है। अमृतवेला विशेष परमात्म मिलन का वेला है। रूहानी रुह-रुहान करने का वेला है। अमृतवेला भोले भण्डारी के वरदानों के खज़ाने से सहज वरदान प्राप्त होने का वेला है। जो गायन है- मन इच्छित फल प्राप्त करना, यह इस समय अमृतवेले के समय का गायन है। बिना मेहनत के खुले खज़ाने प्राप्त करने का वेला है। ऐसे सुहावने समय को अनुभव से जानते हो ना! अनुभवी ही जाने इस श्रेष्ठ सुख को, श्रेष्ठ प्राप्तियों को। (अ.वा.ता. 19.3.86 पृ.267 आदि)

• बाबा टाइम भी देते हैं। अच्छा, रात को 9 बजे सो जाओ, फिर 2 बजे, 3 बजे उठकर याद करो। (मु.ता. 3.5.75 पृ.1 अंत) भक्तिमार्ग में भी कहा जाता है- **'राम सुमिर प्रभात मेरे मन।'**

अमृतवेला अगर सुधार लिया तो सब सुधर जावेगा। अमृतवेले के ऊपर इतना मदार डाल दिया है। अमृतवेला फाउण्डेशन बेला है; जैसे- संगमयुग 5 हजार वर्ष का फाउण्डेशन है, उसमें भी पुरुषोत्तम संगमयुग बहुत महत्वपूर्ण है। ऐसे ही हर दिन के पुरुषार्थ में अमृतवेले का बहुत महत्व है; लेकिन वो अमृतवेला भी कब

सफल होगा, जब हम निद्राजीत बनने का पुरुषार्थ करें। जो बाबा कहते हैं- मेरे निद्राजित बच्चे। सारा समय सोते ही रहेंगे क्या अज्ञान की रात में? ज्ञान की रोशनी देने भगवान आया है वो नहीं लेंगे तो दुनिया क्या कहेगी भगवान जब भाग्य बाँट रहा था, तो सोये हुए थे क्या? क्योंकि यदि इस ज्ञान और योग में झुटका खाते रहे तो राजाई पद प्राप्त नहीं कर सकेंगे। जैसे अर्जुन ने नींद को जीत लिया था तो उसको गुडाकेश कहते हैं, ऐसे हमें भी नंबरवार गुडाकेश बनना है। 63 जन्मों का बोझा सिर पर है तो नींद आती है; इसलिए नींद पर भी विजय कब पाएँगे? जब नंगी आत्मा बनेंगे अर्थात् शरीर की बात नहीं है, आत्मा नंगी तब कही जाए जब अपना सारा पोतामेल बाप के सामने रख दे। जब बोझा हल्का हो जायेगा तो नींद भी कम होती जाएगी; इसलिए सबसे पहले पुरुषार्थ कौन-सा करना है? निद्राजीत बनने का। थोड़े-से ही शुरू करें 5 मिनिट,10 मिनिट, आधा घंटा ऐसे धीरे-धीरे बढ़ाते रहें। फिर जागने की प्रैक्टिस हो जाए तो दूसरा पुरुषार्थ करना है अपनी आत्मा को शांत करने का और अपने को आत्मा समझने का, सुबह उठते ही और कुछ भी याद ना आए। सिर्फ़ मैं आत्मा हूँ, भृकुटि के मध्य बैठी हूँ, एक चमकता स्टार हूँ- यही याद करना है। फिर तीसरा पुरुषार्थ करना है- अपने को आत्मा समझकर साकार में निराकार उस बाप को याद करना है। **• अमृतवेले का टाइम बहुत अच्छा है। जितना हो सके बाबा को याद करते रहो। (मु.ता. 18.6.65 पृ.1 अंत)** बाप को याद करने से न ठंडी महसूस होगी, न गर्मी इसको कहेंगे प्रकृतिजीत अवस्था। तो ऐसी अवस्था में जाने का पुरुषार्थ करना है ।

उस एक की याद करने से फ़ायदा है और अनेकों की याद से घाटा है-

• बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और फिर दैवी गुण भी आवेंगे। (मु.ता. 5.3.69 पृ.3 मध्यांत)

• जितना याद की यात्रा में सफल होंगे तो मन की भावनाएँ भी शुद्ध हो जावेंगी। (अ.वा.ता. 24.1.70 पृ.189 अंत)

• जब सर्वशक्तिमान बाप की याद में रहेंगे तब वह शक्ति प्रवेश करेगी, पाप भस्म हो जावेंगे।... याद की यात्रा से ही बेड़ा पार होगा। (मु.ता. 18.8.75 पृ.3 मध्यांत)

• जब तक बाप को परमात्मा समझकर याद नहीं करेंगे तो पवित्र कैसे बनेंगे? इस पर बच्चों को बहुत अन्तर्मुख हो याद का अभ्यास सीखना है। (मु.ता. 15.4.68 पृ.1 मध्य)

• बाप की याद ही है ऊँच-ते-ऊँच सेवा। (मु.ता. 17.7.67 पृ.4 मध्यादि)

• एक की याद में रहने से ही एकरस अवस्था होगी। (अ.वा.ता. 24.1.70 पृ.190 अंत)

• याद में नहीं रहने कारण ही एकरस अवस्था नहीं रहती है। (मु.ता. 17.7.67 पृ.4 आदि)

• ऊँच-ते-ऊँच एक बाप को ही याद करना है। कितना कड़ा फरमान है- बच्चे, मामेकम् याद करो। देहधारी को याद किया तो उनकी याद से फिर तुमको पुनर्जन्म लेना पड़ेगा। तुम्हारी याद की यात्रा ठहर जावेगी। विकर्म विनाश ना होंगे। बहुत घाटा पड़ जावेगा। (मु.ता. 8.7.65 पृ.1 अंत)

• याद की यात्रा बिगर कब कल्याण होना न है। वर्सा देने वाले बाप को तो ज़रूर याद करना है। तो विकर्म विनाश होंगे। (मु.ता. 18.9.75 पृ.1 मध्य)

• बाप की याद में रहने से ही जंक निकलती जावेगी। (रात्रि मु.ता. 21.2.68 पृ.2 अंत)

• जितना बच्चे याद करते हैं, उतना बाप भी याद और प्यार देते हैं। (अ.वा.ता. 3.1.83 पृ.30 मध्य)

• बाप की याद ही जादू का मंत्र, जादू के मंत्र द्वारा जो सिद्धि चाहो तो पा सकते हो। (अ.वा.ता. 2.1.79 पृ.173 मध्य)

• जितना मेरे साथ योग लगावेंगे उतना तुम मेरे नज़दीक आवेंगे। (रात्रि मु.ता. 5.3.72 पृ.2 आदि)

• योगबल से ही तो तुम विश्व की बादशाही लेती हो ना! तुम बाप की श्रीमत पर याद के बल से विश्व के मालिक बनते हो। (मु.ता. 9.11.66 पृ.2 आदि)

• इसको याद की यात्रा कहा जाता। योग कहने से यात्रा नहीं सिद्ध होता है। (मु.ता.14.7.68 पृ.2 मध्य)

• तुमको तो आँख बंद भी न करनी चाहिए। याद में बैठना है ना। आँखें खोलने से डरना न चाहिए। आँखें खुली हों, बुद्धि में माशूक ही याद हो। आँखें बंद करना तो गोया अंधा हो गया। यह कायदा नहीं। बाप कहते हैं- याद में बैठो। ऐसे थोड़े ही कहते हैं आँखें बंद करो। आँख बंद कर वा कांध ऐसे नीचे कर बैठेंगे तो बाबा कैसे देखेंगे?.... आँखें बंद हो जाती हैं। कुछ दाल में काला होगा। और कोई को याद करते होंगे। (मु.ता. 28.3.75 पृ.3 मध्य)

ये तो हद का अमृतवेला है; परन्तु ये संगम का समय है बेहद का अमृतवेला। अभी बहुत थोड़ा समय है इसलिए सब संकल्पों को त्यागकर बुद्धि को खाली करना है और धीरे-धीरे इस याद की यात्रा को बढ़ाना है।

"एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध। तुलसी संगत साधु की हरै कोटि अपराध।।"

शनैः शनैः उपरमेत् बुद्ध्या धृतिगृहीतया।
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चित् अपि चिन्तयेत्।। (6/25 गीता)

धीरे-2 मन {100 वर्षीय पु. संगमयुग में से 80-90 वर्ष में**} धैर्य वाली बुद्धि से {**सहज-2**} उपराम हो जाए & {**मन-बुद्धिबल वाले चैतन्य**} आत्मबिंदु में पूरा स्थिर करके {**शिवबाप=शिवज्योति+स्वर्ण लिंगरूप सगुण-निर्गुण बाबा सिवाय**} कुछ भी चिंतन न करे।**

इस थोड़े-से समय में पुरुषार्थ में फ़ास्ट जाने का तरीका यही है- ज्ञान और योग। ये दोनों सब्जेक्ट अरस-परस हैं; जैसे भोजन और पानी। दोनों के बिना शरीर नहीं चलता, ऐसे ही इन दोनों के बिना आत्मा भी नहीं आगे जा सकती। जब ये दो सब्जेक्ट पक्के होंगे तो तीसरा धारणा स्वत: ही आ जाएगी। दैवी गुण धारण भी ज़रूर करना है।

धारणा-

• जितनी जो धारणा करते हैं, उतनी वह सर्विस करते हैं। (मु.ता. 6.4.68 पृ.4 अंत)

• जितना याद करेंगे उतना ही पवित्र बनेंगे, प्योरिटी से धारणा अच्छी होगी। (रात्रि मु.ता. 12.1.69 पृ.3 अंत)

• बुद्धि साफ नहीं है तो धारणा भी नहीं होती है। (मु.ता. 19.3.67 पृ.3 अंत)

• जो अच्छी रीति समझते हैं, धारणा अच्छी होती है। धारणा ही नहीं होती तो ज़रूर बुद्धि ज़रूर कहाँ-न-कहाँ दौड़ती रहती है। (मु.ता. 18.3.68 पृ.4 अंत)

• बाबा ने समझाया है कि आत्मा ही रूप-बसंत है। (मु.ता. 14.6.67 पृ.2 मध्यांत)

रूप अर्थात् याद करने से चेहरे में रूहानी चमक आती है, देह की सुन्दरता की बात नहीं है और बसंत अर्थात् दैवी गुण धारण करने से दिव्य गुणों की सुगंध आएगी।

सेवा-

लेकिन अगर ज्ञान और योग का अभ्यास नहीं होता है तो दुःखी होकर प्रैक्टिस छोड़नी नहीं है। एक और रास्ता है- सेवा। इन दो सब्जेक्ट में परिपक्वता लाना है, खूब ईश्वरीय सेवा करना है और निष्काम भाव से करना है। **• जो निष्कामी होगा, वही विश्व का कल्याणकारी बनेगा। (अ.वा. 15.9.71 पृ.175 मध्य)** सिर्फ़ श्रीमत अनुसार करते रहें, उसके फल की चिंता न करें कि हमको उसका फल ही नहीं मिला। फल नहीं मिला इसका अर्थ ये नहीं कि वो मिलेगा ही नहीं। हर कर्म का हिसाब है। जैसा कर्म किया है, उस कर्म का हिसाब बन जाता है।

कर्मण्येवाधिकारः ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुः भूर्मा ते सङ्गोऽस्तु अकर्मणि।। (2/47 गीता)

तेरा {श्रीमदनुसार} **कर्मयोग में ही अधिकार है,** {सांसारिक} **फल में कभी** {भी} **नहीं;** {इसलिए} **कर्मफल का कारण** {मैं ही हूँ ऐसे} **मत बनो।** {गी. 3-19 से 30 अतः} **तुम्हारी** {लोकसंग्रहार्थ} **कर्मत्याग में** {कभी} **आसक्ति न हो।** {कर्मयोगी ही बनना है, कर्म संन्यासी नहीं।}

ईश्वरीय सेवा करते-करते आत्मिक स्थिति भी बन जाएगी और जिसकी सेवा करेंगे तो उसकी याद भी आएगी और धारणा भी स्वत: ही होने लगेगी। सेवा से ही ऊँच पद बनता है।

अभ्यासे अपि असमर्थः असि मत्कर्मपरमो भव।
मदर्थं अपि कर्माणि कुर्वन् सिद्धिं अवाप्स्यसि।। (12/10 गीता)

अभ्यास में भी समर्थ न हो {तो रुद्रयज्ञ-अधिपति महारुद्र स्वरूप} **मुझ** {परमपिता} **प्रति कर्म करने वाला हो। मेरे व्यक्तरूप के लिए कर्मों को करता हुआ भी** {अतीन्द्रिय सुख की विष्णुलोकीय} **सिद्धि को प्राप्त करेगा।**

सेवा भी कैसे करना है? कर्मयोगी बनकर करना है। सिर्फ़ कर्म करें और याद नहीं की, कि किसका कर्म कर रहे हैं तो वो वैश्य कर्म है, उससे कोई प्राप्ति नहीं। वो तो दुनिया में सभी करते हैं; परन्तु कर्म के साथ जिसकी सेवा कर रहे हैं, वो भी बुद्धि में रहना चाहिए; इसलिए कर्म और योग को अलग नहीं किया जा सकता है। बाबा भी कहते हैं- 'कर्मयोगी' बनो।

साङ्ख्ययोगौ पृथक् बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः।। (5/4 गीता)

सांख्ययोग {सम्पूर्ण व्याख्या सहित केवल ज्ञान} **और कर्मयोग- ये दोनों अलग हैं,** {ऐसे} **बालबुद्धि कहते हैं; विद्वान लोग नहीं कहते।**

सन्न्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरौ उभौ।
तयोः तु कर्मसन्न्यासात् कर्मयोगो विशिष्यते।। (5/2 गीता)

समुचित कर्मत्याग और कर्म के साथ योग, {ये साधु-संन्यासी हो या गृहस्थी} **दोनों परमकल्याणकारी हैं; किन्तु उन दोनों में संपूर्ण** {सहज&सुखी होने की दृष्टि से} **कर्म- त्याग से कर्म करते हुए याद** {धंधाधोरी वाले गृहस्थियों के लिए} **विशेष अच्छी है।**

- **विशेष सेवा है- एक ही समय तीनों प्रकार की इकट्ठी सेवा। वाचा के साथ-2 मन्सा की भी सेवा साथ में हो और कर्मणा अर्थात् सम्पर्क, संग के आधार पर भी रंग लगाने की सेवा, बोल द्वारा भी सेवा और संकल्प द्वारा भी सेवा। तो वर्तमान समय एक-2 सेवा अलग-2 करने का समय नहीं है। बेहद की सेवा की रफ्तार एक ही समय तीनों प्रकार की सेवा इकट्ठी हो, इसको कहा जाता है - तेज़ रफ्तार से बेहद की तीव्र गति वाली सेवा। (अ.वा. 26.12.79 पृ.153 आदि)**
- **जीना ही सेवा है, चलना ही सेवा है, बोलना, सोचना अब सेवा के लिए। हर नस-2 में सेवा का उमंग और उत्साह भरा हुआ हो। जैसे नसों में खून चलता है तो जीवन है, ऐसे सेवाधारी अर्थात् हर नस यानी हर संकल्प, हर सेकेण्ड में सेवा के उमंग-उत्साह का खून भरा हुआ हो। (अ.वा. 23.11.81 पृ.171 अंत)**
- **सर्विस कर बहुतों का कल्याण करना है। बहुतों को रास्ता बताना है। बहुत मीठी जबान से समझाना है। (मु. ता.17.3.69 पृ.3 आदि)**
- **सर्विस में दधीचि ऋषि मिसल हड्डियाँ देनी है। राजाई भी तुमको मिलती है । बाप सिर्फ़ युक्ति बतलाते हैं। अपन को राजतिलक कैसे दे सकते हैं। तुम ब्राह्मणों के कान ही सुनते हैं। सर्विस, सर्विस और सर्विस। नहीं तो फिर पछताना पड़ेगा। (रात्रि मु.24.06.68 पृ.3 मध्य)**
- **अभी वाचा के साथ-2 संकल्प शक्ति की सेवा जो ही अंतिम पॉवरफुल सेवा है। वह भी करो। संकल्प शक्ति और वाणी की शक्ति मन्सा सेवा और वाणी की सेवा दोनों का जब कम्बाइण्ड रूप होगा तब सहज सफलता होगी। (अ.वा. 12.10.81 पृ.42 अंत)**

- **रोज़ अमृतवेले अपने सम्पर्क में आने वाली आत्माओं पर संकल्प द्वारा नज़र दौड़ाओ, जितना आप उन्हों को संकल्प से याद करेंगे उतना वह संकल्प उन्हों के पास पहुँचेगा और वह कहेंगे कि हमने बहुत बारी आपको याद किया था। इस प्रकार सेवा के नए-2 तरीके अपनाते आगे बढ़ते जाओ। (अ.वा. 14.1.79 पृ.216 अंत)**
- **बाबा कहते रहते हैं आंतरिक खुशी का पारा उनको रहेगा जो सर्विस पर रहेंगे। (रात्रि मु. 2.1.68 पृ.1 मध्य)**
- **बच्चों को सर्विस का बहुत शौक रखना है। सर्विस को छोड़ कब नींद नहीं करनी है। सर्विस पर बड़ा एक्यूरेट रहना चाहिए।... अन्दर में दिन-रात उछल आनी चाहिए कोई आए तो उनको रास्ता बतावें। भोजन के टाइम कोई आ जाते हैं, तो पहले उनको अटेंड कर फिर भोजन खाना चाहिए; परंतु ऐसी सर्विस वाला एक भी है नहीं। (मु. 15.11.68 पृ.2 अंत, 3 आदि)**
- **जितना-2 तुम सर्विसेबुल बनते हो बाप को बहुत-2 प्यारे लगते हो। जितना सर्विस करते हो, जितना बाप को याद करते हो वह याद जमती रहेगी। तुमको बहुत मज़ा आवेगा। (मु. 29.6.68 पृ.2 मध्य)**
- **नैन रूहानियत का अनुभव करावें, चलन बाप के चरित्रों का सा. करावे, मस्तक मस्तकमणि का सा. करावे। यह अव्यक्ति सूरत दिव्य, अलौकिक स्थिति का प्रत्यक्ष रूप दिखावे, आपकी अलौकिक वृत्ति कोई भी तमोगुणी वृत्ति वाले को अपने सतोगुणी वृत्ति की स्मृति दिलावे। इसको कहा जाता है परिवर्तन वा इसको ही सर्विसेबुल कहा जाता है। (अ.वा. 31.11.71 पृ.211 मध्य)**
- **सेवाधारी की परिभाषा भी गुह्य है। सिर्फ़ स्थूल सेवा व वाणी द्वारा सेवा, सम्पर्क द्वारा सेवा, सेलवेशन द्वारा व भिन्न-2 प्रकार के साधनों द्वारा सेवा करना; सिर्फ़ इतना ही नहीं, अपने हर गुण द्वारा दान करना व दूसरों को भी गुणवान बनाना, स्वयं के संग का रंग चढ़ाना- यह है श्रेष्ठ सेवा। अवगुण को देखते हुए भी नहीं देखना। (अ.वा. 10.2.75 पृ.65 आदि)**

तीसरी मूर्ति विष्णु

• यही स्वदर्शन चक्र (और दृढ़तायुक्त) ज्ञान की गदा जैसे विष्णु को दी है यह एक्यूरेट अलंकार है। विष्णु की (को) अन्य कोई हथियार नहीं देते हैं, जैसे देवियों का खर्ग, कटारी आदि देते हैं। कमल पुष्प समान भी रहना है। (दृढ़ता की) गदा है माया को मारने लिए और राजाई की भी निशानी है। (मु.ता. 16.2.73 पृ.3 मध्यादि)

• विष्णु को भी 4 (सहयोगी रूप) भुजायें दिखाई हैं; प्रवृत्ति को सिद्ध करें। यहाँ तो दो भुजायें ही होते हैं। (मु.ता.05.03.73 पृ.3 अंत)

यहाँ पर जो चार भुजा विष्णु को दिखाई हैं; परन्तु वास्तव में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होता है, जिसको चार भुजा हों। ये स्वभाव-संस्कार से मिलने का प्रवृत्ति का स्वरुप दिखाया है- दो राइट साइड और दो लेफ्ट साइड हैं – ब्रह्मा- सरस्वती, जगदम्बा-आदिलक्ष्मी। चारों आत्माओं की प्रतीक चार भुजाओं में चार आयुध दिखाए गए हैं।

लेफ्ट साइड में कमल और शंख ये दो आत्माएँ हैं- जो प्रजापिता की अर्धांगिनी के रूप में जन्म-जन्मान्तर विशेष सहयोगी रहती हैं। अर्धांगिनी को वामांगी कहते हैं। अन्य संबंधों के रूप में भी रहती हैं; परन्तु विशेष भार्या के रूप में ज़्यादा जन्म में रहती हैं; इसलिए इन दोनों को लेफ्ट साइड में दिखाया है ।

आदिलक्ष्मी का प्रतीक 'शंख' है -एडवांस पार्टी में वो जब अपना पार्ट बजाना शुरू करती है तो जैसे महाभारत युद्ध शुरू होता है। पहले कौन-से बाजे बजते हैं? शंखनाद होते हैं। युद्ध शुरू हो रहा है तो शंखनाद करते हैं। ये मुख ही शंख है माना ज्ञान का शंख चारों तरफ फूँका जाता है, एडवांस में भी सोए हुए जगते हैं, बेसिक में भी जगते हैं और बाहर की दुनिया में भी सोए हुए विद्वान,पंडित संन्यासी आदि मीडिया की रणभेरियों द्वारा जगते हैं।

जगदम्बा का प्रतीक 'कमल'- कमल-फूल कीचड़ में रहता है। बाहर की दुनियाँ कीचड़ है। जगदम्बा अभी कहाँ पार्ट बजा रही है? कीचड़ की दुनियाँ में पड़ी हुई है; लेकिन बुद्धि से उसकी लगन कहाँ है? महाकाली के पुराने चित्रों में पाँव के नीचे भले शंकर की मूर्ति है; लेकिन माथे पर शंकर का चित्र रखा हुआ है। मतलब किसकी याद में है? वो भी शिव-शंकर भोलेनाथ की याद में रहती है। जीवन कहाँ है? संसार रूपी कीचड़ में; लेकिन बुद्धि से उपराम है, तो वो कमल का फूल ऐसे कमाल की यादगार है। ऐसे कमल फूल के रूप में जिंदगी बिताने वाली दुनिया में और कोई आत्मा नहीं है।

राइटियस भुजाओं में ब्रह्मा-सरस्वती हैं, जिन्होंने सदा राइट पार्ट ही ब्राह्मण परिवार में बजाया।भल बच्चे दुखदायी बनते रहे; परंतु स्वयं मम्मा-बाबा सभी केलिए सुखदाई ही रहे।

ब्रह्मा बाबा का प्रतीक 'गदा'- गदा धारदार तलवार नहीं है, मोटा हथियार है। ज्ञान की धार तीखी होनी चाहिए; लेकिन ब्रह्मा बाबा तो बच्चा बुद्धि थे, तो शास्त्रप्रसिद्ध हनुमान, भीम या बलराम जैसी मोटी बुद्धि की गदा चलाते थे। कोई भी बात आ जाए, कोई भी परीक्षा आ जाए, ड्रामा की ढाल कहो, गदा कहो। अब ड्रामा तो गोल-2। गदा हाथ में आया, ऊपर गोल-2 लगा हुआ है, सीधा आड़ा-बेड़ा मारा गदा। जो रिजल्ट हुआ सो ड्रामा; लेकिन खुद स्थिर, हिलने वाले नहीं। तो उनका गदा का पार्ट है।

सरस्वती का प्रतीक 'स्वदर्शन-चक्र'- सबसे मुख्य ज्ञान की बात कौन-सी है, जो मम्मा ने निकाली? मम्मा ही थी, जिसने यह ज्ञान का विशेष प्वॉइण्ट निकाला, यह मंथन का चक्र चलाया, भले सारा स्व+दर्शन चक्र नहीं चलाया; लेकिन एक मुख्य बात मम्मा ने निकाल दी- साँप का बच्चा साँप और साँप का बाप भी साँप जैसा लम्बा। तो हम आत्मा ज्योतिबिन्दु, हमारा बाप भी स्टार स्वरुप सूक्ष्म अणु का ज्योतिबिन्दु। पहले लिंग के रूप में याद करते थे। पहले भक्तिमार्ग में अंगुष्ठाकार आत्मा को मानते थे। शालीग्राम के रूप में चावल जैसा मानते थे; लेकिन मम्मा ने साबित कर दिया कि आत्मा ज्योतिबिन्दु है तो आत्मा का बाप भी **'अणोरणीयांसं'** ज्योतिबिन्दु ही होना चाहिए; इसलिए तब से जो लिंगाकार बनाया गया, उसमें बिन्दु डाल दिया गया। तो यह ऊपर की जो भुजा है वो साबित हो जाती है- मूल ज्ञान का चक्र। सारी दुनिया के बीच में, सारी दुनिया के कल्याण के लिए ॐ राधे मम्मा ने फर्स्ट क्लास चक्र चलाया।

विष्णु के चार आयुध दिखाए जाते हैं। ये चारों आयुधधारी आत्माएँ जो विष्णु की सहयोगी रूप भुजाएँ हैं, नम्बरवार जड़त्वमयी बुद्धि वाली भुजाएँ हैं, यह परफैक्ट चेतन आत्मा अर्थात् परमात्मा विष्णु का पार्ट नहीं है। परम आत्मा का पार्टधारी वो है, जिसमें बुद्धिमानों की बुद्धि सुप्रीम सोल प्रवेश करता है और उस राम वाली आत्मा के बगैर चारों भुजाएँ चालू ही नहीं हो सकतीं। वो उर्ध्वमुखी ब्रह्मा का पंचममुख है। ऐसे तो पाँच ब्रह्मा हैं; पर विशेष रूप से पार्ट सदा ऊपर के मुख अथवा अग्रिम ऊर्ध्वमुखी ब्रह्मा का रहता है, ये ही पाँच ब्रह्मा या पंचानन शंकर हैं, जो विष्णु के पार्ट में भी, ये पाँच मुखों वाली सर्वोत्तम संगठित परिवार की सनातनी आत्माएँ हैं।

विष्णु (नो विष ऐट ऑल) कहा जाता है, जिसमें कोई भी विषय विकार ना हो अर्थात् भल ऊर्ध्वमुखी ब्रह्मा (महादेव) ही विशेष रूप से परमात्मा के रूप में पार्ट बजाता है; परन्तु व्यक्तित्व की विशेषता देखी जाती है। संसार तो प्रैक्टिकल को देखता है; जो दिखता है, उसे ही मानता है; इसलिए त्रिदेव कहा है तो कोई विष्णु का मूर्धन्य पार्ट बजाने वाली आत्मा भी 'भ्रूवोर्मध्ये' ज़रूर होगी। वह आत्मा कौन? ब्रह्मा बाबा ने सदा लवफुल पार्ट बजाया और जब शरीर छोड़ा तो जिस आदि ब्रह्मा जगदम्बा महाकाली चन्द्रभाला में प्रवेश करते हैं तो खांडा से देहभान वाला कबंध रूप धड़ काटाकाट करने का अंदरूनी पार्ट बजाते हैं और शंकर (ऊर्ध्वमुखी ब्रह्मा) का 'आप मुए तो मर गई दुनिया' वाला डिटैच्ड ज्ञान-सूर्य समान विवस्वान का पार्ट लवफुल तो नहीं कहेंगे। वो स्ट्रिक्ट पिता का पार्ट है; परन्तु इन दोनों से भी परिवर्तन नहीं होता तो फिर भी जो परिवर्तन होना चाहिए, वो

परिवर्तन होगा प्रैक्टिकल करने से। जिसके लिए तीसरी मूर्ति वैष्णवदेवी (आदिलक्ष्मी) निमित्त बनती है। ये वही धारणावान माता है, जो आधारमूर्त आत्माओं में आदि रत्न है जो आदि आत्माएँ शरीर छोड़कर पुनः जन्म लेते हैं, उनकी आयु का प्रूफ भी बाबा ने मुरली में दिया है- **"आगे जो मरे थे, फिर भी बड़े हो, कोई 20-25 के ही हुए होंगे। ज्ञान भी ले सकते हैं।" (मु.ता.16.2.67 पृ.1 अंत)** सन् 1967 की इस वाणी अनुसार सन् 1947 में जिसने शरीर छोड़ा, उनकी आयु 20 वर्ष और जिसने सन् 1942 में शरीर छोड़ा, उसकी आयु 25 वर्ष हो गई थी। जिनमें से एक आदिलक्ष्मी की आत्मा तो सन् 1966 में बेसिक ज्ञान में पहले ही आ गई थी और एक आत्मा बाद में ज्ञान में आने वाली थी; इसलिए बोला- 'ज्ञान भी ले सकते हैं।' यह वही आत्माएँ हैं, जो अहमदाबाद पालड़ी सेवाकेंद्र से निकलती हैं। जो माता सन् 1947 में जन्म लेती है, उनके लिए **मु.ता.26.6.70 पृ.2 के मध्य में बोला है- "ड्रामा अनुसार पाकिस्तान (पाक-साफ शरीर रूपी स्थान) भी हो गया। वह भी शुरू तब हुआ जब तुम्हारा जन्म हुआ।"** जिनका लौकिक नाम रंजन था, ब्रह्माबाबा ने उनका नाम वेदान्ती (वेदों के ज्ञान की अंतकत्री) रखा।

• अहमदाबाद में वेदांती बच्ची है उसने इम्तिहान दिया, उसमें एक प्वॉइण्ट थी- गीता का भगवान कौन? इसने परमपिता परमात्मा शिव लिख दिया, इनको नापास कर दिया और जिन्होंने कृष्ण भगवान लिखा, उनको पास कर दिया। (मु.ता. 7.7.70 पृ.2 मध्य)

जो शारीरिक रूप से और मानसिक रूप से भी पवित्र रही जिसकी पवित्रता का प्रूफ भी मिलता है। **अ.वा.ता. 31.10.75 पृ.253 के मध्य बोला है, "सफलता-मूर्त बनने के लिए मुख्य दो ही विशेषताएँ चाहिए- एक प्योरिटी(Purity), दूसरी यूनिटी (Unity)। अगर प्योरिटी की भी कमी है तो यूनिटी में भी कमी है।"** और **अ.वा.ता.18.1.86 पृ.174 के अंत में कहा है- "सेवा एक है; लेकिन निमित्त बनना, निमित्त भाव में चलना यही विशेषता है। ... इसके लिए सोचा ना- तो सबको चेन्ज करें। एक सेण्टर वाले दूसरे सेण्टरों में जाने चाहिए। सभी तैयार हो? ऑर्डर निकलेगा। आपका तो हैंड्सअप है ना!"** और बड़ी-2 जोनल इंचार्ज जैसी ब्रह्माकुमारियाँ भी ट्रान्सफर होने से डरती हैं; क्योंकि दूसरी जगह नए स्थान में संगठन बनाना आसान नहीं है; परन्तु लक्ष्मी वाली आत्मा अफ्रीका जैसी जगह, जहाँ हब्शियों जैसे लोग रहते हैं, वहाँ रहकर भी अपनी प्यूरिटी के आधार पर यूनिटी, बड़ा संगठन बना देती है। प्रैक्टिकल में सर्विस का प्रूफ देती है। बहुत बच्चे कहते हैं- सेवा तो बहुत करते हैं; परन्तु कोई सुनते नहीं हैं। यदि सच्ची लगन से, समर्पित भाव से, देहभान रहित, आत्मिक स्थिति में, बाप की याद में रहकर ये समझकर कि हमको सारी दुनिया को बाप का बनाना है, जो खुशी हमको मिली है, वो दूसरों को भी देना है तो उसका रिजल्ट ना आए ऐसा हो नहीं सकता है। आज नहीं तो कल उस बीज का फल ज़रूर निकलता है; इसलिए ये काम तो सिर्फ़ आदिनारायण और आदिनारायणी ही करते हैं; इसलिए आदिलक्ष्मी की सर्विस का प्रूफ को देखते हुए कई अव्यक्त वाणियों में बापदादा बताते हैं –

• कुमारियाँ दौड़ने में तेज होती हैं। तो इस ईश्वरीय दौड़ में भी तेज जाना है। फर्स्ट आने वाले ही फर्स्ट के नज़दीक आएँगे। (अ.वा.ता. 24.1.70 पृ.187 अंत)

• बापदादा ने भी समाचार सुना, अफ्रीका के उमंग-उत्साह को मुबारक हो। पहला नम्बर शुरू किया है उसकी मुबारक। ऐसे सभी को नम्बरवार करना है; लेकिन पहले पान का बीड़ा उठाया है, अच्छा है। प्लैन भी अच्छा है। वहाँ के हैंड्स निकालके वहाँ सेवा कराना- यह प्लैन बहुत अच्छा है। (अ.वा.ता. 15.10.04 पृ.6 अंत)

• अच्छी सेवा कर रहे हैं। बापदादा को समाचार मिला था कि निर्विघ्न फास्ट सेवा हो रही है। जैसे अफ्रीका ने संदेश देने का फास्ट किया है ... ऐसे सभी को करना आवश्यक है। प्लैन बनाओ, सेवा का बनाओ; लेकिन सेवा करो तो बोझ वाली सेवा नहीं करो। ... अपने ही हैण्ड्स तैयार किए और बढ़ते जा रहे हैं। फास्ट वृद्धि की सेवा है ना? क्या विशेषता सुनाई थी- जितनी (किसी और) ज़ोन में सेवा नहीं हुई है, उतनी अभी हुई है। फास्ट हुई है ना, मुबारक हो, अच्छा कर रहे हैं। (अ.वा.ता. 21.10.05 पृ.4 अंत, 5 आदि)

- **मेहनत करके आए हो, परिस्थिति पार करके आए हो; इसलिए बापदादा भी मुबारक देते हैं। यह भी ड्रामा में**

है, ...(मम्मा-बाबा के देहांत होने से द्वैतवादी) द्वापर में सब बिछुड़ गए, कोई विदेश में कोई देश में, अभी बाप बिखरे हुए बच्चों को इकठ्ठा कर रहे हैं। (अ.वा.ता. 14.2.78 पृ.48 मध्य)

- **जैसे बाप जैसा कोई नहीं, वैसे आपके भाग्य जैसा और कोई भाग्यशाली नहीं। ... जब बाप बैठे हैं बोझ उठाने के लिए तो खुद क्यों उठाते? जितना हल्का होंगे उतना ऊपर उड़ेंगे। ... बाप को जान लिया, पा लिया, इससे बड़ा भाग्य तो कोई होता नहीं। (अहमदाबाद में) घर बैठे बाप मिल गया। बाप ने ही आकर जगाया ना- बच्चे उठो, देश (हब्शियों जैसा) कोई भी हो; लेकिन स्थिति सदा बाप के साथ रहने की हो। (अ.वा.ता.14.2.78 पृ.49 आदि)**
- **सबसे हिम्मत में नम्बरवन है। .... सबूत देने वाले को बापदादा सपूत कहते हैं। (अ.वा.ता. 31.12.94 पृ.77 मध्य)**
- **बापदादा ने अफ्रीका का भी समाचार सुना, वह भी थोड़े टाइम में अच्छी वृद्धि कर ली है। (अ.वा.ता. 31.10.2006 पृ.3 मध्य)**
- **(लेन-देन LONDAN और अफ्रीका वाली) दोनों ही अच्छे निमित्त हो। इतनों का कल्याण किया है, यह भी बहुत बड़ा पुण्य है। पुण्यात्मा बन गए। साथी दोनों ही ठीक हैं। बहुत अच्छा! (वेदान्ती बहन से) यह भी सहयोग अच्छा दे रही है। (जयन्ती बहन से) यह बैकबोन है। (अ.वा.ता. 20.2.2005 पृ.5 अंत)**
- **अफ्रीका में बहुत अच्छे-अच्छे रत्न हैं। सेवा करने में होशियार हैं ना! ......अफ्रीका में सबसे ज़्यादा गोल्ड है ना! (अ.वा.ता. 31.12.98 पृ.32 अंत)**
- **अफ्रीका आफरीन के लायक बनेंगे। सेवा का ऐसा नगाड़ा बजाएँगे जो चारों ओर से यही निकले- आफरीन है, आफरीन है। (अ.वा.ता. 6.3.97 पृ.44 मध्य)**

विष्णु का अर्थ है- जिसमें विषय-विकार न हो। कोई भी विकार ना हो- काम, क्रोध, लोभ, मोह या अहंकार। वह अफ्रीका जैसे देश में रहकर भी अपनी पवित्रता को कायम रखती, जिनके जीवन का लक्ष्य था 'लक्ष्मी बनना', तो उस लक्ष्य को नंबरवन में आदिलक्ष्मी ही प्राप्त करती है।

शास्त्रों में पार्वती के लिए गायन है कि जिनका विरुद् था- **"वरौं शंभु, न तु रहूँ कुँवारी"**, चाहे स्त्री चोला मिले या पुरुष चोला; परन्तु पतित होना है तो एक आत्मा के साथ। आत्मा और चोला दोनों ही पवित्र रहते हैं, इसलिए शास्त्रों में उनका नाम 'अदिति' बताया है- जिसकी पवित्रता कभी तन-मन से खण्डित नहीं होती है, अखंड रहती है; इसलिए पवित्रता के आधार पर प्रैक्टिकल करके दिखाती है। जो काम ब्रह्मा भी नहीं कर पाते हैं, भल शंकर के द्वारा सुप्रीम टीचर का पार्ट चलता है; परन्तु प्रैक्टिकल में वो ही करके दिखाती है; इसलिए धन बाँटते हुए लक्ष्मी को ही दिखाते हैं। भल लक्ष्मी लेती नारायण से ही है, फिर भी गायन नारायण का नहीं, लक्ष्मी का हो जाता है; क्योंकि दुनिया प्रैक्टिकल को पवित्रता के आधार पर मानती है। दुनिया के सारे काम पवित्रता से ही होते हैं। यह अंत में निकलती है और ज्ञान का शंखनाद कर देती है; इसलिए विष्णु के हाथ में शंख दिखाया जाता है। पहली **अव्यक्त-वाणी 21.1.69 पृ.24 के आदि में भी बोला है- "भारत माता (शिव) शक्ति अवतार अंत का यही नारा है।"**

त्रिमूर्ति की स्थापना,विनाश,पालना के बारे में सही क्रम

ब्रह्म-वाक्य रूपी मुरली में बोला है:-

• पहले ऐसा नहीं कहना होता है- स्थापना, पालना, विनाश। नहीं। पहले स्थापना, फिर विनाश, बाद में पालना- यह राइट अक्षर हैं। (मु.ता.19.12.89 पृ.1 मध्य)

इसी तरह **मु.ता.22.1.78 पृ.2 के आदि में बाबा ने बोला है- • ब्रह्मा द्वारा वाइसलेस वर्ल्ड देवताओं की स्थापना हो रही है। शंकर द्वारा विनाश भी होने वाला है। फिर वैष्णों राज्य होगा।**

• परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा नई दुनियाँ की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। त्रिमूर्ति का अर्थ ही यह है- स्थापना, विनाश, पालना। (मु.ता.3.1.95 पृ.2 आदि)

जिस क्रम से इन मूर्तियों के कर्तव्य हैं, उसी क्रम से उनकी बायोग्राफी है।

त्रिमूर्ति की यादगार- त्रिमूर्ति हाउस, त्रिमूर्ति रोड, त्रिमूर्ति झंडा

इन्हीं तीन मूर्तियों के लिए मुरलियों में बाबा ने बोला-

• विश्व के ऊपर विजय तो उनसे ही प्राप्त होती है। यह है पाण्डव गवर्मेण्ट का कोट ऑफ आर्म्स। उनको कौरव गवर्मेण्ट का फिर देखो कोर्ट ऑफ आर्म्स कैसा है। कितना फ़र्क है। उन्होंने फिर नाम रख दिया है- त्रिमूर्ति मार्ग, त्रिमूर्ति हाउस, त्रिमूर्ति रास्ता। इनका अर्थ भी बाप समझाते हैं। (मु.ता. 20.11.71 पृ.1 आदि)

इन तीन मूर्तियों की यादगार त्रिमूर्ति रोड है, तीन रास्तों का मेल; परन्तु त्रिमूर्ति हाउस भी कहा, हाउस तो तीन नहीं होते हैं, एक ही हाउस है अर्थात् लिंग रूप ऊँचे-ते-ऊँच भगवंत की दो मुख्य सहयोगी रूपी भुजाएँ हैं: राइट साइड- परा प्रकृति भारतमाता/विष्णु रूपा आदिलक्ष्मी और लेफ्ट साइड- जगदम्बा, असुर संहारकारिणी। ये तीनों आत्माएँ मिलकर त्रिमूर्ति हाउस बन जाती हैं।

यही तीन मूर्तियाँ जब स्वभाव-संस्कार-संकल्पों से मिलकर एक हो जाएँगी, तब ही संसार में विजय होगी। जिसके लिए गाते हैं- **"विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा।"** यह कोई कपड़े के झण्डे की बात नहीं है, जो तीन कपड़े के रंग- केसरिया,सफ़ेद,हरा दिखाए हैं।

ब्रह्मा बाबा तो सदैव सुख में ही रहे। शरीर से भी और आत्मा से भी सुख की दुनिया में जाने के संकल्प ही करते रहे। जिस जगदम्बा में प्रवेश किया वो भी सदैव संघर्ष की जगह सुख की दुनिया में ही रही; इसलिए हरा रंग आदिब्रह्मा जगदम्बा का प्रतीक, विष्णु अर्थात् आदिलक्ष्मी की पवित्रता का प्रतीक सफ़ेद रंग है। केसरिया अर्थात् लाल रंग- ये क्रांति का प्रतीक है। स्थूल हिंसा की बात नहीं है, सारे संसार में अज्ञान का खात्मा करके ज्ञान की क्रांति करता है। B.K. का बनाया हुआ गीत भी है- ***"गूँजी विनाश की वाणी, फिर भी कितनी कल्याणी।"*** इसलिए शांतिदेवा कहा जाता है, जो परमधाम को ज्ञान प्रकाश से अपने अंदर उतार लेता है, सारा शरीर प्रकाशित लाल लाइट के समान लिंगाकार हो जाता है; इसलिए लाल रंग दिखाया। ये तीनों रंग, तीन चैतन्य शरीर रूपी वस्त्रों (ब्र. वि.शं.) की यादगार हैं, जो मिलकर एक हो जाएँगे और इस कलियुगी नारकीय दुनिया का खात्मा कर विश्व विजय अर्थात् है+विन स्वरुप स्वर्णिम दुनिया का निर्माण कर देते हैं।

• जब चैतन्य मूर्तियाँ तैयार हो जाएँगी, तब यह (अंधश्रद्धायुक्त भक्तिमार्गीय) जड़ मूर्तियाँ समाप्त हो जाएँगी और यही भारत बेहद का मंदिर बन जाएगा, (<u>मंदिर,मस्जिद, गिरजाघर आदि</u>) अनेक समाप्त होकर एक ही बड़ा मंदिर हो जाएगा। (अ.वा.ता. 12.1.79 पृ.208 मध्य)

इसीलिए कहते हैं- **त्रिमूर्ति का बैज हमेशा साथ रखो। (अ.वा.ता. 23.1.69 पृ.17 अंत)**

स्थूल बैज की बात नहीं। बुद्धि रूपी पॉकेट में ये तीन शरीर रूपी वस्त्रधारी आत्माएँ कौन-2 हैं, उनकी प्रैक्टिकल फुल नॉलेज सदा साथ हो, जो हम किसी भी समय किसी व्यक्ति को भी दे सकें। संसार के और खास भारत के सभी मनुष्य इन्हीं तीन मूर्तियों के फॉलोअर्स के रूप में विभाजित हैं, कोई ब्रह्मा को फॉलो करने वाले ब्रह्म समाजी,कोई विष्णु को फॉलो करने वाले वैष्णवपंथी और कोई शंकर को फॉलो करने वाले शैव संप्रदाय।

ओमशांति